खाली कब्र

"उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया : क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।"

(प्रेरितों २:२४)

लेखक
सनी डेविड

प्रकाशक :
मसीह् की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली-११००४६

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेश
(भाग चार)

प्रथम संस्करण : १९७६

मुद्रक : पाइनियर फाईन आर्ट प्रेस, गली शाहतारा अजमेरी गेट दिल्ली-६

भूमिका

कुछ लोग यीशु मसीह के पुनःरुत्थान का इन्कार करते हैं। किन्तु, उस खाली कब्र का इन्कार कौन कर सकता है, जिसके भीतर मृत्यु के बाद यीशु की देह को गाड़ा गया था ? वह कब्र जिस पर रोमी सरकार की मुहर लगी थी, वह कब्र जिसके चारों ओर शक्तिशाली रोमी सिपाही पहरा दे रहे थे, तीसरे दिन खाली पाई गई थी। कब्र के मुंह पर रखे उस बड़े पत्थर को किसने हटाया ? कहां गई यीशु की देह ?

इस घटना के पचास दिन बाद, प्रेरित पतरस ने लोगों की एक बड़ी भीड़ के बीच में खड़े होकर कहा, "उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया : क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।" (प्रेरितों २:२४)।

इस पुस्तक में सम्मिलित "यीशु का पुनरुत्थान" तथा "खाली कब्र" पाठों में मैं ने इसी सच्चाई को ऊपर उठाकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

"खाली कब्र" के अतिरिक्त, इस पुस्तक में चौदह अन्य प्रवचन भी सम्मिलित हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है, ये पाठकों को यीशु के सुसमाचार को मानने की गम्भीर आवश्यक्ता से परिचित कराएंगे, तथा अनेकों अन्य लोगों के विश्वास इनके पढ़ने से मसीह यीशु में दृढ़ होंगे। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे।

लेखक

सत्य सुसमाचार
पोस्ट बॉक्स नं० ३८१५
नई दिल्ली-११००४६

परीचय

भाई सनी डेविड और मैंने मिलकर अभी हाल में ही कुछ अन्य प्रवचनों की रिकॉडिन्ग पूरी की है, इन प्रवचनों का प्रसारण रेडियो श्री लंका द्वारा किया जाएगा तथा इन प्रवचनों को देश भर में और आस-पास के देशों में लाखों लोग सुन सकेंगे। हमारे रेडियो कार्यक्रम, "सत्य सुसमाचार" को, अब सप्ताह में दो बार सुना जा सकता है, अर्थात्, प्रत्येक मंगलवार तथा शुक्रवार को रात ८:४५ से ९:१५ तक। इन रेडियो कार्यक्रमों के फल-स्वरूप सैंकड़ों लोग बाइबल सम्बन्धि पाठों तथा साहित्य की मांग कर रहे हैं। अपने हिन्दी के अन्य प्रकाशनों में पन्द्रह प्रवचनों की इस नई पुस्तक को सम्मिलित करते हुए हमें बड़ी ही प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

इस पुस्तक के साथ अब तक रेडियो प्रवचनों की चार पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है, और इन सब की रचना भाई डेविड ने की है। क्योंकि इस पुस्तक में लिखा प्रत्येक प्रवचन ज्यों का त्यों है अर्थात् जिस तरह से कि इनका प्रसारण रेडियो पर किया जा रहा है, इस कारण श्रोताओं के पास इन्हें न केवल सुनने का ही अवसर है परन्तु अब वे उन्हीं प्रवचनों को पढ़ भी सकते हैं। वास्तव में, इन प्रवचनों को एक पुस्तक का रूप देने में हमारा विशेष उद्देश्य यही है, और हमारी यह प्रार्थना रहेगी कि पाठक उन सब बातों पर, जिनका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, बाइबल की शिक्षा के प्रकाश में, गम्भीरता पूर्ण विचार करेंगे। हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि इसके द्वारा आप सच्चाई की पहिचान में बढ़ेंगे और परमेश्वर की मानेंगे।

मैं अपने लिये इसे बड़ा सौभाग्य समझता हूं कि एक बार फिर से

मुझे यह अवसर प्राप्त हुआ कि भाई सनी डेविड के साथ मिलकर मैं इन प्रवचनों की रिकॉर्डिन्ग का कार्य पूर्ण कर सका, और इनके प्रकाशन में सहयोग दे सका। मैं आपके सामने उनकी तथा उनके कार्य की प्रशंसा करता हूं।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली-११००४६
मार्च ११,१६७६

विषय-सूची

१.	पुराना या नया ?	६
२.	पुराने नियम का महत्त्व	१८
३.	उद्धार पाने का ईश्वरीय नियम	२६
४.	यीशु की पुकार	३६
५.	नमक तथा ज्योति	४७
६.	आप यीशु के साथ क्या करेंगे ?	५६
७.	केवल एक बार	६५
८.	यीशु क्यों आया ?	७६
९.	एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न	८५
१०.	विश्वास का महत्त्व	९६
११.	जब हम प्रभु को सौंप देते हैं	१०६
१२.	यीशु का पुनरुत्थान	११५
१३.	खाली कब्र	१२४
१४.	मैं एक मसीही क्यों हूं ?	१३३
१५.	सबसे बड़ा प्रेम है	१४१

पुराना या नया ?

मित्रो :

मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने एक बार फिर से मुझे यह सुअवसर दिया है कि मैं आपके मनों को उसके वचन की ओर आकृषित करूं। मैं प्रभु का धन्यवाद करता हूं कि उसने आपको इतनी बुद्धि दी है कि आप उसके वचन को सुनने के लिये हमेशा तैयार रहते हैं। आप में से अनेकों लोगों ने हमें पत्र लिखकर बताया है, कि आप सत्य-सुसमाचार प्रवचनों को सुनने के लिये बड़े ही उत्सुक होकर समय की प्रतीक्षा करते हैं और इस कार्यक्रम में दिये जानेवाले उपदेशों को बड़े ही ध्यान से सुनते हैं। वास्तव में इसी प्रकार के लोगों के लिये प्रभु यीशु ने मत्ती ५:६ में कहा, "धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और पियासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।" और मत्ती ४:४ में प्रभु ने कहा, "कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु हरएक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" जिस तरह से अपने शरीर को जीवित रखने के लिए हमें रोटी की आवश्यकता होती है वैसे ही परमेश्वर का वचन हमारी आत्मा के लिये भोजन है, और प्रभु यीशु ने कहा, कि यदि हम अपने हृदयों में उसके वचन की भूख व पियास रखेंगे तो हम अवश्य ही तृप्त किए जाएंगे।

बाइबल परमेश्वर का वचन है। क्या आप जानते हैं कि बाइबल के द्वारा परमेश्वर आपसे बातें करता है ? अनेकों लोग परमेश्वर को तरह-तरह की वस्तुओं में खोजते हैं। अनेकों लोग परमेश्वर को खोजने के लिये यात्राएं और भ्रमण करते हैं। परन्तु परमेश्वर बाइबल के द्वारा हम से बातें करता है। इब्रानियों १ : १,२ में पवित्र शास्त्र का लेखक

कहता है, "पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है।"

इसलिये, इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर ने आरम्भ से ही किसी न किसी रीति से अपना सम्बन्ध मनुष्यों से रखा है। यद्यपि मनुष्य ने सदा ही परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध चलकर अपने आप को परमेश्वर से अलग रखा है, परन्तु परमेश्वर मनुष्य को छोड़ना नहीं चाहता और इसलिये उसने अपने वचन के द्वारा सदा से ही मनुष्य से सम्बन्ध रखा है।

आरम्भ में जब पाप की बहुतायत के कारण परमेश्वर मनुष्य के प्रति शोकित हुआ, तो उसने उस समय मनुष्य को पृथ्वी पर से मिटा डालने का निश्चय किया। परन्तु उस समय के लोगों में नूह नाम का व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में खरा व धर्मी था। सो परमेश्वर ने अपनी योजना के बारे में नूह को बताया। परमेश्वर ने नूह को उसके परिवार समेत उस भयंकर जल-प्रलय से बचने का मार्ग भी बताया जिसके द्वारा वह पृथ्वी पर अन्य मनुष्यों को नाश करनेवाला था। परन्तु इस से पहले कि वह जल-प्रलय आता, नूह ने उन लोगों को परमेश्वर का वचन प्रचार किया, बाइबल बताती है कि उनमें से एक ने नूह की बातों पर विश्वास न किया, उनमें से एक भी न फिरा, एक ने भी पश्चात्ताप न किया।

इसी प्रकार से जब परमेश्वर लोगों पर प्रगट करना चाहता था कि वह अपनी एक निज जाति बनाएगा, तथा उसी के बीच में से भविष्य में संसार के सब लोगों के लिए एक उद्धारकर्त्ता निकलेगा, तो उसने विश्वासी इब्राहीम को चुना, और उस पर अपनी इच्छा को प्रगट किया। सो इस तरह से आरम्भ में परमेश्वर इस प्रकार के मुख्य-

मुख्य लोगों के द्वारा अपनी इच्छा को प्रगट करता था। इन्हीं लोगों को आज हम बाप-दादों के नाम से जानते हैं।

इब्राहीम पर ही परमेश्वर ने यह भी प्रगट किया था, कि भविष्य में उसके वंश के लोग, जो परमेश्वर की निज प्रजा ठहरेंगे, एक पराए देश में लगभग चार सो वर्ष तक परदेशी व दास बनकर रहेंगे और बाद में बड़े ही आश्चर्यजनक ढंग से उन्हें वहां से छुटकारा मिलेगा। और इब्राहीम के सैंकड़ों वर्ष बाद ये बातें यूं ही पूरी हुईं, जब इस्राएली लोग मिश्र देश में दास बनकर रहे, तथा बाद में परमेश्वर की अद्भुत सामर्थ से मूसा के द्वारा दासत्व से छुड़ाए गए। यही लोग, मिश्र देश से छुटकारा पाने के बाद, जब मूसा की अगुवाई में एक निश्चित देश की ओर बढ़ रहे थे तो मार्ग में, सीनै नाम के एक पर्वत के निकट, परमेश्वर ने मूसा को एक निश्चित स्थान पर बुलाया। वहां परमेश्वर ने मूसा को इस्राएली लोगों के लिये एक व्यवस्था दी। अर्थात् उस समय तक परमेश्वर अपनी इच्छा को बाप-दादों के द्वारा प्रगट करता था, परन्तु सीनै पर्वत पर इस्राएली लोगों को उसने अपने वचन को लिखित रूप में देने का निश्चय किया। वहां जिस व्यवस्था को परमेश्वर ने लोगों को दिया उसमें अन्य आज्ञाओं के अतिरिक्त दस आज्ञाएं भी सम्मिलित थी। उस व्यवस्था को आज हम "पुराना नियम" कहते हैं। पुराना नियम बाइबल का एक भाग है। बाइबल दो मुख्य भागों में बंटी हुई है। इसके पहले भाग को हम पुराना नियम कहते हैं तथा दूसरे भाग को नया नियम कहते है। पूरी बाइबल में छियासठ पुस्तकें हैं। इनमें से उन्तालिस पुस्तकें पुराने नियम की हैं तथा सताईस पुस्तकें नए नियम में हैं।

आज हम विशेष रूप से इस विषय पर विचार करेगें कि हम आज कौन से नियम के आधीन रहते हैं। क्या आज हमें पुराने नियम के अनुसार चलना चाहिए या हमें नए नियम की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए? या क्या हम आज दोनों ही नियमों के अधिकार में

रहते हैं ? इस विशेष प्रश्न का बिल्कुल ठीक उत्तर हमे केवल बाइबल से ही मिल सकता है। इसलिये, आईए इस सम्बन्ध में हम बाइबल के कुछ पदों पर विचार करें।

सबसे पहले हम देखते हैं कि पुराना नियम, अर्थात् पुरानी वाचा या व्यवस्था को परमेश्वर ने केवल इस्राएली लोगों को उस समय दिया था जब वह उन्हें मिस्र के दासत्व से छुड़ाकर सीनै पर्वत तक लाया था। यह वाचा केवल इस्राएलियों से ही बान्धी गई थी तथा इसमें अन्य लोगों को सम्मिलित नहीं किया गया था। निर्गमन १९: १-५ में हम पढ़ते हैं, "इस्रालियों को मिस्र देश से निकले हुए जिस दिन तीन महीने बीत चुके, उसी दिन वे सीनै के जंगल में आए। और जब वे रपीदीम से कूच करके सीनै के जंगल में आए, तब उन्होंने जंगल में डेरे खड़े किए ; और वहीं पर्वत के आगे इस्राएलियों ने छावनी डाली। तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया, और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, याकूब के घराने से ऐसा कह, और इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना। कि तुमने देखा है कि मैंने मिस्त्रियों से क्या-क्या किया ; तुम को मानों उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा को पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे ; समस्त पृथ्वी तो मेरी है।"

फिर, इस्रालियों को दस आज्ञाएं तथा अन्य नियम देने से पूर्व, निर्गमन २० : १,२ में लिखा है, "तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे, कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो मुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है।" इन पदों को पढ़ते हुए इस ओर विशेष ध्यान दें, कि पुराने नियम में पाई जानेवाली सारी आज्ञाएं केवल इस्रालियों को ही दी गई थीं। वे सब नियम केवल इस्राएली लोगों के लिये ही थे, और इस बात का प्रमाण हमें इन पदों में बड़ी स्पष्टता से मिलता है।

निर्गमन ३४ : २७,२८ में हम देखते हैं "और यहोवा ने मूसा से कहा, ये वचन लिख ले ; क्योंकि इन्हीं वचनों के अनुसार मैं तेरे और इस्राएल के साथ वाचा बान्धता हूं। मूसा तो वहां यहोवा के संग चालीस दिन और रात रहा; और तब तक उसने न तो रोटी खाई और न पानी पीया। और उसने उन तख्तियों पर वाचा के वचन अर्थात् दस आज्ञाएं लिख दीं।" और फिर व्यवस्थाविवरण ५ : १-६ के अनुसार, "मूसा ने सारे इस्रालियों को बुलवाकर कहा, हे इस्राएलियो, जो जो विधि और नियम मैं आज तुम्हें सुनाता हूं वे सुनो, इसलिये कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब पर हमसे वाचा बान्धी। इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं, हम ही से बान्धा, जो यहां आज के दिन जीवित हैं। यहोवा ने उस पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगों से आमने-सामने बातें की ; उस आग के डर के मारे तुम पर्वत पर न चढ़े, इसलिये मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच उसका वचन तुम्हें बताने को खड़ा रहा। तब उसने कहा, तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश में से निकाल लाया है वह मैं हूं।"

सो पुराने नियम की व्यवस्था इस्राएलियों को दी गई थी। इसी व्यवस्था में दस आज्ञाएं भी सम्मिलित थी। आज अनेकों लोग जबकि मूसा की व्यवस्था अर्थात् पुराने नियम की अन्य विधियों, जैसे कि पशुओं का बलिदान चढ़ाने इत्यादि की विधियों को तो नहीं मानते परन्तु वे पुराने नियम में उल्लिखित दस आज्ञाओं को मानने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु क्योंकि दस आज्ञाएं भी व्यवस्था का भाग थीं, और जबकि व्यवस्था केवल इस्राएलियों को ही दी गई थी, इस कारण व्यवस्था की कोई भी आज्ञा या विधि हमारे ऊपर आज लागू नहीं हो सकती।

इसके अतिरिक्त, वे लोग भी जो आज मूसा की व्यवस्था की दस आज्ञाओं को मानने का प्रयत्न करते हैं, वे चौथी आज्ञा का पूर्णरूप से

विरोध करते हैं। परमेश्वर ने इस्राएलियों को चोथी आज्ञा देकर कहा था, "तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम-काज करना ; परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्राम दिन है। उसमें न तो तू किसी भांति का काम-काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो।" आज संसार में कोई भी मनुष्य, केवल कुछ गिने-चुने कट्टर पंथी यहूदियों को छोड़कर, इस आज्ञा का पालन नहीं करता। विश्राम दिन अर्थात् सब्त का दिन शनिवार का था, रविवार का नहीं। परन्तु आज मसीही लोग रविवार को महत्त्व देते हैं, क्योंकि प्रभु यीशु के नए नियम के अनुसार मसीही लोगों को रविवार के दिन उसकी उपासना करने के लिये एकत्रित होना चाहिए। अनेकों वे लोग भी जो आज कहते हैं कि हम दस आज्ञाओं को मानते हैं, उपासना के लिये केवल रविवार को ही एकत्रित होते हैं। दूसरी ओर, दस आज्ञाओं की चौथी आज्ञा के अनुसार, विश्राम के दिन अर्थात् सब्त के दिन, जो कि शनिवार का दिन था, घर का कोई भी सदस्य किसी भी प्रकार का काम-काज नहीं कर सकता था। क्या आज वे लोग जो पुराने नियम की दस आज्ञाओं को मानने का प्रयत्न कर रहे हैं इस आज्ञा को बिल्कुल इसी प्रकार से मानते हैं ?

वास्तव में व्यवस्था तथा उसमें पाई जानेवाली सारी आज्ञाएं केवल एक निश्चित समय तक के लिये ही दी गई थीं। गलतियों ३ : १९ में, प्रेरित पौलुस कहता है, "तब फिर व्यवस्था क्या रही ? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिसको प्रतिज्ञा दी गई थी..." और १६ पद में वह कहता है, कि वह वंश यीशु मसीह है। इसका अभिप्राय यह कि व्यवस्था केवल यीशु मसीह के आने तक के लिए ही दी गई थी। परन्तु यीशु मसीह के आने के बाद हमें एक नई व्यवस्था दी गई, अर्थात् नया नियम, जिसके आधीन आज हम हैं।

गलतियों ३ अध्याय में प्रेरित पौलुस व्यवस्था की तुलना एक शिक्षक से करके कहता हैं, कि व्यवस्था लोगों के लिये एक शिक्षक के समान थी, जिसका उद्देश्य केवल लोगों को मसीह तक लाने का था, परन्तु मसीह के आने के बाद व्यवस्था समाप्त हो गई। २४ पद से आरम्भ करके वह कहता है, "इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारा शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक (अर्थात् व्यवस्था) के आधीन न रहे। क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी ; न कोई दास, न स्वतंत्र ; न कोई नर न नारी ; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"

मत्ती ५ : १७,१८ में प्रभु यीशु ने कहा, कि मैं व्यवस्था को लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूं। और यूहन्ना १९ : २८-३० में प्रभु ने क्रूस के ऊपर से घोषणा करके कहा, कि "पूरा हुआ।" इस प्रकार से प्रभु यीशु ने व्यवस्था को पूरा करके सामने से हटा दिया और उसके स्थान पर हमें अपनी नई वाचा दी। यही कारण है कि आज हम मूसा की व्यवस्था को "पुराना नियम" कहते हैं और प्रभु यीशु की वाचा को "नया नियम"।

पुराने नियम का उल्लेख करके प्रेरित पौलुस, इफिसियों २ : १४-१६ में कहता है, "क्योंकि वही हमारा मेल है, जिसने दोनों को एक कर लिया : और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।" और कुलुस्सियों २ : १४ में वह फिर कहता है, "और विधियों का वह लेख

जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला ; और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया।"

रोमियों ६ : १५ में प्रेरित कहता है कि हम अब व्यवस्था के आधीन नही हैं। रोमियों ७ : ४ में वह कहता है कि हम व्यवस्था के लिये मर चुके हैं, और ७ : ६ में वह घोषित करता है कि अब हम व्यवस्था के बन्धनों से छूटकर स्वतंत्र हो गए हैं। जी हां, आज हम पुराने नियम के आधीन नहीं हैं। २ कुरिन्थियों ३ : ६-१७ में लेखक स्पष्टता से बताता है कि पुरानी व्यवस्था पूर्णरूप से समाप्त हो चुकी है, और वह कहता कि वे जो आज पुराने नियम की आज्ञाओं पर चलते हैं उनके हृदयों पर परदा पड़ा है। परन्तु जब कभी उनका हृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह परदा उठ जाएगा।

आज हम प्रभु यीशु मसीह के नए नियम के आधीन हैं। प्रभु यीशु का नया नियम पुराने नियम की तरह किसी एक विशेष जाति के लिये नहीं है, परन्तु यह संसार के सब लोगों के लिये है। अपनी मृत्यु तथा पुनःरुत्थान के बाद प्रभु यीशु ने अपने चेलों के पास आकर कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती २८ : १८-२०)।

इसलिये, आज उद्धार प्राप्त करने के लिये तथा परमेश्वर के राज्य में ग्रहण-योग्य होने के लिये आवश्यक है कि हम नए नियम के अनुसार चलें। इसी नए नियम में, २ कुरिन्थियों ५ : १७ में हमें यह अश्वासन मिलता है कि "यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं ; देखो वे सब नई हो गईं।"

क्या आप एक नई सृष्टि हैं ? यदि आप मसीह में नहीं हैं तो आप एक नई सृष्टि कदापि नहीं हो सकते। किन्तु आप मसीह में हो सकते हैं, और इसका केवल एक ही मार्ग है, गलतियों ३ : २७ में नए नियम का लेखक कहता है, "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है।"

परमेश्वर अपने वचन पर चलने के लिये आपको बुद्धि वा सामर्थ दे।

पुराने नियम का महत्त्व

मित्रो :

पिछली बार हमने पुराने तथा नए सियम के बारे में कुछ आवश्यक बातों पर विचार किया था। हमने देखा था कि पुराना नियम बाइबल का पहिला भाग है तथा नया नियम बाइबल का दूसरा भाग है। परन्तु आज हम पुराने नियम के आधीन नहीं रहते, क्योंकि पुराना नियम संसार में सब लोगों के लिये नहीं दिया गया था परन्तु उसे केवल उन इस्राएलियों को ही दिया गया था जो यीशु मसीह से पूर्व रहते थे। किन्तु प्रभु यीशु ने इस संसार में आकर हमें अपना नया नियम दिया, जो कि संसार के सब लोगों के लिये है और यह कभी टलेगा नहीं। क्योंकि मत्ती २४ : ३५ में प्रभु यीशु ने कहा, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।

वास्तव में पुराना तथा नया नियम दोनों ही परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए हैं, और दोनों ही परमेश्वर के वचन हैं। जिस प्रकार से नया नियम परमेश्वर का वचन है ठीक उसी तरह से पुराना नियम भी परमेश्वर का वचन है। परन्तु जब हम कहते हैं कि आज हम नए नियम के आधीन हैं और पुराने नियम के आधीन नहीं हैं, तो इस से हमारा अभिप्राय पुराने नियम के स्तर को नीचे गिराने या उसके महत्त्व को कम करने से नहीं हैं। किन्तु इस से हमारा केवल इतना ही अभिप्राय है कि एक नियम या एक वाचा के दृष्टिकोण से आज पुराना नियम हमारे ऊपर कोई अधिकार नहीं रखता। इसलिये आज हमें पुराने नियम की शिक्षाओं को पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। पिछली बार हमने यह भी देखा था कि पुराने नियम में दस

आज्ञाएं भी सम्मिलित हैं, तथा सम्पूर्ण पुराना नियम, दस आज्ञाओं के समेत, एक नियम या वाचा के दृष्टिकोण से समाप्त हो चुका है। यहां कदाचित् कोई यह कह सकता है, कि पुराने नियम के साथ यदि दस आज्ञाएं भी समाप्त हो गईं तो फिर मनुष्य उनसे स्वतंत्र होकर हत्या कर सकता है, व्यभिचार कर सकता है, झूठ इत्यादि बोल सकता है। परन्तु जब हम नए नियम को खोलकर पढ़ते हैं तो हम देखते हैं कि प्रभु यीशु ने उन सभी आज्ञाओं को और भी अधिक वास्तविक बनाकर नए नियम में हमें दिया है। पुराने नियम में जबकि केवल इतना ही कहा गया था, कि तू हत्या न करना, व्यभिचार न करना, झूठ न बोलना, किन्तु, प्रभु यीशु ने नए नियम में, मत्ती की पुस्तक के ५ अध्याय में यूं कहा :

"तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि हत्या न करना, और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दन्ड के योग्य होगा। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दन्ड के योग्य होगा। और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दन्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे "अरे मूर्ख" वह नरक की आग के दन्ड के योग्य होगा। इसलिये यदि तू अपनी भेंट बेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं बेदी के सामने छोड़ दे। और जाकर पहिले अपने भाई से मेल मिलाप कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि व्यभिचार न करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका। यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। और यदि तेरा दहिना हाथ

तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है, कि तेरे अंगों में से एक का नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।

फिर तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि झूठी शपथ न खाना, परन्तु प्रभु के लिये अपनी शपथ को पूरा करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि कभी शपथ न खाना ; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। न धरती की क्योंकि वह उसके पांव की चौकी है····· अपने सिर की भी शपथ न खाना, क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है। परन्तु तुम्हारी बात हां की हां, या नहीं की नहीं हो ; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह बुराई से होता है।

तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, कि आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि बुरे का सामना न करना ; परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे·····तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था ; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो। जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बासाता है। क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा ? क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते ? और यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो ? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते ? इसलिये चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।"

और फिर, इब्रानियों ८ : १३ में हम फिर पढ़ते हैं कि "नई वाचा के स्थापन से उसने प्रथम वाचा पुरानी ठहराई, और जो वस्तु पुरानी

और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है।"

परन्तु फिर पुराना नियम आज बाइबल में क्यों है ? इसके बहुत से कारण हैं। पुराना नियम हमें संसार की उत्पत्ति के विषय में बताता है, पुराने नियम में हम मनुष्य की सृष्टि के बारे में पढ़ते हैं, पुराना नियम हमें बताता है, कि आरम्भ में मनुष्य के साथ परमेश्वर का कैसा सम्बन्ध था, मनुष्य ने आरम्भ में पाप कैसे किया ; उसके पाप का परिणाम क्या निकला। पुराने नियम को पढ़कर हमें उस जल-प्रलय के विषय में ज्ञान होता है जिसके द्वारा परमेश्वर ने एक बार पृथ्वी पर से मनुष्यों को मिटाया था। पुराने नियम में हम इस्राएली लोगों के सम्पूर्ण इतिहास को पढ़ते हैं; हम देखते हैं कि किस अद्भुत रीति से परमेश्वर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, उस ने उन्हें अपनी व्यवस्था दी, किस प्रकार से इस्राएलियों ने अनेकों बार परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ा और फलस्वरूप परमेश्वर ने उन्हें कैसे दन्डित किया। पुराने नियम में हम उन भविष्यद्वक्ताओं के बारे में पढ़ते हैं जिन्होंने भविष्य में प्रभु यीशु मसीह के इस संसार में आने के विषय में, तथा उसके दुख उठाने व सलीब पर मारे जाने के विषय में और उसके पुनःरुत्थान तथा स्वर्ग में उठा लिये जाने के विषय में अनेकों भविष्यद्वाणियां की थीं। इस प्रकार से, पुराना नियम हमें पूर्व-घटित सब बातों की जानकारी प्रदान करता है।

रोमियों १५ : ४ में नए निमम का लेखक कहता है कि "जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें।" यहां से हम सीखते हैं कि पुराने नियम का हमारे लिए एक बहुत बड़ा महत्त्व है। अर्थात्, पुराने नियम में लिखी हुई बातें हमारे लिए आदर्श है जिनके द्वारा हमें शिक्षा मिलती है।

सबसे पहले, पुराने नियम में, हमारा परिचय आदम तथा हव्वा से

होता है। हम देखते हैं, आदम और हव्वा ने, परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर पाप किया और फलस्वरूप उन्हें आत्मिक दृष्टिकोण से मृत्यु का दन्ड मिला। इसी प्रकार से जब हम आज परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ते हैं तो हम उसके विरोध में पाप करते हैं और अपने ऊपर दन्ड लाते हैं।

फिर, पुराने नियम में, हमारा परिचय नूह से होता है। जब परमेश्वर ने नूह से कहा, कि सब प्राणियों को अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है ; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी पाप व उपद्रव से भर गई है, तो नूह ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया। परन्तु क्योंकि नूह खरा तथा धर्मी पुरुष था इसलिये परमेश्वर उसे तथा उसके परिवार को बचाना चाहता था। परमेश्वर ने नूह को एक जहाज़ बनाने की आज्ञा दी, उसने नूह को यह भी बताया कि उस जहाज़ को बनाने के लिये उसे कौन सी लकड़ी का उपयोग करना है, उस जहाज़ की लम्बाई, चौड़ाई, तथा ऊंचाई कितनी रखनी है, किस ढंग से उसे बनाना है इत्यादि। और मित्रो, पुराने नियम में, उत्पत्ति की पुस्तक में हम पढ़ते हैं, कि नूह ने परमेश्वर की सारी आज्ञाओं को स्वीकार किया ; और उन सबका पालन ठीक उसी प्रकार से किया जैसे की परमेश्वर ने उसे आज्ञा देकर कहा था। उसने उसी लकड़ी का उपयोग किया जिसकी आज्ञा उसे परमेश्वर ने दी थी। उसने उस जहाज़ की लम्बाई, चौड़ाई तथा ऊंचाई इत्यादि ठीक उतनी ही रखी जितनी परमेश्वर ने उसे बताई थी ; उसने परमेश्वर की आज्ञा में न तो कुछ जोड़ा, न उस में से कुछ घटाया, और न उस में कुछ भी परिवर्तन किया। और नूह के आज्ञा-पालन के फलस्वरूप, परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को उसके साथ पूरा किया ; उस ने नूह को उस प्रचन्ड जल-प्रलय से बचा लिया जिसके द्वारा उसने पृथ्वी पर से अन्य सभी प्राणियों को नाश किया। कितना बड़ा पाठ आज हम नूह के जीवन से सीखते हैं। यदि आज हम नूह की तरह प्रभु की आज्ञाओं को पालन करें जिनका आदेश आज उसने

हमें नए नियम में दिया है तो वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार हमारा उद्धार करेगा और हमें अनन्त जीवन देगा।

पुराने नियम में ही कुछ और पृष्ठ आगे चलकर हमारा परिचय एक और व्यक्ति से होता है। उसका नाम इब्राहीम था। इब्राहीम बड़ा ही असाधारण व्यक्ति था। वह परमेश्वर में बहुत विश्वास करता था, और उसके दृढ़ विश्वास के कारण बाइबल में उसे "सब विश्वासियों का पिता" कहा गया है। जब परमेश्वर ने इब्राहीम को पहिली बार बुलाया, तो उत्पत्ति १२ अध्याय में लिखा है, कि उसने इब्राहीम से कहा, "अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा ; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा ; और भूमन्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।" अब, इब्राहीम ने क्या किया ? क्या उसने परमेश्वर से कुछ प्रश्न पूछे ? क्या उस ने परमेश्वर से तर्क करके कहा, कि परमेश्वर यह कैसे हो सकता है कि मैं एकदम अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर एक अनजाने स्थान पर चला जाऊं ? जी नहीं, इब्राहीम ने परमेश्वर से कोई प्रश्न नहीं पूछा ; उसने परमेश्वर से कोई तर्क या बहस नहीं की, परन्तु लिखा है, कि "परमेश्वर के इस वचन के अनुसार इब्राहीम चल पड़ा।" कितना बड़ा महान् विश्वास हम इब्राहीम के जीवन में देखते हैं !

और पुराने नियम के कुछ और पन्ने पलटने के बाद हमारी भेंट फिर इब्राहीम से होती है। इब्राहीम के यहां वर्षों से कोई सन्तान नहीं थी, परन्तु जब वह तथा उसकी पत्नी बूढ़े हो गए तो उनके यहां एक बालक का जन्म हुआ। उसका नाम इसहाक था। इब्राहीम तथा उसकी पत्नी इसहाक से बहुत ही प्रेम करते थे। जब इसहाक बड़ा हुआ, तो एक

दिन एकाएक परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, कि इब्राहीम, "अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्या देश में चला जा ; और वहां उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा।" सो अब इब्राहीम ने क्या किया ? क्या इब्राहीम ने परमेश्वर से कहा, कि परमेश्वर तू यह क्या कह रहा है, बुढ़ापे में तो मुझे एक संतान मिली है और तू कह रहा है कि मैं उसे भी होमबलि करके चढ़ाऊं ? नहीं, नहीं, यह कभी नहीं हो सकता, यह असम्भव है ! क्या इब्राहीम ने परमेश्वर से इस प्रकार से तर्क किया ? मित्रो, जब इब्राहीम ने परमेश्वर की आज्ञा को सुना तो लिखा है, "सो इब्राहीम बिहान को तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया, और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली ; तब कूच करके उस स्थान की ओर चला, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उस से की थी।" और कुछ ही समय बाद जब इब्राहीम उस निश्चित स्थान पर पहुंचा जहां उसे अपने पुत्र को बलि करना था, और जब वह अपने पुत्र को बलि करने के लिये तैयार हुआ, तो परमेश्वर ने इब्राहीम को यह कहकर रोका, कि इब्राहीम, "उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उस से कुछ कर : क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इस से अब मैं जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।" यही कारण है कि आज नए नियम में जहां कहीं भी विश्वास के महत्त्व का उल्लेख हुआ है तो वहां इब्राहीम का उदाहरण अवश्य दिया गया है। इब्राहीम का दृढ़ विश्वास शताब्दियों से लोगों के लिये प्रेरणा का कारण सिद्ध हुआ है।

नूह तथा इब्राहीम जैसे धर्मी, व विश्वासी लोगों के अतिरिक्त, पुराने नियम में हम अनेकों अन्य व्यक्तियों के बारे में भी पढ़ते हैं, जिनके जीवनों से हम बहुतेरे बड़े-बड़े पाठ सीखते हैं। हम मूसा के बारे में पढ़ते हैं, जिस ने परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसा करके इस्राएली

लोगों को मिस्र देश के कड़े बन्धनों से मुक्त कराया। हम अय्यूब के बारे में पढ़ते हैं जिस के ऊपर कठिनाईयां व परीक्षाएं आईं ; उसका घर-बार उजड़ गया, उसका सारा शरीर पांव के तलवे से लेकर सिर की चोटी तक बड़े-बड़े फोड़ों से भर गया, उसकी सारी देह रोग से छलनी हो गई। परन्तु वह धार्मिकता तथा परमेश्वर से न फिरा। उसके मित्र उसका उपहास उड़ाते थे। उसकी पत्नी ने उस से कहा, "क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है ? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा" क्या आप जानते हैं, कि अय्यूब ने क्या उत्तर दिया ? उस ने उस से कहा, "तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें ?" फिर हम सुलैमान जैसे बुद्धिमान् व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं, जिस ने कहा, "कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर ; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।"

क्या आप पुराने नियम में पाए जानेवाले लोगों की तरह परमेश्वर का भय मानते हैं ? क्या आप उन लोगों की तरह उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं ? प्रभु यीशु ने कहा, जो कोई मुझ पर विश्वास करेगा, और अपने पापों से मन फिराएगा, और मेरे नाम से बपतिस्मा लेगा, उसी का उद्धार होगा। क्या आप उसकी आज्ञाओं को मानेंगे ?

उद्धार पाने का ईश्वरीय नियम

मित्रो :

हमारे जीवन अनेकों प्रश्नों से भरे हुए हैं। प्रति-दिन हमारे सामने अनेकों प्रश्न आते हैं। उद्धारण स्वरूप, आप जानना चाहते हों कि आप अपनी आर्थिक स्थिति को कैसे सुधार सकते हैं ? आप जानना चाहते हों कि आपके जीवन का उद्देश्य क्या है ? कदाचित् आप जानने के इच्छुक हों कि आज से दस वर्ष बाद क्या होनेवाला है ? राजनीतिक या भौतिक दृष्टिकोण से कदाचित् आपके पास अनेकों ऐसे प्रश्न हों जिनके उत्तर आप जानना चाहते हों। परन्तु ये सब प्रश्न चाहे कितने भी आवश्यक क्यों न हों, ये सब के सब प्रश्न इस एक सहत्त्वपूर्ण प्रश्न के सामने बिल्कुल महत्त्वरहित बन जाते हैं कि **"उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ?"**

बाइबल को कभी-कभी पढ़नेवाले लोग भी अधिकांश रूप से यह मानते हैं कि हमारा उद्धार यीशु मसीह के लोहू के द्वारा होता है, तथा परमेश्वर से हमारा मेल यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा होता है। प्रेरित पौलुस, इफिसियों २ : ८, ९ में कहता है, "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं बरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमन्ड करे।" और तीतुस २ : ११ में उस ने कहा, "क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है।" सो, यहाँ से हम सीखते हैं कि हमारा उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से होता है, और उसका अनुग्रह, यीशु मसीह के द्वारा, सब मनुष्यों पर प्रगट है। किन्तु, क्या इसका अभिप्राय यह है कि सब मनुष्यों का उद्धार

अपने ही आप हो गया ? जी नहीं, परन्तु हम सब जानते हैं कि जब कि परमेश्वर का अनुग्रह संसार में सब मनुष्यों पर प्रगट है, उद्धार केवल उन्हीं लोगों का होता है जो परमेश्वर की मानते हैं। हम पढ़ते हैं, प्रेरितों १० : ३५ में, "कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, बरन हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।"

सो, इन बातों को ध्यान में रखते हुए, हम इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न को दोहराते हैं कि "उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ?" आज इस अध्ययन में हमारा एक यही उद्देश्य है कि स्वयं परमेश्वर अपने वचन के द्वारा आपको इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर दे। मैं इस योग्य नहीं हूं कि इस बड़े प्रश्न का सही उत्तर आपको दे सकूं.....और न आप ही इस योग्य हैं.....व न ही कोई अन्य मनुष्य। केवल परमेश्वर ही हमें बता सकता है कि हमारा उद्धार कैसे हो सकता है। और इस बात को निश्चित रूप से जानने के लिये, कि हमारा उत्तर वास्तव में परमेश्वर की ही ओर से होगा, हमारा आज का पाठ कुछ भिन्न होगा। आज हम बिना अपनी ओर से कुछ कहे केवल पवित्र-शास्त्र में से ही पढ़ेंगे। और हम अपने आज के पाठ को "उद्धार पाने का ईश्वरीय नियम" कहेंगे।

अब, इस से पहले कि हम पवित्र शास्त्र में से पढ़ना आरम्भ करें, मैं कुछ आवश्यक बातें आपको और बता देना चाहता हूं, सब से पहले हम देखेंगे कि प्रभु यीशु ने अपने चेलों को बताया कि लोग किस प्रकार से उद्धार पाएंगे, अर्थात् उस ने ईश्वरीय नियम को दर्शाया, इस के तुरन्त बाद हम देखेंगे कि यीशु स्वर्ग में उठाया गया, और फिर कलीसिया की स्थापना हुई तथा हज़ारों लोगों का उद्धार हुआ। इन सब घटनाओं का वर्णन हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलता है। (परन्तु बाइबल में से पढ़ते हुए पवित्रशास्त्र के अध्यायों व पदों का उल्लेख मैं यहां नहीं करूंगा, किन्तु, जैसा कि आप जानते हैं कि इन पाठों को छपने के

बाद, इन्हें एक पुस्तक के रूप में आप हमारे यहां से प्राप्त कर सकते हैं)।

इस आवश्यक बात को भी ध्यान में रखें कि आज हम परमेश्वर के वचन में उस के दिये हुए "ईश्वरीय नियम" को देखेंगे, तथा यह कि उसी नियम का पालन किस प्रकार से किया गया। मेरी आशा है कि आज जब हम अपने पाठ को अन्तिम रूप देंगे तब तक आप निश्चित रूप से यह जान लेंगे कि मनुष्य के उद्धार के लिये परमेश्वर की योजना कितनी सरल है, तब आप अवश्य ही इस प्रश्न का उत्तर जान लेंगे, कि **"उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ?"**

याद रखें, कि आरम्भ से अन्त तक जो कुछ भी हम देखेंगे, वह सब केवल परमेश्वर के वचन में से ही होगा। इसलिये आज जो कुछ भी कहा जाएगा यदि आप उसे स्वीकार नहीं करेंगे तो आप मुझे नहीं परन्तु स्वयं परमेश्वर को अस्वीकार करेंगे। सो आईए, हम पवित्र-शास्त्र की इन बातों को ध्यान से सुनें :

"यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" (मत्ती २८ : १८)।

"और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १५-१६)।

".....यों लिखा है; कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो।" (लूका २४ : ४६-४८)।

"इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और

उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती २८ : १६, २०)।

"जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। (मत्ती १० : ३२)।

"तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी। और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। और वे उसको दन्डवत करके बड़े आनन्द से यरुशलेम को लौट गए।" (लूका २४ : ५०-५२)।

"जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे, और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।" (प्रेरितों २ : १-४)।

"और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई, और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।" (प्रेरितों २ : ५, ६)।

"पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो" (प्रेरितों २ : १४)।

".....कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की ओर

से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया : क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।" (प्रेरितों २ : २२-२४)।

"क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, कि मैं प्रभु को सर्वदा अपने सामने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊं। इसी कारण मेरा मन आनन्दित हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई; वरन मेरा शरीर भी आशा में बसा रहेगा। क्योंकि तू मेरे प्राणों का अधोलोक में न छोड़ेगा, और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा·····उस ने होनहार को पहिले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की, कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई।" (प्रेरितों २ : २५-२७, ३१)।

"इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिस के हम सब गवाह हैं। इस प्रकार परमेश्वर के दहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उस ने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो·····सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" (प्रेरितों २ : ३२-३३, ३६)।

"तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाईयो, हम क्या करें?" (प्रेरितों २ : ३७)।

"पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" (प्रेरितों २ : ३८, ३९)।

"उस ने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ।" (प्रेरितों २ : ४०)।

"सो जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्हों ने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।" (प्रेरितों २ : ४१)।

"और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे·····और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था।" (प्रेरितों २ : ४२, ४७)।

··· ··· ···

"उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तित्तर बित्तर हो गए·····और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों को मसीह का प्रचार करने लगा। और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।" (प्रेरितों ८ : १, ५, ६,)।

"इस से पहले उस नगर में शमौन नाम एक मनुष्य था, जो टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बनाता था। और सब छोटे से बड़े तक उसे मानकर कहते थे, कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान् कहलाती है·····परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के

राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।" (प्रेरितों ८ : ६, १०, १२)।

"तब शमौन ने आप भी प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा....." (प्रेरितों ८ : १३)।

... ...

"फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा; उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरुशलेम से अज्जाह को जाता है, और जंगल में है। वह उठकर चल दिया, और देखो, कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मन्त्री और खजान्ची था, और भजन करने को यरुशलेम आया था। और वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था।" (प्रेरितों ८ : २६-२८)।

"तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले। फिलिप्पुस ने उस ओर दौड़कर उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा, कि तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है ? उस ने कहा, जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूं ? और उस ने फिलिप्पुस से बिनती की, कि चढ़कर मेरे पास बैठ।" (प्रेरितों ८ : २९-३१)।

"पवित्र शास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था; कि वह भेड़ की नाईं बध होने को पहुंचाया गया, और जैसे मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के सामने चुपचाप रहता है वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। उसकी दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठाया जाता है।"

"इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा; मैं तुझ से बिनती करता हूं, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किस के विषय में कहता है, अपने या

किसी दूसरे के विषय में। तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।" (प्रेरितों ८ : ३२-३५)।

"मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है : उसने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।" (प्रेरितों ८ : ३६, ३७)

"तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े. और उसने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे वे उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग को चला गया।" (प्रेरितों ८ : ३८, ३९)।

... ...

"शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर-घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट-घसीटकर बन्दीगृह में डालता था।" (प्रेरितों ८ : ३)।

"और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया। और उस से दमिश्क की आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां माँगी, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बान्धकर यरुशलेम में ले आए।" (प्रेरितों ९ : १-२)।

"परन्तु चलते-चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी। और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? उस ने पूछा; हे प्रभु, तू कौन है? उस ने कहा; मैं यीशु हूं; जिसे तू

सताता है। परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा जाएगा।" (प्रेरितों ९ : ३-६)।

"तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आंखें खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़के दमिश्क में ले गए। और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया।" (प्रेरितों ९ : ८, ९)।

"दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था, उस से प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह! उस ने कहा; हां प्रभु। तब प्रभु ने उस से कहा, उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है·····तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल ·····" (प्रेरितों ९ : १०, ११, १७)।

"हामारे बापदादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिये ठहराया है, कि तू उस की इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और उसके मुंह से बातें सुने। क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा, जो तू ने देखी और सुनी हैं।" (प्रेरितों २२:१४, १५)।

"अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२ : १६)।

"और तुरन्त उसकी आंखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया·····" (प्रेरितों ९ : १८)।

··· ··· ··· ··· ···

"अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे·····जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा; मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है। तब उन्हो नें उप-

वास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।" (प्रेरितों १३ : १-३)।

"सब्त के दिन (वे) नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए, कि वहां प्रार्थना करने का स्थान होगा; और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे। और लुदिया नाम थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुनती थी; और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाए।" (प्रेरितों १६ : १३, १४)।

"और जब उस ने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया, तो उसने बिनती की, कि यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो; और वह (उन्हें) मनाकर ले गई।" (प्रेरितों १६ : १५)।

"जब (वे) प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो (उन्हें) एक दासी मिली जिस में भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी। वह पौलुस के (और सीलास के) पीछे आकर चिल्लाने लगी कि ये मनुष्य प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं। वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस दुःखित हुआ, और मुंह फेरकर उस आत्मा से कहा, मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं, कि उस में से निकल जा, और वह उसी घड़ी निकल गई।" (प्रेरितों १६ : १६-१८)।

"जब उसके स्वामियों ने देखा, कि हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो पौलुस और सीलास को पकड़के चौक में प्रधानों के पास खींच ले गए·····और बहुत बेत लगवाकर उन्हें बन्दीगृह में डाला; और दारोगा को आज्ञा दी, कि उन्हें चौकसी से रखे। उस ने ऐसी आज्ञा

पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में रखा और उन के पाँव काठ में ठोक दिए।" (प्रेरितों १६ : १६, २३, २४)।

"आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उनकी सुन रहे थे। कि इतने में एकाएक बड़ा भुईंडोल हुआ, यहां तक कि बन्दीगृह की नेव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल पड़े।" (प्रेरितों १६ : २५, २६)।

"और दारोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि बन्धुए भाग गए, सो उस ने तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा। परन्तु पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा; अपने आपको कुछ हानि न पहुंचा, क्योंकि हम सब यहां है। तब वह दीया मंगवाकर भीतर लपक गया, और कांपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा। और उन्हें बाहर लाकर कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ?' (प्रेरितों १६ : २७-३०)।

"उन्हों ने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। और उन्हों ने उसको, और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया।" (प्रेरितों १६ : ३१, ३२)।

"और रात को उसी घड़ी उस ने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उस ने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया। और उस ने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।" (प्रेरितों १६ : ३३, ३४)।

... ...

"इसके बाद पौलुस.....कुरिन्थुस में आया.....और वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों

को भी समझाता था·····तब आराधनालय के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया।" (प्रेरितों १८ : १, ४, ८)।

... ...

"अब जो बातें हम कह रहे हैं, उन में से सब से बड़ी बात यह है कि·····" (इब्रानियों ८ : १) :

"(वे) सुनकर विश्वास लाए" (प्रेरितों १८ : ८)।

"विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों ११ : ६)।

"पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ·····" (प्रेरितों २ : ३८)।

"मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।" (लूका १३ : ३)।

"·····उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।" (रोमियों १० : १०)।

"·····मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।" (प्रेरितों ८ : ३७)।

"·····उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२ : १६)।

"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा···।" (मरकुस १६ : १६)।

"मन फिराओ, और तुम मे से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये·····बपतिस्मा ले·····।" (प्रेरितों २ : ३८)।

... ...

"यीशु ने·····कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता·····और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये, सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।" (यूहन्ना १४ : ६; इब्रानियों ५ : ९)।

"·····उन का क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते ?" (१ पतरस ४ : १७)।

"·····प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे। (२ थिस्सलुनीकियों १ : ७-९)।

"यीशु ने कहा·····यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" (यूहन्ना १४ : १५)।

"·····देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है।" (२ कुरिन्थियों ६ : २)।

यीशु की पुकार

मित्रो :

मैं सर्वशक्तिमान् परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे एक बार फिर से यह सुअवसर प्रदान किया है, कि मैं आपका ध्यान यीशु के सामर्थपूर्ण सुसमाचार की गम्भीरता की ओर आकृषित करूं। यीशु का सुसमाचार वास्तव में बड़ा ही साधारण है, और इसीलिये इसकी सरलता और साधारणपन संसार में अनेकों लोगों के लिये ठोकर का कारण है ।

परमेश्वर ने मनुष्य के उद्धार, को सम्भव करने के लिये यीशु मसीह को इस संसार में भेजा, जिस ने इस पृथ्वी पर रहकर, परमेश्वर की इच्छा पर चलकर, एक सिद्ध जीवन व्यतीत किया। परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर की पहिले ही से ठहराई हुई मनसा और उसके होनहार के ज्ञान के अनुसार, यीशु को एक क्रूस पर लटकाकर मार डाला गया। पवित्रशास्त्र, १ पतरस २ : २४ में, इस बात की गवाही देकर यूं कहता है, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं···।" सो परमेश्वर ने संसार के सब लोगों के पापों को, आपके और मेरे पापों को, यीशु के ऊपर लादकर उसे क्रूस की मृत्यु दिलवाई। क्योंकि बाइबल कहती है, कि पाप की मजदूरी मृत्यु है (रोमियों ६ : २३), और फिर बाइबल कहती है, कि परमेश्वर प्रेम है (१ यूहन्ना ४ : १६)। इसलिये, हमारे प्रति अपने महान् प्रेम को प्रकट करने के लिये, उसने हमारे पापों का

दन्ड हमें देने के विपरीत, हमारे पापों के कारण उसे दन्डित किया, ताकि हम उसके द्वारा पाप से छूटकर अनन्त जीवन में प्रवेश करें। क्या यह सुसमाचार नहीं है ? वास्तव में इस से बड़ा सुसमाचार और क्या हो सकता है, कि कोई आपके और मेरे बदले में अपने प्राणों को दे दे ? इस से बड़ा सुसमाचार और कौन सा हो सकता है, कि जब हम निर्बल, अधर्मि और पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा ? मित्रो, क्या आप सुन रहे हैं ? ध्यान से सोचिए इस बात के ऊपर। क्या आपने कभी इस से बड़े सुसमाचार की चर्चा कहीं सुनी है ?

परन्तु मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि उसने यीशु मसीह को आपके और मेरे पापों के कारण केवल उस क्रूस के ऊपर दन्डित ही नहीं किया, परन्तु अपनी मृत्यु के तीसरे दिन बाद, वही यीशु, परमेश्वर की सामर्थ से फिर जी उठा। जीस कब्र में उसको रखा गया था तीसरे दिन वह कब्र खाली मिली। यीशु वहां नहीं था, वह जी उठा था। और सैकड़ों लोगों ने उसे जी उठने के बाद देखा। इसके बाद वह चालीस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा और अपने चेलों को आदेश देता रहा, और अन्त में अपने चेलों से यह प्रतिज्ञा करके कि एक दिन मैं फिर वापस आऊंगा, वह स्वर्ग में वापस उठा लिया गया। सो मित्रो, हमारा उद्धारकर्त्ता एक जीवित उद्धारकर्त्ता है। यदि यीशु केवल मरा ही होता, तो वह किसी भी अन्य मनुष्य से कुछ भी बढ़कर न होता। मैं कभी भी एक मरे हुए उद्धारकर्त्ता में विश्वास नहीं करता। परन्तु नहीं, हमारा उद्धारकर्त्ता जीवित और विजयी उद्धारकर्त्ता है।

परन्तु, वह किस का उद्धारकर्त्ता है ? यह प्रश्न बड़े ही ध्यान देने योग्य है। क्या इसलिये कि यीशु संसार के सब लोगों के लिये मरा इस कारण प्रत्येक मनुष्य का अपने ही आप उद्धार हो गया, चाहे वह जैसा भी जीवन ब्यतीत करे और कुछ भी करे ? मरकुस १६ : १५, १६ में लिखा है कि मुर्दों में से जी उठने के बाद, स्वर्ग में जाने से पहिले, यीशु

ने अपने चेलों को मिलकर उन्हें यह आज्ञा दी, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" और "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" सो हम देखते हैं, कि प्रभु की आज्ञानुसार उद्धार केवल उसी मनुष्य का होगा जो उस में विश्वास करेगा, और अपना मन फिराकर उसके नाम से बपतिस्मा लेगा।

विश्वास करने का अर्थ है, कि हम उसे अपना प्रभु मान लेते हैं, हम अपने आपको उसके हवाले कर देते हैं। और बपतिस्मा लेकर हम प्रगट में यह बताते हैं, कि जिस प्रकार से यीशु मेरे पापों के लिये मारा गया, मैं अपने पापों से मन फिराकर भविष्य में पाप के लिये मरा हुआ बन जाता हूं, और जिस प्रकार से मृत्यु के बाद यीशु कब्र में गाड़ा गया वैसे ही मैं, बपतिस्मे के द्वारा, जल के भीतर गाड़ा जाता हूं, ताकि पाप का मेरा पुराना मनुष्यत्व दफ़न हो जाए, और फिर, बपतिस्मे के पानी से बाहर आकर मैं प्रगट रूप में यह दर्शाता हूं, कि मैं अब नए जीवन की चाल चलने के लिये एक नई सृष्टि बन गया हूं। २ कुरिन्थियों ५ : १७ में, प्रेरित पौलुस कहता है, "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गईं हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।" और गलतियों ३ : २७ में वह कहता है कि मसीह में होने के लिये हम बपतिस्मा लेते हैं. सुनिये कि वह क्या कहता है, उसने कहा, "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है।"

इसी बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिये प्रेरित, रोम में मसीह की कलीसिया को, रोमियों ६ : ३-५ में लिखकर कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा

पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।"

सो हम देखते हैं कि यीशु ने सुसमाचार को प्रचार करने की आज्ञा दी। और उस ने कहा, कि इस सुसमाचार को सुनकर जो इस पर विश्वास करेगा और इसे मानेगा, उसी का उद्धार होगा। इसलिये यह बहुत ही आवश्यक है, कि उद्धार पाने के लिये, संसार में प्रत्येक मनुष्य यीशु के सुसमाचार को सुने, उस पर विश्वास करे और उसकी आज्ञाओं को माने। परन्तु यदि हम ऐसा नहीं करते, तो हमें याद रखना चाहिए, एक दिन यीशु फिर वापस आ रहा है, उसने कहा कि वह किसी भी समय आ जाएगा, और इस बार, वह पहिली बार कि तरह एक उद्धार-कर्त्ता बनकर नहीं, परन्तु एक न्यायकर्त्ता बनकर आएगा। २ थिस्स-लुनीकियों १ : ७-९ में, बाइबल कहती है, "……उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे।"

प्रश्न यह है, कि इतनी बड़ी चेतावनी को सुनने के बाद भी लोग क्यों नहीं यीशु के सुसमाचार को मानते ? इसके बहुतेरे कारण हो सकते हैं। अनेकों लोग यीशु के सुसमाचार को इसलिये नहीं मानते क्योंकि वे उसे पूरा महत्व नहीं देते, या कदाचित् उसके बारे में पूरी जानकारी नहीं रखते। प्रेरित पौलुस, जिस ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से नए नियम में सबसे अधिक पुस्तकों को लिखा, एक मसीही बनने से

पहले, मसीहियत का एक कट्टर विरोधी था। उसने बहुतेरे मसीही लोगों पर अत्याचार किया था और बहुतेरों को मरवा तक डाला था। परन्तु १ तीमुथियुस १ : १३ में वह कहता है, "मैं तो पहिले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धेर करनेवाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैंने अविश्वास की दशा में बिन समझे-बूझे ये काम किए थे।" इसी प्रकार से, आज अनेकों लोग अपने अविश्वास और ना-समझी के कारण सुसमाचार को नहीं मानते। बहुतेरे लोग इस बात पर वास्तव में विश्वास नहीं करते कि यदि वे सुसमाचार का पालन नहीं करेंगे तो वे नाश होंगे। ऐसे ही लोगों का वर्णन करके यीशु ने कहा, "क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आंखें मूंद ली हैं, कहीं ऐसा न हो कि वे आखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं।" (मत्ती १३ : १५)।

इसी तरह से, बहुतेरे लोग सुसमाचार को इसलिये नहीं मानते क्योंकि सुसमाचार का पालन करने से पहले उन्हें अपने पापों से मन फिराना पड़ेगा, जिनमें वे आनन्द प्राप्त करते हैं। इब्रानियों ११ : २४-२७ में, हम मूसा के बारे में इन शब्दों में पढ़ते हैं, "विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फ़िरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा। और मसीह के कारण निन्दित होने को मिसर के भन्डार से बड़ा धन समझा : क्योंकि उसकी आंखें फल पाने की ओर लगी थीं। विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डरकर उस ने मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानों देखता हुआ दृढ़ रहा।" मूसा जानता था की प्रभु की इच्छा को पूर्ण करने पर भविष्य में उसे अनन्त महिमा का एक मुकुट मिलेगा। इसी-लिये, उसने थोड़े से समय के आनन्द की कुछ परवाह न करके परमे-श्वर के साथ चलना उचित समझा। वास्तव में यदि लोग आज अपनी

आत्मा के उद्धार के महत्व को समझें, और अनदेखे अनन्त जीवन के मुकुट के महत्व को जानें, तो उन्हें पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के सुसमाचार को मानना कहीं अधिक उत्तम लगेगा।

क्योंकि संसार में बहुतेरे लोग ज्योति के विपरीत अन्धकार से प्रेम करते हैं, इस कारण वे यीशु के सुसमाचार को मानकर ज्योति में नहीं आना चाहते। प्रभु यीशु ने, युहन्ना ३ : १९-२१ में कहा, "और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वे परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।" इस में कोई संदेह नहीं, कि अनेकों लोग यीशु के सुसमाचार को इसीलिये नहीं मानना चाहते क्योंकि ने जानते हैं कि उसके सुसमाचार को मानने के कारण वे अंधकार से छूटकर ज्योति में आ जाएंगे। किन्तु, प्रभु यीशु ने कहा, कि मनुष्यों को ज्योति से अन्धकार अधिक प्रिय लगता है।

एक और कारण है जिसके फलस्वरूप लोग यीशु के सुसमाचार को नहीं मानना चाहते, और वह यह है, कि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती है। जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो इस बात को उस ने अनेकों लोगों के जीवनों में पाया। जब वह उपदेश देता था तो बहुतेरे लोग उस की बातों पर विश्वास करते थे, वे अपने मन-ही-मन में उसे स्वीकार करते थे, परन्तु उसे प्रगट में सब लोगों के साम्हने नहीं मानना चाहते थे। उस समय यहूदियों के आराधनालय के बहुतेरे धार्मिक अगुवे उस पर विश्वास ले आए, लिखा है, यूहन्ना १२ : ४२, ४३ में, "तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फ़रीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे,

ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं। क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी।" जी हां, मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी। वे नहीं चाहते थे कि यीशु को प्रगट रूप में सब के सामने मान लेने के कारण उनके ओहदे उन से छिन जाएं, वे आराधनालयों में से निकाले जाएं और लोग उनके विरोधी बन जाएं। वास्तव में वे छिपे हुए विश्वासी थे! परन्तु मेरे मित्रो, मसीह नहीं चाहता कि उसके विश्वासी छिपे हुए रहें, वह चाहता है कि वे सब लोगों के सामने उसकी आज्ञाओं पर चलकर उसका अंगीकार करें, उसका इकरार करें, उसे मानें। मत्ती १० : ३२, ३३ में उस ने कहा, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा, उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा।" और मत्ती ५ : ११, १२ में उस ने कहा, "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है..."।

आज इस पृथ्वी पर बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो यीशु में विश्वास करते हैं, वे उसे अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते हैं, परन्तु उसके सुसमाचार को मानकर वे उसे प्रगट में नहीं मानना चाहते। परन्तु मैं आप से कहता हूं, कि मित्रो यदि आज आप इस स्थिति में है, तो आपको चाहिए कि आप अपने पूर्व जीवन से मन फिराएं, और सब लोगों के सामने उसे मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लें। आपको चाहिए कि आप अपने कामों तथा जीवनों से सब लोगों पर यह प्रगट करें कि आप एक मसीही हैं। अनेकों लोग यीशु मसीह को कागज़, पत्थर, या लकड़ी के टुकड़ों पर महिमान्वित करना चाहते हैं, जबकि उन्हें चाहिए कि वे उसे अपने कामों व जीवनों में ऊंचा उठाएं।

मैंने बहुतेरे लोगों को यीशु के सुसमाचार की शिक्षा दी है, और उन में मैंने कुछ ऐसे लोगों को भी पाया, जिन्होंने सुसमाचार को मानने से केवल इसलिये इन्कार कर दिया क्योंकि वे अपने परिवार और माता पिता की रीतियों को नहीं छोड़ना चाहते। वे कहते हैं यह तो ठीक है, जैसाकि आपने कहा, परन्तु हमारे घर में तो आरम्भ से ऐसा ही होता आया है, हमारे माता-पिता तो इन्हीं रीतियों पर चलते हैं। जी हां, परन्तु एक बात याद रखिए, कि अन्त के दिन आपका न्याय आपके माता-पिता इत्यादि नहीं करेंगे, न ही वहां आपके धार्मिक अगुए आपका न्याय करने के लिये खड़े होंगे, परन्तु न्याय के दिन आप को उस यीशु का सामना करना पड़ेगा, जिस ने कहा, "जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं, और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।" (मत्ती १० : ३७)।

आपको चाहिए कि आप इन बातों के ऊपर गम्भीरता से विचार करें। एक ईमानदार मनुष्य अपने विचारों को सच्चाई से सहमत होने के लिये बदलता है, परन्तु एक पूर्वद्वेषी मनुष्य सच्चाई को अपने विचारों से सहमत होने के लिये बदलता है। आप किस प्रकार के मनुष्य हैं ?

आपको चाहिए कि आप पाप से अपना मन फिराकर, पाप के लिए मर जाएं, और बपतिस्मे के द्वारा यीशु के साथ गाड़े जाएं, ताकि आप नए जीवन की चाल चलने के लिये उठ खड़े हों। (रोमियों ६:१-४)।

सुसमाचार को पालन करने की आपके लिये मसीह की यह पुकार उस मां की प्रेमपूर्ण बिनती-भरी पुकार के समान है, जो एक जलते हुए घर के बाहर खड़ी होकर अपने बालक से बिनती करके कह रही हो, कि वह बाहर उसके पास उसकी सुरक्षा में आ जाए। मेरी आशा है, कि आज आप यीशु की प्रेमपूर्ण पुकार को सुनेंगे और उसके सुसमाचार को मानने का निश्चय करेंगे। परमेश्वर अपने वचन पर चलने के लिये आपको सामर्थ व बुद्धि दे।

नमक तथा ज्योति

मित्रो :

आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व जब प्रभु यीशु ने इस पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य का प्रचार करना आरम्भ किया, तो बाइबल बताती है कि उस के प्रभावपूर्ण उपदेशों को सुनने, और उसके अत्यन्त ही आश्चर्य-जनक कार्यों को देखने के लिये, लोगों की भीड़ की भीड़ उसके पास आने लगी। और जब हम मत्ती की पुस्तक के ५ अध्याय को खोलकर पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि यीशु वहां लोगों की एक भीड़ को इस प्रकार से उपदेश देता है, लेखक बताता है :

"वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया, तो उस के चेले उसके पास आए। और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा, धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे। धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे। धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। धन्य, हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" फिर उस ने अपने चेलों को सम्बोधित करके कहा, "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं, और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है, इसलिये कि

उन्हों ने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुमसे पहिले थे इसी रीति से सताया था।"

फिर उसने उन से आगे कहा, "तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।"

आज हम विशेष रूप से इन्हीं दो वस्तुओं, अर्थात् नमक तथा ज्योति, के ऊपर विचार करेंगे। यह बात बड़ी ही ध्यान देने योग्य है, कि प्रभु यीशु अपने उपदेशों को समझाने के लिये अकसर पृथ्वी पर की ही विभिन्न वस्तुओं के उदाहरण तथा दृष्टान्त दिया करता था, और इसलिये उसकी शिक्षाएं इतनी सरल होती थीं कि साधारण लोग भी उन्हें बिना किसी कठिनाई के समझ लेते थे। एक बार जब वह लोगों को सिखाना चाहता था, कि उनकी आत्मा उनकी देह से अधिक महत्त्वपूर्ण है, जब वह लोगों को सिखाना चाहता था कि वे अपना भरोसा सांसारिक वस्तुओं पर से हटाकर केवल परमेश्वर पर रखें, तो उस ने उनसे कहा, "आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है; क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते? तुम में कौन है जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं। तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में उन में से किसी के

समान वस्त्र पहिने हुए न था।" इसी प्रकार से, अनेकों अन्य स्थानों पर भी हम देखते हैं कि प्रभु यीशु ने पृथ्वी पर की विभिन्न छोटी-छोटी वस्तुओं को लेकर उनके द्वारा बहुतेरी बड़ी-बड़ी आत्मिक शिक्षाएं दीं।

परन्तु मत्ती ५ अध्याय में उस ने अपने चेलों से कहा, कि तुम पृथ्वी के नमक हो। इस से प्रभु का क्या अभिप्राय था? वास्तव में नमक में अनेकों विशेषताएं हैं। और यही कारण है कि उसने अपने अनुयायीयों को "नमक" कहकर सम्बोधित किया।

सबसे पहले हम देखते हैं, कि नमक अपने स्वाद के लिये विशेष है। लोग नमक को पसन्द करते हैं, छोटे-बड़े सभी लोगों को उसकी आवश्यकता होती है, और नमक के स्वाद का स्थान कोई अन्य वस्तु नहीं ले सकती। इसी प्रकार से यीशु के चेलों में एक विशेष स्वाद का होना आवश्यक है। उनके जीवन, व्यवहार, बातचीत सभी इस प्रकार के होने चाहिएं कि लोग उन्हें पसन्द करें और अपने जीवनों में उनकी आवश्यकता को अनुभव करें। उन्हें अपने सारे मन, बुद्धि और आत्मा से परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए, तथा अपने पड़ोसी अर्थात् संसार के सभी लोगों से अपने समान प्रेम रखना चाहिए। वास्तव में पहिले मसीही लोगों का आपसी तथा अन्य लोगों के प्रति प्रेम इतना प्रभाव-पूर्ण था कि अनेकों लोगों ने उनके प्रेमपूर्ण व्यवहार से प्रभावित होकर ही अपने जीवनों को मसीह को दे दिया था।

एक अन्य विशेषता जो हमें नमक में मिलती है, वह है नमक का सरलता से घुल जाना। नमक को किसी अन्य वस्तु में मिलाने के लिये हमें कोई परिश्रम या प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, यह एक ऐसी वस्तु है जो शीघ्र ही घुल-मिल जाती है। इसी तरह से यीशु के चेलों में यह गुण भी बहुत आवश्यक है, कि वे शीघ्रता से लोगों में घुल-मिल जाएं। रोमियों १२ : १५ में हम देखते हैं कि यीशु के अनुयायीयों को उपदेश देकर कहा गया था कि "आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द

करो; और रोनेवालों के साथ रोओ।" स्वयं प्रभु यीशु के जीवन में भी हम इस विशेषता को देखते हैं, जब उसे एक ब्याह में बुलाया गया, यूहन्ना २ अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि वह वहाँ गया और उनके आनन्द में सम्मिलित हुआ। परन्तु यूहन्ना अपनी पुस्तक के ११ अध्याय में हमें बताता है कि जब यीशु को पता चला कि लाज़र बीमार है तो वह उसके गाँव में उसे देखने गया, और जब लाज़र की मृत्यु के कारण लोग शोक मना रहे थे व रो रहे थे, तो लिखा है, कि उन्हें देखकर यीशु के आंसू बहने लगे; वह उनके साथ रोया। जब प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा कि तुम पृथ्वी के नमक हो, तो उसका अभिप्राय था कि उसके चेले नमक की तरह लोगों के साथ घुलने-मिलनेवाले होंगे, ताकि लोग उनके प्रभाव में आकर उनके स्वाद से स्वादिष्ट हो जाएं। इस में कोई संदेह नहीं, कि यीशु के प्रथम चेलों में यह विशेष गुण विद्यमान् था, यही कारण था कि उन दिनों में मसीहीयत इतनी शीघ्रता से फैली कि उसका प्रभाव आज तक संसार के प्रत्येक भाग में पाया जाता है।

यीशु के वे चेले, नमक की तरह इतने प्रभाव-पूर्ण थे, कि जिस प्रकार से नमक को खाकर हमें प्यास लगती है, लोग उनके उपदेशों को सुनने के लिये अपने हृदय में एक प्यास का अनुभव करते थे। उनके जीवन नमक की विशेषताओं से परिपूर्ण थे, लोग उनके समीप रहना चाहते थे, और जितने अधिक उनके समीप वे रहते थे उतनी ही अधिक प्यास का अनुभव वे अपने हृदयों में करते थे। क्या आप एक मसीही हैं? क्या आप यीशु के एक चेले हैं? क्या लोग आपके पास रहना चाहते हैं? क्या वे आपकी बातों को सुनने के लिये अपने हृदय में प्यास का अनुभव करते हैं? प्रभु यीशु ने कहा, "यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फ़िर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।"

किन्तु, नमक में एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता है, और वह यह है कि

नमक अनेकों वस्तुओं को सड़ने व खराब होने से बचाता है। अकसर लोग विभिन्न वस्तुओं को सड़ने से या खराब होने से बचाने के लिये उन में नमक लगाकर या मिलाकर रखते हैं। यीशु ने अपने चेलों से कहा, कि तुम पृथ्वी के नमक हो। नमक की तरह उनका यह कार्य था कि वे लोगों की आत्माओं को पाप-रूपी गन्दगी से सड़ने से बचाएं। केवल वे ही यह कार्य कर सकते थे, क्योंकि प्रभु ने उन्हें सिखाया था कि वे मन के दीन बनें, नम्र व दयावन्त बनें, मन के शुद्ध तथा मेल करवाने-वाले बनें, संसार के सब लोगों से अपने समान प्रेम रखें। प्रभु ने उन्हें आज्ञा देकर भेजा था कि तुम संसार भर में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार सुनाओ, और जो विश्वास करे और अपने पापों से मन फिराए उन्हें मेरे नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब वे बातें मानना सिखाओ जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, और यदि विश्वास करनेवाले लोग उन सब बातों को मानेंगे, तो उस ने प्रतिज्ञा करके कहा था, कि मैं उन की पाप-रुपी गन्दगी से उन्हें साफ़ करके उन्हें स्वर्ग के राज्य में अनन्त जीवन दूंगा। नए नियम में, प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़कर हमें पता चलता है, कि नमक के जैसे विशेष गुणों से परिपूर्ण, यीशु के वे चेले, यीशु के सुसमाचार को लेकर संसार के प्रत्येक भाग में गए, और वास्तव में उन्होंने हज़ारों आत्माओं को पाप-रुपी गन्दगी से सड़ने से बचाया। उनके पास लोगों को बचाने के लिये सामर्थ थी, और उन्होंने उस सामर्थ का उपयोग किया। वही सामर्थ प्रभु यीशु के चेलों के पास आज भी है, अर्थात् प्रभु यीशु का सुसमाचार।

रोमियों १ : १६ में प्रेरित पौलुस कहता है, "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये..... उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।" यदि आप ने प्रभु यीशु के सुसमाचार को माना है तो आप प्रभु यीशु के एक चेले हैं, आप इस पृथ्वी के नमक हैं, आपके पास प्रभु यीशु के सुसमाचार की वह सामर्थ है जिसके द्वारा आप अनेकों अन्य आत्माओं को नरक में सड़ने से बचा

सकते हैं। क्या आप यीशु के सुसमाचार से लजाते हैं ? पौलुस कहता है, कि मैं यीशु के सुसमाचार से नहीं लजाता।

नमक के विशेष गुणों के ऊपर विचार करते हुए हमें एक और बात दिखाई देती है, कि यदि नमक को किसी घाव या चोट के ऊपर छिड़का जाए तो इस से बड़ी जलन व बेचैनी अनुभव होती है। और ठीक यही विशेषता यीशु के चेलों में भी थी। जहां कहीं पर भी वे जाते थे उनके प्रचार को सुनकर लोगों के बीच एक कोतुहल सा मच जाता था, अनेकों लोग उनकी उपस्थिति के कारण बेचैन व परेशान हो उठते थे।

प्रेरितों १७ अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि पौलुस और सीलास जब थिस्सलुनीके में आए तो "पौलुस अपनी रीति के अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उनके साथ विवाद किया। और उनका अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था; और यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं, मसीह है। उन में से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतेरों ने और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए। परन्तु यहुदियों ने डाह से भरकर बाजारु लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। और उन्हें न पाकर, वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कितने और भाईयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए, कि यह लोग जिन्होंने जगत को उल्टा पुल्टा कर दिया है, यहां भी आए हैं।"

यहां से हम देखते हैं कि यीशु के प्रथम चेले नमक की तरह इतने प्रभाव-पूर्ण थे कि जब उन्होंने यीशु का प्रचार किया तो न केवल अनेकों लोगों ने उन बातों को स्वीकार किया, परन्तु बहुतेरे अन्य लोग उनके

प्रचार को सुनकर उनके प्रति डाह और क्रोध से भर उठे, उनकी बातों ने उनके हृदय में एक जलन व बेचैनी उत्पन्न कर दी, और यहां तक कि वे चिल्ला उठे, कि ये वे लोग हैं जिन्हों ने जगत को उल्टा-पुल्टा कर दिया है। जी हां, उन्होंने वास्तव में जगत को उल्टा पुल्टा कर दिया था, क्योंकि जहां कहीं भी वे गए उन्होंने यीशु की कथा का प्रचार किया। उनका प्रचार वास्तव में नमक की तरह प्रभाव-पूर्ण था, क्योंकि वे मनुष्यों की सी चिकनी चुपड़ी बातें नहीं करते थे, परन्तु निडर होकर यीशु के सुसमाचार का प्रचार करते थे। जहां कहीं भी उन्हों ने प्रचार किया, सदा कोई न कोई परिणाम अवश्य निकला। या तो लोग उनके प्रचार को सुनकर उन यहुदियों की तरह क्रोध से पागल हो उठे जिन्होंने स्तिफ़नुस के प्रचार को सुनकर बड़े शब्द से चिल्लाकर अपने कान बन्द कर लिये, और एकत्रित होकर उस पर झपट पड़े, और उस पर पत्थरवाह करके उसे मार डाला। या फिर उनके प्रचार को सुनकर लोग उस धनवान मनुष्य की तरह उदास व शोकित हुए जो अनन्त जीवन तो प्राप्त करना चाहता था परन्तु जब प्रभु ने उस से कहा, कि अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बांट दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले, तो वह सुनकर बड़ा उदास हुआ, और शोक करता हुआ वापस चला गया। परन्तु अनेकों अन्य लोगों ने जब उनके प्रचार को सुना, तो उनके हृदय उन लोगों की तरह छिद गए जिनके बारे में हम प्रेरितों २ अध्याय में पढ़ते हैं, और तब उन्हों ने पूछा कि हमें बताओ कि अपने पापों से उद्धार पाने के लिये हम क्या करें? और जब उन्हें आदेश दिया गया कि "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले..." तो उन्होंने उन तीन हज़ार लोगों की तरह प्रसन्नतापूर्ण उनका वचन ग्रहण किया और बपतिस्मा लिया।

वास्तव में, यीशु के चेले इस पृथ्वी के नमक ठहरे। नमक की

तरह उनके व्यवहार में एक विशेष स्वाद था, उनका व्यवहार ऐसा था कि वे नमक की तरह शीघ्र ही लोगों के सुख व दुख में घुल-मिल जाते थे, उनके भीतर लोगों के मनों में परमेश्वर के वचन के प्रति नमक का सा प्यास उत्पन्न करनेवाला गुण था, नमक की तरह उन्होंने बहुतेरी आत्माओं को नाश होने से बचाया, उनके भीतर नमक का सा जलन व बेचैनी उत्पन्न करनेवाला गुण था, लोग उनके उपदेशों को सुनकर बेचैन हो उठते थे।

परन्तु प्रभु यीशु ने उन से केवल यही नहीं कहा, कि तुम पृथ्वी के नमक हो, उस ने यह भी कहा कि "तुम जगत की ज्योति हो" जिस प्रकार से यह सत्य है कि उसके चेलों के भीतर नमक के से विशेष गुण होना आवश्यक है वैसे ही यह भी सच है, कि उसके अनुयायी अपने भीतर ज्योति के से गुण रखें।

ज्योति के विषय में हम देखते हैं, कि उसका सबसे बड़ा गुण यह है कि उस से प्रकाश होता है। नमक की तरह ज्योति भी संसार में प्रत्येक मनुष्य के लिये एक बड़ी ही आवश्यक वस्तु है। ज्योति के बिना मनुष्य कितना अभागा होता, वह अंधकार में होता।

जब कभी भी हम अन्धेरे में से प्रकाश में आते हैं, तो हमें प्रत्येक वस्तु ज्योति के प्रकाश में स्पष्ट दिखाई देने लगती है। जब प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा, कि तुम जगत कि ज्योति हो तो इस से उसका अर्थ था कि उसके चेले जगत में सब लोगों के पास जाकर उन पर इस सच्चाई को प्रगट व प्रकाशित करेंगे कि वे अपने पापों में नाश हो रहे हैं; वे उन्हें सत्य के प्रकाश में उनके पापों को दिखाएंगे। और न केवल उनके पापों से ही उन्हें अवगत कराएंगें, परन्तु ज्योति का वह मार्ग भी दिखाएंगे जिस पर चलकर वे अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करेंगे व फिर कभी अन्धेरे में न रहेंगे।

प्रभु यीशु ने कहा, "मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो

कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे।" क्या आप अपना जीवन अन्धकार में बिता रहे हैं ? क्या आपका जीवन अशुद्ध तथा पाप पूर्ण है ? क्या आप अपने पापों से छुटकारा पाना चाहते हैं ताकि आप पाप के अन्धकार में से निकलकर ज्योति में चलें ? तो प्रभु यीशु के पास आईए, उस पर विश्वास कीजिए, उसकी आज्ञाओं को मानिए। वह आपको पाप के अन्धकार में से निकालकर जीवन की ज्योति देगा। फिर आप कभी अन्धकार में नहीं रहेंगे। आप भी यीशु के एक चेले बन जाएंगे। आप पृथ्वी के नमक तथा जगत की ज्योति बन जाएंगे। फिर आप पाप के अन्धकार में नहीं रहेंगे परन्तु यीशु की ज्योति में चलेंगे।

और फिर, यदि जीवन भर आप यीशु के साथ-साथ चलते रहेंगे तो आप उस नगर के समान ठहरेंगे जो पहाड़ पर बसा हुआ है और छिप नहीं सकता, आपका जीवन एक उत्तम तथा ऊंचा जीवन होगा। आपका जीवन ऐसी विशेषताओं तथा कार्यों से परिपूर्ण होगा जिनको देखकर अन्य लोग हमारे परमेश्वर पिता की बड़ाई करेंगे।

मित्रो, आज संसार में सबसे बड़ी बात यही है कि आप एक मसीही हो सकते हैं, आप यीशु की ज्योति में आकर ज्योति के कार्य कर सकते हैं, और अनेकों अन्य आत्माओं को ज्योति का मार्ग दिखा सकते हैं। यीशु के इस निमन्त्रण को स्वीकार करने से आपको क्या वस्तु रोकती है ? उस ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।"

आप यीशु के साथ क्या करेंगे

मित्रो :

आईए, अपने आज के पाठ का आरम्भ हम लूका १९ अध्याय में पाईजानेवाली उस घटना से करें जिस में हम ज़क्कई नाम के एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं। इस से पहले हम १८ अध्याय में पढ़ते हैं, कि यीशु ने अपने चेलों को साथ लेकर यरूशलेम को जाने की योजना बनाई। और जब वह जा रहा था, तो मार्ग में उसने एक अन्धे को चंगा किया, इसके फलस्वरूप अनेकों लोग उसकी ओर आकृषित हुए, और फिर हम पढ़ते हैं कि "वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था। और देखो, ज़क्कई नाम एक मनुष्य था जो चुंगी लेनेवालों का सरदार और धनी था। वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है ? परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था ! क्योंकि वह नाटा था। तब उसको देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जानेवाला था। जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर दृष्टि करके उस से कहा ; हे ज़क्कई झट उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। वह तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया। यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है। ज़क्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा ; हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं। तब यीशु ने उस से कहा ; आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।"

हम देखते हैं, कि ज़क्कई चुंगी लेनेवालों का एक सरदार था।

उन दिनों में रोमी साम्राज्य में चुंगी लेनेवाले लोगों को अन्य लोग बड़ी ही घृणाजनक दृष्टि से देखते थे, क्योंकि चुंगीलेनेवाले लोग अकसर कई प्रकार की अनुचित रीतियों से लोगों से आवश्यकता से भी अधिक कर वसुल किया करते थे। यही कारण है कि जब यीशु उसके घर में गया तो लोगों ने यह कहकर उसकी निन्दा की कि वह तो एक पापी मनुष्य के घर में गया है।

ज़क्कई एक धनी व्यक्ति था। परन्तु क्या वह अपने अपार धन के बलबूते पर उद्धार प्राप्त कर सकता था? नि:संदेह, वह अपनी तथा संसार की दृष्टि में एक धनी मनुष्य था, उसके पास संसार की प्रत्येक वस्तु थी। परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण से वह निर्धन था, वह इस संसार में अन्य लोगों कि तरह खोया हुआ था। उसे उद्धार की आवश्यकता थी। और यीशु इस बात को जानता था। इसलिये जब उसने देखा कि ज़क्कई के मन में उस से मिलने की बड़ी इच्छा है तो प्रभु ने स्वयं ही उसके घर में जाने की इच्छा व्यक्त की। वह जानता था कि ज़क्कई उसे स्वीकार करना चाहता है, वह जानता था कि ज़क्कई उस में विश्वास करता है। सो उसने उस से कहा, "आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।"

ज़क्कई ने प्रभु यीशु के बारे में बहुत कुछ सुना था। उसने उसकी अनेकों महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं के विषय में सुना था। उसने उसके बहुतेरे आश्चर्यजनक कामों के बारे में सुना था। वह यीशु से मिलने के लिये बड़ा उत्सुक था। लिखा है, कि वह यीशु को देखना चाहता था। सो वह यीशु से मिलने के लिये मार्ग में एक स्थान पर खड़ा हो गया। परन्तु कुछ ही देर में उसने देखा कि एक बहुत बड़ी भीड़ यीशु को घेरे हुए चली आ रही है। अब वह क्या करे? क्या वह निराश होकर अपने घर वापस चला जाए? क्या वह अपने मन में कहे कि फिर कभी उचित अवसर पाकर यीशु से मिलूंगा?

मित्रो, ज़क्कई एक ठोस निश्चय के साथ आया था। उसने अपने

मन में पूर्ण निश्चय कर लिया था कि आज वह यीशु को देखकर ही घर लौटेगा। सो हम देखते हैं, कि तब उसको देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ के ऊपर चढ़ गया। वह नाटा था परन्तु यह जानकर वह निरुत्साह नहीं हुआ। उसने देखा कि एक बहुत बड़ी भीड़ यीशु को घेरे हुए है परन्तु इस से उसका मन छोटा नहीं हुआ। कोई वस्तु, जी हां, कोई वस्तु आज उसे यीशु से मिलने को रोक नहीं सकती थी। उसने अपने मन में पूर्ण निश्चय कर लिया था कि आज उसे यीशु को देखना अवश्य है।

आज संसार में अनेकों ऐसे लोग हैं जिन्हों ने ज़क्कई की तरह प्रभु यीशु के बारे में बहुत कुछ सुना है, वे उसकी महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं को जानते तथा सराहते हैं, उन्हों ने प्रभु यीशु के सामर्थ-पूर्ण व आश्चर्य-जनक कार्यों के बारे में सुना है। उन्हों ने अनेकों बार सुना है, कि प्रभु यीशु मसीह उनको पाप के दन्ड से बचाने के लिये स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया। वे जानते हैं कि यीशु उनके कारण क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया। वे जानते हैं कि यीशु उनका उद्धार कर सकता है, परन्तु उनका व्यवहार उन शासकों की तरह है जिनके विषय में यूहन्ना १२:४२,४३ में लिखा है कि "तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फ़रीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं। क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी।"

बहुतेरे लोग प्रभु से अधिक अपने आप से प्रेम करते हैं। वे डरते हैं कि प्रभु यीशु के पीछे हो लेने से उनके मित्र या सम्बन्धी उनसे अप्रसन्न न हो जाएं। वे डरते हैं कि प्रगट में प्रभु यीशु को अपना उद्धार कर्त्ता मान लेने से अन्य लोग उनका उपहास न उड़ाएं। वे लोग आगे आकर सबके सामने प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता मान लेने से शर्माते हैं। परन्तु ज़क्कई के बारे में हम पढ़ते हैं, कि वह आगे दौड़कर

गया और पेड़ के ऊपर चढ़ गया क्योंकि वह यीशु को देखना चाहता था !

उसका कद छोटा था, वह नाटा था, परन्तु उसकी यह कमी उसे यीशु को देखने से रोक न पाई। अनेकों लोग अपने आपको आत्मिक दृष्टिकोण से नाटा या छोटा अनुभव करते हैं। वे सोचते हैं कि मैं तो बहुत पापी हूं, मैंने बहुत पाप किये हैं, मैं प्रतिदिन पाप करता हूं, मैं इस योग्य नहीं हूं कि मेरा उद्धार हो। परन्तु वे भूल जाते हैं कि प्रभु यीशु ने कहा, कि मैं खोए हुओं को ढूंढ़ने और बचाने के लिये आया हूं। एक अन्य स्थान पर उसने कहा, भले-चंगे लोगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती परन्तु बीमारों को वैद्य की आवश्यकता होती है।

यहेजकेल १८:२१-२३ में हम पढ़ते हैं, प्रभु कहता है, "परन्तु यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर, मेरी सब विधियों का पालन करे और न्याय और धर्म के काम करे, तो वह न मरेगा ; वरन जीवित रहेगा, उसने जितने अपराध किए हों, उन में से किसी का स्मरण उसके विरुद्ध न किया जाएगा ; जो धर्म का काम उसने किया हो, उसके कारण वह जीवित रहेगा। प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूं ? क्या मैं इससे प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे ?" और यशायाह १:१८, १९ में हम यूं पढ़ते हैं, "यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वाद-विवाद करें : तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे ; और चाहे अर्गवानी रंग के हों तौभी वे ऊन के समान सफ़ेद हो जाएंगे, यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो।"

क्या प्रभु से कोई भी कार्य असम्भव है ? वह जानता है कि मनुष्य स्वयं अपना उद्धार नहीं कर सकता। वह जानता है कि सब मनुष्य

पापी हैं, और अन्धकार में चल रहे हैं। इसलिये, वह मनुष्य को बचाने के लिये स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया। वह इसलिये आया ताकि अन्धकार में खोए हुओं को ढूंढ़े और बचाए। यदि आप अपने आपको धर्मी समझते हैं तो इस बात को भूल जाईए कि यीशु आपके लिये इस पृथ्वी पर आया। वास्तव में वह इस पृथ्वी पर मेरे जैसे पापी का उद्धार करने के लिये आया। वह इस पृथ्वी पर पतरस जैसे लोगों का उद्धार करने के लिये आया, जिसने प्रभु की पवित्र छाया में खड़े होकर बिनती करके कहा, "हे प्रभु मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी हूं।" वह पौलुस जैसे लोगों के लिये इस संसार में आया, जिसने सबके सामने अंगीकार करके कहा, "यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिनमें सबसे बड़ा मैं हूं।" (१ तीमुथियुस १ : १५)। मत्ती २१ : ३१,३२ में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने उन दिनों के धार्मिक अगुओं के विषय में बोलते हुए कहा कि "मैं तुम से सच कहता हूं, कि महसूल लेनेवाले और वेश्या तुम से पहले स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करते हैं।" वे धार्मिक अगुए जो प्रभु के दिनों में रहते थे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने नहीं जा रहे थे। क्यों? क्योंकि प्रभु ने उन्हें बताया कि यूहन्ना तुम्हारे बीच में धर्म के मार्ग का प्रचार करता आया परन्तु तुमने उसकी प्रतीति न की जबकि चुंगीलेनेवालो और व्यभिचारियों ने उसकी प्रतीति करके अपना मन फिराया, इसलिये वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाएंगे।

ज़क्कई न केवल नाटा ही था, परन्तु उसके सामने एक और कठिनाई थी, अर्थात् लोगों की वह भीड़ जो यीशु को घेरे हुई थी। परन्तु उसका निश्चय अटल था। उसने निश्चय किया था कि वह आज यीशु को अवश्य ही देखेगा, और उसका निश्चय हमें इस बात में दिखाई देता है कि इससे पहले कि यीशु वहां से होकर निकले वह दौड़कर गूलर के पेड़ पर चढ़ गया। उसने उस भीड़ को देखकर अपना साहस नहीं छोड़ दिया।

आज अनेकों लोग प्रभु यीशु के पास आने का विचार करते हैं, परन्तु उनका निश्चय ज़क्कई की तरह ठोस नहीं है, उनका निश्चय अधूरा है। कदाचित् वे अपने मन में सोचें कि क्यों नहीं प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता मानकर अपना जीवन वे उसे दे दें ? परन्तु फिर, उन्हें ध्यान आता है, कि क्या उनके माता-पिता उनके इस निश्चय को पसन्द करेंगे, यदि वे एक मसीही बन जाएंगे तो क्या उनके माता-पिता इत्यादि उन्हें अपने घर में स्वीकार करेंगे ? उनका समाज अथवा सम्बन्धी क्या कहेंगे ? क्या वे अपने समाज व मित्रों द्वारा स्वीकार किए जाएंगे ? और शीघ्र ही उनके निश्चय की माला के मोती टूटकर बिखर जाते हैं। उनका साहस टूट जाता है। वे इन सब कठिनाईयों का सामना करने के लिये तैयार नहीं हैं। उनका मन ऐसी भूमी के समान है जहां झाड़ियां लगी हों और उस में बीज बोया जाए, परन्तु उगते के साथ ही उस छोटे से पौधे को वे झाड़ियां मिलकर दबा लें। उनका निश्चय अधूरा है, उनमें साहस नहीं है। और वास्तव में इस प्रकार के लोग यीशु के पास कभी नहीं आ सकते। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, "जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं, और जो बेटी या बेटा को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं। और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।" (मत्ती १० : ३७, ३८)।

वास्तव में कोई भी मनुष्य प्रभु यीशु के पीछे खाली हाथ कभी नहीं चल सकता। वे सब जो यीशु मसीह के पीछे चलने का निश्चय करते हैं, उन्हें अपना क्रूस उठाकर उसके पीछे चलना पड़ता है। और इसका अर्थ है कि उन्हें यीशु की तरह दुखों व कठिनाईयों का सामना करने के लिये तैयार रहना पड़ता है। जिस प्रकार से यीशु क्रूस पर बलिदान होने के लिये स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया, यीशु के पीछे चलने के लिये उन्हें संसार को छोड़ना पड़ता है। जब एक मनुष्य को एक बार प्रभु यीशु ने अपने पीछे हो लेने का निमन्त्रण देकर बुलाया

तो लूका ९ : ५९ में लिखा है कि उसने प्रभु से कहा, "हे प्रभु मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं।" यीशु ने उसको उत्तर देकर कहा कि "मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।" प्रभु चाहता है कि हम अपने जीवनों में सबसे पहिला और उत्तम स्थान केवल उसी को दें। यदि हम प्रभु यीशु का अनुसरण करना चाहते हैं तो हमें उसके पीछे अपना क्रूस लेकर चलना पड़ेगा। परन्तु उसने हमें किसी ऐसे कार्य को करने की आज्ञा नहीं दी है जो असम्भव हो, क्योंकि हम देखते हैं कि वह स्वयं सबसे पहले हमारे आगे-आगे अपना क्रूस लेकर चला।

सो जब प्रभु यीशु ने ज़क्कई के हृदय में एक दृढ़ निश्चय को देखा, तो उसने ज़क्कई से कहा, कि हे ज़क्कई झट पेड़ पर से नीचे उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। जब मनुष्य के हृदय में किसी कार्य को करने का दृढ़ निश्चय होता है तो उसे अवश्य ही सफ़लता प्राप्त होती है। हमारे देश के बड़े-बड़े नेताओं ने अपने दृढ़ निश्चय के बल पर ही स्वाधीनता प्राप्त की थी। जब कोलम्बस ने धैर्य तथा निश्चय के साथ अपनी यात्रा को आरम्भ किया तो उसे सफ़लता मिली। प्रभु यीशु के पीछे चलने के लिये एक दृढ़ निश्चय की आवश्यक्ता होती है। उसने कहा, जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं हो सकता। परन्तु उसने प्रतिज्ञा करके कहा है, कि जो कोई मृत्यु तक मेरे प्रति विश्वासी बना रहेगा उसे मैं जीवन का मुकुट दूंगा। (प्रकाशितवाक्य २ : १०) और वास्तव में इस से अधिक मनुष्य को और क्या चाहिए? मत्ती १६ : २४-२६ में उसने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?" कदाचित्

आपके पास धन या सम्पत्ति हो, या हो सकता है कि आपके पास संसार की कोई और ऐसी वस्तु हो जिस पर आप बड़ा घमन्ड व भरोसा करते हों। परन्तु क्या आप अपनी आत्मा को बचाने के लिये उसे दे सकते हैं?

मित्रो, संसार की कोई भी वस्तु आपकी आत्मा को बचाने की सामर्थ नहीं रखती। यदि आपके पास यीशु नहीं है तो आप कंगाल और दरिद्र हैं, आपके पास वास्तव में कुछ भी नहीं है। परन्तु जब ज़क्कई ने प्रभु यीशु को पा लिया तो उसने कहा, कि हे प्रभु देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं। यहां हम दो विशेष बातें देखते हैं, पहिली तो यह कि ज़क्कई ने अपने धन का सदुपयोग करने का निर्णय किया, उसने अपने धन को कंगालों में बांट देने का निश्चय किया, क्योंकि अब उसे यीशु मसीह में सबसे बड़ी सम्पति प्राप्त हो गई थी। दूसरी ओर, हम देखते हैं कि उसने पश्चात्ताप किया, उसने कहा कि मैंने यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे अब चौगुना फेर देता हूं। उसने अपने जीवन को बदलने का निश्चय किया। सो जब यीशु ने देखा कि ज़क्कई अपने पापों से पश्चात्ताप कर रहा है, तो उसने कहा, "आज इस घर में उद्धार आया है।"

ज़क्कई बड़ा प्रसन्न था। लिखा है, कि जब यीशु ने उस से कहा, कि मुझे आज तेरे घर में रहना अवश्य है तो वह तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया। वह प्रसन्न था क्योंकि उसे यीशु मिल गया था। परन्तु आप भी प्रभु यीशु को प्राप्त कर सकते हैं। यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ

हल्का है।" (मत्ती ११ : २८-३०) ज़क्कई के विषय में लिखा है कि वह आगे दौड़कर प्रभु से मिलने को गया। क्या आप प्रभु यीशु के इस निमन्त्रण को स्वीकार करने के लिये दोड़कर आगे आएंगे ? प्रकाशितवाक्य ३ : २० में उसने कहा, "देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके साथ भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।" ज़क्कई प्रभु यीशु को आनन्द के साथ अपने घर में ले गया। क्या आप यीशु को आज आनन्द व प्रसन्नता के साथ अपने मन में स्वीकार करेंगे ? सुनिए, वह कहता है, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं। क्या आप सुन रहे हैं ?

जी हां, आज से लगभग दो हज़ार पर्ष पूर्व जब यीशु यरीहो से होकर जा रहा था तो ज़क्कई आगे दौड़कर उस से मिलने के लिये आया। परन्तु आज वही यीशु आपके सामने से जा रहा है, क्या आप भी दौड़कर उस से मिलने के लिये आगे आएंगे ? क्या आप उसे अपने घर में स्वीकार करेंगे ? क्या आप ज़क्कई की तरह अपने पापों से पश्चात्ताप करेंगे ? प्रभु यीशु आपको अनन्त जीवन देना चाहता है, वह आपका उद्धार करना चाहता है, उसने कहा, "जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६) क्या आप उसे स्वीकार करेंगे ? उस पर विश्वास कीजिए, उसकी आज्ञाओं को मानिए। उसने कहा, यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे (यूहन्ना १४ : १५) क्या आप उसकी नहीं मानेंगे जिसने आपको बचाने के लिये अपने आप को दे दिया ?

केवल एक बार

मित्रो :

अब जबकि आज फिर से परमेश्वर के पवित्र शास्त्र का अध्ययन करने के लिये हम अपने आपको तैयार करते हैं, मैं आप से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं : क्या आपने परमेश्वर को इस बात के लिये धन्यवाद दिया है कि उसने फिर से आप को यह सुअवसर प्रदान किया है ? वास्तव में हम कितनी ही बार परमेश्वर की नाना प्रकार की आशीषों के लिये उसे धन्यवाद देना भूल जाते हैं। यदि हम किसी मनुष्य के साथ कोई अच्छा व्यवहार करते हैं, या उसकी कोई सहायता करते या उसे कुछ देते हैं तो उस से हम यह आशा करते हैं कि वह हमारे प्रति धन्यवादी हो। प्राय: जब हमें कोई धन्यवाद नहीं देता तो हम अक्सर कहते हैं कि अब भविष्य में मैं उसकी कोई सहायता नहीं करूंगा या मैं अब उसे कोई वस्तु नहीं दूंगा। परन्तु कितनी ही बार हम स्वयं प्रभु की अनेकों आशीषों के लिये अपने धन्यवाद प्रकट नहीं करते।

क्या आपने कभी इस बात पर गम्भीरता से विचार किया है, कि आज जिस संदेश को आप सुन रहे हैं, हो सकता है यह समाचार आपके जीवन का अन्तिम संदेश हो ? आज प्रगति तथा मोटरों व मशीनों के इस युग में दुर्घटनाएं इतनी शीघ्र और भयंकर रूप से होती हैं जिनका अनुमान लगाना कठिन हो जाता है। और न केवल दुर्घटनाएं ही परन्तु नानाप्रकार के घातक रोग तथा बीमारियां भी मनुष्य को प्रतिदिन चारों ओर से घेरे रहते हैं। वास्तव में वह व्यक्ति बिल्कुल मूर्ख है, जो अपने मन में विचार करके कहता है, कि अभी उसे और भी बहुतेरे अवसर परमेश्वर के वचन को सुनने को मिलेंगे। अनेकों लोगों

को अक्सर यह कहते सुना गया है कि "मुझे पूर्ण विश्वास है, अभी तो मैं कई वर्ष और जीवित रहूंगा।" परन्तु मनुष्य की इस बड़ी भारी भूल को ध्यान में रखकर, बाइबल में, याकूब ४ : १३,१४ में याकूब कहता है : "तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्योपार करके लाभ उठाएंगे। और यह नहीं जानते की कल क्या होगा : सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या ? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है।"

मैं अक्सर उन लोगों के विषय में सोचता हूं जो मेरे प्रवचनों को सुननेवाले लोगों के झुंड में होंगे, जिनके लिये यह संदेश कदाचित् एक अन्तिम संदेश होगा। यदि आज मैं एक मसीही नहीं होता। यदि आज मैं उस व्यक्ति के स्थान पर होता, तो मुझे आज कैसा संदेश सुनने की इच्छा होती ? मैं, निःसंदेह, यह कदापि नहीं चाहता कि कोई मुझे बड़े-बड़े ऊंचे शब्दों से प्रभावित करे, परन्तु मेरी इच्छा होती कि कोई व्यक्ति मुझे पूर्णरूप से, सरल ढंग से, संक्षिप्त में बाइबल की मसीहीयत के विषय में बताए, वह मुझे परमेश्वर तथा परमेश्वर के प्रति मेरी ज़िम्मेदारी के बारे में बताए। बाइबल में हम एक ऐसे ही व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं जिसे प्रभु का संदेश सुनने का केवल एक ही अवसर प्राप्त हुआ। हम यह भी पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने उसे उस दिन क्या संदेश दिया।

कूश देश का रहनेवाला वह व्यक्ति अपने देश से लगभग एक हज़ार मील की यात्रा करके यरूशलेम आया था ताकि यहोवा की उपासना करे। इस कार्य को समाप्त करने के बाद, जब वह अपने रथ पर सवार होकर, अफ्रीका में अपने देश की ओर वापस चला जा रहा था, कि परमेश्वर ने उसके पास एक प्रचारक को भेजा, ताकि वह उसे मुक्ति का संदेश सुनाए। और जब वे उस रथ में बैठे हुए उस मार्ग

पर चल रहे थे जो अज्जाह से यरूशलेम को जाता है, तो मार्ग में उस प्रचारक ने कूश देश के उस व्यक्ति को यह महत्त्वपूर्ण संदेश दिया, आईये, प्रेरितों ८ अध्याय के २६ पद से आरम्भ करके इस विषय में देखें, लिखा है :

"फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा ; उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से अज्जाह को जाता है, और जंगल में है। वह उठकर चल दिया, और देखो, कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था, जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मन्त्री और खजांची था, और भजन करने को यरूशलेम आया था। और वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था। तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले। फिलिप्पुस ने उस ओर दौड़कर उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा, कि तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है ? उस ने कहा, जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूं ? और उस ने फिलिप्पुस से बिनती की, कि चढ़कर मेरे पास बैठ। पवित्र शास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था ; कि वह भेड़ की नाईं बध होने को पहुंचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। उसकी दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठाया जाता है। इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा ; मैं तुझ से बिनती करता हूं, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किस के विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में। **तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।**"

यहां हम देखते हैं, कि दो व्यक्ति एक ही रथ में बैठकर साथ-साथ जा रहे थे। उन में से एक मसीही था परन्तु दूसरा एक मसीही नहीं

था। प्रभु के प्रचारक ने उसे यीशु का संदेश दिया। हम कल्पना करके देख सकते हैं, कि उसने उसे यशायाह की पुस्तक के ५३ अध्याय में से भविष्यद्वक्ता यशायाह की उन विभिन्न भविष्यद्वाणियों के बारे में बताया होगा जिनका वर्णन यशायाह ने यीशु मसीह में उन भविष्यद्वाणियों के पूर्ण होने से सैकड़ों वर्ष पूर्व किया था। हो सकता है, उसने योएल, यिर्मयाह, यहेजकेल तथा दानिय्येल व पुराने नियम के अन्य भविष्यद्वक्ताओं का भी वर्णन किया हो। और फिर, पुराने नियम में से उदाहरण दे देकर समझाने के बाद फिलिप्पुस ने उसे बताया होगा कि "जब समय पूरा हुआ" तो यीशु ने मनुष्य का रूप धारण किया, और वह मनुष्यों के बीच में रहा। कदाचित् उस ने यूहन्ना ३ : १६ के इन प्रमुख शब्दों का उल्लेख करके कहा हो, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" इसीके साथ उसने यूहन्ना १ : १४ का भी वर्णन करके कहा होगा, कि "वचन देहधारी हुआ ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।"

फिर, फिलिप्पुस ने बताया होगा कि किस अद्भुत तथा आश्चर्यजनक रीति से प्रभु यीशु का जन्म हुआ। उसने उसे बताया होगा कि जब उसकी आयु लगभग बारह वर्ष की थी तो उसने यरूशलेम में जाकर बड़े-बड़े उपदेशकों को अपनी बातों से आश्चर्य-चकित कर दिया। अवश्य ही उसने उसे बताया होगा कि "यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।" (लूका २:५२)। हो सकता है, उसने प्रभु यीशु के आरम्भ के दिनों से सम्बन्धित अनेकों अन्य बातों को भी उसे बताया होगा जिनके विषय में कदाचित् हम नहीं जानते। कुछ भी हो, हम यह कह सकते हैं, कि फिलिप्पुस ने प्रभु यीशु के जीवन से सम्बन्धित अनेकों बातें, कूश देश के उस व्यक्ति को बताई होंगी, जिनको

सुनकर वह बड़ा प्रभावित हुआ ।

और फिर, प्रचारक ने उसे यीशु के कार्यों के बारे में बताना आरम्भ किया होगा । हो सकता है कि उसने उसे उसी प्रकार से बताना आरम्भ किया हो, जैसे कि बाद में मत्ती हमें अपनी पुस्तक के तीसरे अध्याय में बताता है कि "उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया । परन्तु यूहन्ना यह कह-कर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है ? यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उसने उसकी बात मान ली । और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो उसके लिये आकाश खुल गया; और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा । और देखो, यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं ।"

और यीशु के बपतिस्मा लेने के तुरन्त बाद हम पढ़ते हैं : "तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इबलीस (अर्थात् शैतान) से उसकी परीक्षा हो । वह चालिस दिन और चालिस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी । तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं । उसने उत्तर दिया ; कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा ।" शरीर के लिये भोजन प्रदान करने की परीक्षा के बाद, जब शैतान ने देखा कि वह असफ़ल रहा, तो वह एक दूसरी परीक्षा के साथ आया, वह उसे मन्दिर के कंगूरे पर ले गया, "और उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे ; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा ; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे ; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पत्थर की

ठेस लगे।" परन्तु "यीशु ने उस से कहा ; यह भी लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।" और फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे स्थान पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उनका विभव दिखाकर, उस से कहा, "कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं ये सब कुछ तुझे दे दूंगा।" तब यीशु ने उस से कहा, "हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।" (मत्ती ४: १-१०)।

बपतिस्मा लेने, तथा परीक्षा में पड़ने के बाद, यीशु ने अपना कार्य आरम्भ किया। यहां हो सकता है कि फिलिप्पुस ने उसे बताया हो कि किस प्रकार से यीशु ने अपने बारह चेलों को चुना, उसने कदाचित् उनका नाम ले लेकर उनके विषय में भी कुछ-कुछ बताया हो। और जैसे-जैसे रथ के पहिएं घूमते गए फिलिप्पुस उसे यीशु के बारे में और आगे बताता रहा।

उसने उसे यीशु के अनेकों आश्चर्यकर्मों के विषय में बताया होगा। फिलिप्पुस ने बताया होगा, कि कैसे अन्धों को आंखें मिली, लंगड़े चलने लगे, गूंगे बोलने लगे, और किस प्रकार से यीशु ने अनेकों कोढ़ियों को चंगा किया। निःसंदेह, उस ने यह भी अवश्य ही बताया होगा कि यीशु ने समुद्र में उठते हुए बड़े तूफ़ान को डांटकर थाम दिया, और किस प्रकार से वह गलील के पानी के ऊपर चला। उसने उसे बताया होगा, कि कैसे केवल मुट्ठी भर भोजन से यीशु ने हज़ारों लोगों को कम-से-कम दो बार भोजन खिलाकर तृप्त किया। और फिर, यीशु के आश्चर्य-जनक कार्यों का वर्णन करते हुए, उसने आगे बताया होगा, कि किस प्रकार से यीशु ने एक विधवा के मरे हुए पुत्र को फिर से जीवित कर दिया, कैसे उस ने याईर की बेटी को जिला दिया, और चार दिन के मरे हुए लाज़र को फिर से जीवन लौटा दिया। यह विश्वास करना उचित है, कि यीशु के इन आश्चर्यपूर्ण कामों का

वर्णन करने के बाद उसने कदाचित् यूं कहा हो, जिस तरह से कि प्रेरित यूहन्ना, यूहन्ना २० : ३०-३१ में, कहता है, "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है : और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

अब, फिलिप्पुस ने उसका ध्यान यीशु की शिक्षाओं की ओर दिलाया होगा। कदाचित् उसने उस घटना का वर्णन किया होगा जो सामरिया में एक कूएं के निकट घटी, जहां यीशु ने एक स्त्री को जीवन के जल तथा सच्ची उपासना के विषय में शिक्षा दी। अनेकों अन्य शिक्षाओं के साथ-साथ फिलिप्पुस ने प्रभु यीशु के उन उपदेशों का वर्णन भी अवश्य ही किया होगा, जिनको आज हम "पहाड़ी उपदेश" के नाम से जानते हैं, और जिनका उल्लेख हमें मत्ती ५,६, तथा ७ अध्यायों में मिलता है। इस में भी कोई संदेह नहीं, कि उस ने यीशु के अनेकों उन दृष्टान्तों का भी वर्णन किया होगा, जिनके द्वारा यीशु ने स्वर्ग के राज्य के विषय में लोगों को बहुतेरी बातें सिखाईं। कूश देश का वह व्यक्ति कितने ध्यान से सुन रहा होगा, जब फिलिप्पुस ने उसे "बीज बोनेवाले" का दृष्टान्त सुनाया होगा। कदाचित् वह उसी समय से अपने मन में निश्चय करने लगा होगा, कि वह अपने आपको उस अच्छी भूमि के समान बनाएगा जो सौ गुना फल लाती है। चलते-चलते, फिलिप्पुस ने उसे धर्मी सामरी का दृष्टान्त भी सुनाया होगा। और, निःसंदेह, प्रभु यीशु की अनेकों अन्य शिक्षाओं का वर्णन भी उसने किया होगा।

और फिर, ये सब कुछ बताने के बाद, उसने उसे बताया होगा, कि महायाजक और सदूकी व फ़रीसी लोग किस प्रकार से उसके प्रति डाह व इर्ष्या से भर उठे। उस ने बताया होगा, कि कैसे उन लोगों ने उसे पकड़कर मार डालने की योजना बनाई ताकि उनकी अशुद्धियों की निन्दा

करनेवाला फिर कोई न रहे और वे लोगों के ध्यान को फिर से अपनी ओर आकर्षित कर सकें। इस विषय में कुछ और बताने के बाद, उस ने उस घटना का वर्णन किया होगा जो एक रात गतसमनी नाम के स्थान पर घटी, जहां यहूदा नाम के उसके एक चेले ने उसे उसके शत्रुओं के हाथ पकड़वा दिया। हम कल्पना करके देख सकते हैं, कि फिलिप्पुस ने उन सब बातों का वर्णन किया होगा जो उस रात यीशु के साथ घटीं। कैसे वह, हन्ना, काईफ़ा, पीलातुस और हेरोदेस के पास और फिर पीलातुस के पास ले जाया गया। और फिर अगली सुबह, लगभग नौ बजे, इस बात की घोषणा की गई कि यीशु को मार डाला जाए, और फिर उसी दिन, कुछ ही समय पश्चात् यीशु को क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया। सम्भव है, फिलिप्पुस ने स्वयं यीशु को क्रूस पर मरते हुए देखा हो। कैसे उसने उसे बताया होगा कि जब वे उसे क्रूस के ऊपर कीलों से ठोंक रहे थे तो यीशु उनके लिये प्रार्थना करके कह रहा था कि "हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" (लूका २३ : ३४) फिर, उस सारे देश में तीसरे पहर तक अन्धियारा छाया रहा, मन्दिर का परदा बीच से फट गया, पृथ्वी डोल गई, और फिर उसने इस दृश्य को यीशु के इन शब्दों से समाप्त किया होगा, "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं।" (लूका २३ : ४६) फिर, उसने कदाचित् बताया हो कि कैसे यीशु को एक कब्र में रखा गया और उसके ऊपर एक बड़ा पत्थर रखकर उसे बन्द कर दिया गया।

यहां हम कल्पना कर सकते हैं, कि कुछ देर के लिये वे दोनों कदाचित् चुप-चाप बैठे रहे ; फिर उस व्यक्ति ने फिलिप्पुस की ओर मुड़कर पूछा होगा, "क्या इसके आगे फिर कुछ नहीं हुआ ?" जिसके उत्तर में फिलिप्पुस ने कहा होगा, "हां, हां, अभी तो और भी बहुत कुछ बताने के लिये बाकी है।" और फिर, उस ने उसे बताया होगा, कि तीसरे दिन, जो कि सप्ताह का पहिला दिन था, यीशु मुर्दों में से

जी उठा। इसके बाद चालीस दिन तक वह इस पृथ्वी पर रहा और सैंकड़ों लोगों ने उसे देखा और उस से बातें की। उसने बताया होगा, कि चालीस दिन के बाद वह फिर से स्वर्ग पर उठा लिया गया, परन्तु इस से पूर्व उस ने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा, कि तुम पृथ्वी पर सब लोगों को मेरा सुसमाचार प्रचार करो, उन्हें सब वे बातें मानना सिखाओ जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी हैं। और फिर, उसने उसे यीशु की आज्ञाओं के बारे में बताया होगा, कि यीशु ने आज्ञा देकर कहा कि सबसे पहले हम उस में विश्वास करें (यूहन्ना ३:१६; ८:२४), और हम अपने पापों से मन फिराएं (लूका १३:३), और उसके नाम का अंगीकार करें (मत्ती १०:३२,३३), और अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लें (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८)।

हो सकता है फिलिप्पुस ने अपने संदेश को अन्तिम रूप देते हुए प्रभु यीशु के इन शब्दों को दोहराया हो, जिनका उपयोग यीशु ने स्वयं अपने पहाड़ी उपदेश के अन्त में यूं किया था, "इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर चटान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेव चटान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (मत्ती ७:२४-२७)।

यहां फिलिप्पुस ने कदाचित् अपने संदेश का अन्त किया। वह उसे "यीशु का सुसमाचार" सुना चुका था। कूश देश के उस मनुष्य ने अब यीशु का सुसमाचार सुन लिया था। अब यह उस पर निर्भर करता था कि वह क्या निश्चय करता है। आरम्भ में जिस स्थान से बाइबल में से

हम ने पढ़ा था, उसी के अगले पद से आरम्भ करके लिखा है : "मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है : उस ने उत्तर दिया में विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।" (प्रेरितों ८ : ३६-३९)।

सो, आज हमने देखा कि वह मनुष्य जो पहले एक मसीही नहीं था, जब उसने यीशु के सुसमाचार को सुना और उस पर विश्वास किया, और अपना मन फिराया, और यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार किया, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया, तो इस तरह से वह एक मसीही बन गया। तब प्रभु ने उसे अपनी कलीसिया में मिला लिया। अब वह जानता था कि उसने प्रभु की आज्ञा का पालन किया है, और इसलिये प्रभु ने उसके पापों को क्षमा कर दिया है, इसी कारण, लिखा है कि वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग को चला गया।

यदि आज, आपका उद्धार नहीं हुआ है ; आप एक मसीही नहीं हैं, तो आप भी खोजे की तरह प्रभु में विश्वास करके और उसकी आज्ञाओं को मानकर एक मसीही बन सकते हैं। वही प्रभु यीशु जिस ने उस मनुष्य के पापों को क्षमा किया, आज आपके पापों को भी क्षमा करने के लिये तैयार है। क्या आप उस मनुष्य की तरह निश्चय के साथ यह कहने के लिये तैयार हैं कि "देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है" ?

अन्त में, मैं प्रभु यीशु के उन शब्दों को आपको याद दिलाना चाहता हूं, जिनके बारे में हम प्रकाशितवाक्य ३ : २० में यूं पढ़ते हैं, "देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ ।"

यीशु क्यों आया

मित्रो :

आज हम कुछ ऐसे कारणों के ऊपर विचार करेंगे जिनके द्वारा हम देखेंगे कि यीशु मसीह इस संसार में क्यों आया। प्रभु यीशु का जीवन एक प्रभावपूर्ण जीवन था, उसके प्रभाव को हम प्रतिदिन अनेकों लोगों के जीवनों में देख सकते हैं। संसार के किसी भी स्थान पर जब लोग कागजों या पुस्तकों पर तारीक़ लिखते हैं तो वे प्रभु यीशु मसीह के प्रभाव को प्रगट करते हैं, क्योंकि हम सब अपने समय का हिसाब यीशु के जन्म या उसके जन्मपूर्व से ही लगाते हैं। यह बात बड़ी ही अद्-भुत है कि जब हम यीशु मसीह के जीवन पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि यद्यपि उसने कभी कोई स्कूल नहीं खोला, परन्तु आज संसार में अधिकांश लोग उससे शिक्षा प्राप्त करते हैं, उसके स्कूल में शिक्षा प्राप्त करनेवालों की संख्या संसार में सबसे अधिक है, संसार भर में अनेकों स्कूलों द्वारा उसकी शिक्षाओं को सिखाया जाता है। उसने स्वयं कोई पुस्तक नहीं लिखी, परन्तु आज तक जितनी पुस्तकें उसके बारे में लिखी जा चुकी हैं उनका अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

वह एक महान् शिक्षक था। उसकी शिक्षाओं की तुलना किसी भी अन्य मनुष्य की शिक्षाओं से नहीं की जा सकती। संसार के अनेकों बड़े-बड़े राजनीतिक अगुओं ने सदा ही उसकी शिक्षाओं से बड़ी प्रेरणा प्राप्त की है। और वह केवल एक महान् शिक्षक ही नहीं था, परन्तु उसने अनेकों बड़े-बड़े सामर्थपूर्ण कार्य भी किये। उसने अंधों को आखें दीं, लंगड़े, बहिरे और गूंगे उसके सामर्थपूर्ण स्पर्ष से चंगे हो गए। उसने मुर्दों को भी जिलाया। वह जल के ऊपर चला, उसने समुद्रीतूफ़ान

को डांटकर थाम दिया। बाइबल बताती है, कि उसने अनेकों बड़े-बड़े कार्य किये, जिनका एक पुस्तक में लिखा जाना असम्भव है; परन्तु जिनके विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं उनका वर्णन इसलिये हुआ है ताकि हम उस में विश्वास करें कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

उसने शिक्षा दी, उसने सामर्थपूर्ण कार्य किए, उसने अपने जीवन से हजारों लोगों को प्रभावित किया। परन्तु इन में से कोई भी कारण उसके इस संसार में आने के उद्देश्य को प्रकट नहीं करता। वास्तव में वह संसार में प्रत्येक मनुष्य के लिये आया, उसके आने के कुछ विशेष कारण थे, और उन कारणों में से एक कारण यह था, कि उसके आने से यह बात सदा के लिये सिद्ध हो जाए कि शैतान केवल एक झूठा है। कई बार हमारे सामने ऐसी परीक्षाएं आती हैं जब हम एक अनुचित कार्य को केवल इसलिये करने का निश्चय कर लेते हैं क्योंकि हम उस में अपने लिये किसी सांसारिक लाभ को देखते हैं। उस समय शैतान हमारे कान में धीरे से कहता है, "कि कोई बात नहीं, इस कार्य को करने से कोई अन्तर नहीं पड़ता, इस में कोई विशेष बुराई नहीं, आखिर हम मनुष्य ही तो हैं।" परन्तु हमारा उद्धारकर्त्ता इस संसार में इसलिये आया ताकि वह यह प्रमाणित कर दे कि पाप से बहुत अंतर पड़ता है। पाप ही के कारण परमेश्वर ने अपने पुत्र को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर मरने के लिये भेज दिया। जब शैतान ने मनुष्य को अपना दास बना लिया था, जब पाप ने मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर दिया, जब मनुष्य के पास बचने की कोई आशा नहीं थी, यीशु, परमेश्वर का पुत्र, इस संसार में आया ताकि उसके निष्पाप बलिदान के द्वारा, मनुष्य अपने पापों से फिरकर, परमेश्वर के साथ अपना मेल करले। इस बात को ध्यान में रखकर, हम यह कदापि नहीं कह सकते कि पाप करने से कोई अन्तर नहीं पड़ता, जबकि हम देखते हैं, कि इसी कारण यीशु को स्वर्ग छोड़कर इस पृथ्वी पर आना पड़ा और क्रूस के ऊपर भयानक मृत्यु का सामना करना पड़ा।

उसके इस पृथ्वी पर आने से इस बात की भी पुष्टि हो जाती है कि प्रत्येक मनुष्य के लिये यह आवश्यक नहीं है कि वह अवश्य ही पाप करे। यीशु इस संसार में एक मनुष्य के स्वरूप में होकर रहा, परन्तु उसने कभी भी कोई पाप नहीं किया। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके सामने कभी कोई परीक्षा नहीं आई, क्योंकि बाइबल हमें सफ़ाई से बताती है कि वह हमारी ही तरह सब बातों में परखा गया, उसके सामने अनेकों परिक्षाएँ और लालच आए, परन्तु तौभी वह निष्पाप रहा। अनेकों समय उसके सामने ऐसी परीक्षाएं आईं होंगी जिनके कारण उसे अपने स्वार्थ के लिए इस प्रकार के कार्यों को करने की प्रेरणा मिली होगी, जो परमेश्वर की इच्छा के विरोध में हो सकते थे। वह गरीब और निर्धन था। भोजन, वस्त्र तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के अभाव का सामना उसे हमारी ही तरह करना पड़ा। परन्तु उसने कभी कोई अनुचित कार्य नहीं किया। वह गाली सुनकर किसी को गाली नहीं देता था, निरादर होकर किसी को भी बुरे शब्द नहीं कहता था, उसने सब कुछ सहा, परन्तु कभी भी कोई पाप नहीं किया। और उस समय जब वह क्रूस के ऊपर मर रहा था, तो उसके शत्रु उसका ठट्ठा करके सिर हिला-हिलाकर कहते थे, कि यह परमेश्वर का पुत्र है परन्तु अब अपने आपको क्रूस की मृत्यु से नहीं बचा सकता, उन्हों ने उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से नीचे उतर आ।" (मत्ती २७:४०)। यद्यपि उसके पास ऐसा करने की पूरी सामर्थ थी, तौभी उपहास और निरादर से भरे उन शब्दों का उत्तर उसने यह कहकर दिया, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" (लूका २३ : ३४)। वह जानता था की उसके विषय में परमेश्वर की क्या इच्छा है। कोई परीक्षा, अभाव, या घमन्ड इतना शक्तिशाली नहीं था कि उसे पाप करने पर विवश कर देता। बाइबल का लेखक, इब्रानियों ४ : १५ में, यीशु के बारे में बोलते हुए कहता है, "क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके ; बरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी

निष्पाप निकला।" कितनी ही बार हमारे सामने ऐसी परीक्षाएं आती हैं जिनमें फंसकर, हम अपने किसी स्वार्थ के लिये, अक़सर ऐसे अनुचित कार्यों को करने लगते हैं जिनके बारे में हम जानते हैं कि परमेश्वर कदापि उन्हें स्वीकार नहीं करेगा।

प्रभु यीशु स्वर्ग छोड़कर इस पृथ्वी पर इसलिये आया ताकि वह हमारी आंखों को इस बात को देखने के लिए खोले, कि धन, प्रतिष्ठता, और गोले-बारूद से मनुष्य को विजय प्राप्त नहीं हो सकती। यह बात हमारे आज के युग के लिये और भी अधिक महत्वपूर्ण है, जबकि हम देखते हैं कि संसार में चारों ओर आज धन, प्रतिष्ठता ओर गोले-बारूद का बोलबाला है। वे जिनके पास ये वस्तुएं हैं अपने आप में बड़ा गर्व अनुभव करते हैं, वे सोचते हैं कि इन वस्तुओं के द्वारा वे सफ़लता तथा विजय प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु हमें याद रखना चाहिए, कि यीशु ने इनमें से किसी भी वस्तु के द्वारा विजय प्राप्त नहीं की। एक बार जब एक मनुष्य ने अपनी इच्छा व्यक्त करके उस से कहा, कि जहां कहीं भी वह जाएगा वह उसके पीछे हो लेगा, तो यीशु ने उसे उत्तर देकर कहा, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं ; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।" (मत्ती ८ : २०)। उसके जीवन की आवश्यकताएं उसके मित्रों के द्वारा पूरी होती थीं। अपना कहने को उसके पास कुछ भी न था, केवल उसके पास कुछ वस्त्र थे, जिन्हें उसकी मृत्यु के समय रोमी सिपाहियों ने चिट्ठियां डालकर आपस में बांट लिया था। जब लोगों की भीड़ क्रूरता से भरी हुई उसे पकड़ने के लिये आई, तो पतरस नाम के उसके एक चेले ने अपनी तलवार उसके बचाव के लिये निकाल ली, किन्तु यीशु ने उस से कहा कि अपनी तलवार वापस रख ले। इसका अर्थ यह नहीं है कि इन वस्तुओं का उचित रूप से उपयोग नहीं किया जा सकता, परन्तु वास्तव में यीशु हमें यह दिखाना चाहता था कि परमेश्वर तथा जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने का मार्ग ये वस्तुएं नहीं हैं। जबकि हमारा प्रभु संसार की उन सब वस्तुओं के

बिना, जिन्हें हम बहुत अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं, हमारे लिये स्वर्ग को जीत सकता है, तो हमें यह सीखना चाहिए कि हमारे जीवनों की सफ़लता का भेद ये वस्तुएं नहीं हैं, परन्तु वास्तव में परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण करना है।

यीशु इसलिए आया ताकि हम उसके जीवन से परमेश्वर की इच्छा पर चलना सीखें। यूहन्ना ४ : ३४ में उसने कहा, "मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं।" और यूहन्ना ५: ३० में उसने कहा, "मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता ; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं।" जब कभी भी किसी ने उसके किसी कार्य के विषय में उस से पूछना चाहा, कि वह ऐसा क्यों करता है, उसका उत्तर सदा यही था, कि यह मेरे पिता की इच्छा है। क्या हम अपने प्रत्येक कार्य के उत्तर में यह कह सकते हैं कि जो कुछ भी हम करते हैं वह परमेश्वर की इच्छानुसार है ? फिलिप्पियों की पुस्तक का लेखक दूसरे अध्याय में हमें बताता है, कि परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण करने के लिये उसने अपने आपको खाली कर दिया, और यहां तक परमेश्वर के आधीन रहा कि वह उसकी इच्छा को पूर्ण करने के लिये क्रूस के ऊपर चढ़ गया। सुनिये, कि वह उसके बारे में किस प्रकार से कहता है, वह कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २ : ५-८)। सो इस प्रकार से हम देखते हैं, कि परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिये वह मरने तक को भी तैयार हो गया। यही कारण है,

कि इब्रानियों ५ : ८,९ में लेखक कहता है, "और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी और सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा-काल के उद्धार का कारण हो गया।"

परमेश्वर ने यीशु मसीह को उसके आज्ञा मानने के फलस्वरूप अति महान् किया, उसने उसे वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है उसने उसको इतना महान् किया, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें ; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार करले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। परमेश्वर ने यीशु को संसार का उद्धारकर्त्ता बनाया, क्योंकि उसने दुख उठा उठाकर उसकी आज्ञा माननी सीखी। और इस प्रकार से सिद्ध बनकर वह अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा-काल के उद्धार का कारण हो गया। इसलिये, यदि आज मनुष्य उसकी आज्ञाओं को माने तो वह उसका उद्धार करके उसे परमेश्वर की संतान बना सकता है। उसने स्वयं, मत्ती ७ : २१ में कहा, "जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" यीशु के जीवन से हम सीखते हैं कि मनुष्य का सबसे बड़ा कर्त्तव्य यह है, कि हम परमेश्वर का भय मानें और उसकी आज्ञाओं का पालन करें।

जब मैं यीशु मसीह के इस संसार में आने के कारणों पर विचार करता हूं, तो मैं देखता हूं, कि वह इस पृथ्वी पर यह प्रमाणित करने के लिये आया कि हम खोकर पाते हैं। ज़रा कल्पना करके देखें, उस समय कौन यह स्वीकार कर सकता था कि इस संसार को बदल डालने का उपाय मृत्यु था ? कौन यह स्वीकार कर सकता था कि धन-सम्पत्ति, शक्ति और सेना के बिना वह इस संसार पर इतना गहरा प्रभाव छोड़ जाएगा, जितना कि उन सब लोगों ने मिलकर भी नहीं छोड़ा जिनके

पास ये सब वस्तुएंथीं ? कौन इस बात को मानने के लिये तैयार होगा कि खुद-इन्कारी न कि खुद-गर्ज़ी महिमा का मार्ग है ? इसी सिद्धान्त की शिक्षा देकर, उसने मत्ती १०:३९ में कहा, "जो अपना प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।" उसके जीवन से आज जिस निष्कर्ष पर हम पहुंचते हैं, वह आज हमारे समय में भी उतना ही अद्भुत प्रतीत होता है जितना की उस समय जब वह इस पृथ्वी पर था, किन्तु तौभी वह इसीलिये स्वर्ग छोड़कर इस पृथ्वी पर आया।

परन्तु कदाचित् यीशु के इस संसार में आने का सबसे बड़ा कारण उसका वह प्रेम था जिसके फलस्वरूप उसने अपने आपको क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। उसका इस संसार में आने का उद्देश्य पृथ्वी पर तरह-तरह के धार्मिक संगठनों को बनाने का नहीं था, क्योंकि इस प्रकार के संगठनों से संसार उस समय भी भरपूर था, परन्तु वह स्वर्ग छोड़कर इस पृथ्वी पर इसलिये आया ताकि वह आपका और मेरा उद्धार कर सके। अपने विषय में बोलते हुए उसने कहा, कि मैं खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया हूं। और आपका और मेरा उद्धार करने के लिये उसने अपने प्राणों को दे दिया। यूहन्ना १० अध्याय में उसने अपनी तुलना एक चरवाहे से करके कहा कि, "अच्छा चरवाहा मैं हूं ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। मज़दूर जो न चरवाहा है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तित्तर-बित्तर कर देता है। वह इसलिये भाग जाता है कि वह मज़दूर है और उसको भेड़ों की चिन्ता नहीं। अच्छा चरवाहा मैं हूं ; जिस तरह पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं। इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं।" (यूहन्ना १०:११-१५)। और यूहन्ना १५:१३ के अनुसार, "इस से बड़ा प्रेम किसी का

नहीं, कि कोई अपने मित्र के लिये अपना प्राण दे।"

प्रेरित यूहन्ना, १ यूहन्ना ४:१० में लिखकर कहता है, "प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हम से प्रेम किया ; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" जी हां, यीशु इसलिये इस संसार में आया क्योंकि वह आपसे और मेरे से प्रेम करता है। और अपने उस महान् प्रेम को व्यक्त करने के लिये उस ने अपने आप को दे दिया। हम जो अपने पापों और अधर्म के कामों के कारण परमेश्वर से दूर और अलग थे, अब प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा परमेश्वर के पास फिर से वापस आ सकते हैं। हम जो इस संसार में खोई हुई भेड़ों के समान और आशा-रहित थे, अब यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन की आशा को प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि उसने अपने प्राणों को इसीलिये दिया ताकि उसके बलिदान से हमें अनन्त जीवन मिल सके। क्या इस से बड़े प्रेम का उदाहरण हमें कहीं और मिल सकता है, कि जब हम निर्बल और पापी ही थे तो ठीक समय पर मसीह हमारे लिये मरा ?

वास्तव में उसका प्रेम कितना महान् है। मित्रो, यह उसका प्रेम ही था जिसने उसे स्वर्ग छोड़कर इस पृथ्वी पर आने के लिये विवश कर दिया। परन्तु प्रश्न यह है, कि आप उस से कितना प्रेम करते हैं ? उस ने कहा, यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" इसका अर्थ यह है कि यदि आप उससे वास्तव में प्रेम करते हैं, तो आप उसकी प्रत्येक आज्ञा को मानेंगे। यदि आप वास्तव में एक मसीही नहीं हैं, या आप मुक्ति पाना चाहते हैं, तो आपको चाहिए कि आप उस में पूर्ण रूप से विश्वास करके, उसकी आज्ञानुसार अपना मन फिराएं और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लें। जब आप ऐसा करेंगे तो वह आपका उद्धार करेगा, और आपको अपनी उस मन्डली में मिलाएगा जिसमें वे सब लोग हैं जिनका इस प्रकार से उद्धार हुआ है। और यदि आप

जीवन भर उसकी आज्ञाओं पर चलते रहेंगे तो एक दिन वह आकर आपको अपने साथ ले जाएगा ताकि अनन्तकाल तक आप उसके साथ स्वर्गमें रहें। विश्वास कीजिए, उसकी आज्ञाओं को मानिए, वह अपनी प्रतिज्ञाओं में सच्चा है।

एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न

मित्रो :

आज हम एक ऐसे प्रश्न के ऊपर विचार करेंगे जिसका सम्बन्ध संसार में प्रत्येक मनुष्य से है। यूं तो हमारे सामने प्रतिदिन अनेकों प्रश्न आते हैं, परन्तु जिस प्रश्न पर हम आज विचार करेंगे यह प्रश्न उन सभी अन्य प्रश्नों से बहुत ही अधिक महत्त्वपूर्ण है। सबसे पहले मैं नए नियम में से उन तीन स्थानों में से पढ़ूंगा जहां इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न को विभिन्न लोगों ने पूछा।

सबसे पहले हम मरकुस १०:१७-२० में यूं पढ़ते हैं : "और जब वह निकलकर मार्ग में जाता था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उस से पूछा, हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं ? यीशु ने उस से कहा, तू मुझे उत्तम क्यों कहता है ? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर। तू आज्ञाओं को तो जानता है ; हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना। उस ने उस से कहा, हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं। यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उस से कहा, तुझ में एक बात की घटी है ; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले। इस बात से उसके चिहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।"

अब आईए, प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय को निकालें, यहां

३७ तथा ३८ पदों में हम यूं देखते हैं; "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाईयो हम क्या करें ?, पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।"

तीसरा स्थान है, जहां से मैं पढ़ूंगा, प्रेरितों १६:२५-३४ यहां लिखा है, "आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उनकी सुन रहे थे। कि इतने में एकाएक बड़ा भुईंडोल हुआ, यहां तक कि बन्दीगृह की नेव हिल गईं, और तुरन्त सब द्वार खुल गए ; और सब के बन्धन खुल पड़े। और दारोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि बन्धुए भाग गए, सो उसने तलवार खींचकर अपने आपको मार डालना चाहा। परन्तु पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा ; अपने आप को कुछ हानि न पहुंचा; क्योंकि हम सब यहां हैं। तब वह दीया मंगवाकर भीतर लपक गया, और कांपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा। और उन्हें बाहर लाकर कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ? उन्हों ने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। और उन्होंने उसको, और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। और रात को उसी घड़ी उस ने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया। और उसने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।"

ये तीनों स्थान, जहां से कि अभी हमने पढ़ा, हमारा ध्यान इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न की ओर आकृष्ति करते हैं कि **"उद्धार पाने या अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिये मैं क्या करूं ?"** क्या आपने कभी अपने विषय में इस प्रश्न के ऊपर विचार किया है ? क्या आपने कभी अपने

आप से पूछा, कि उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ? क्या आप यह स्वीकार करते हैं कि आज संसार में प्रत्येक मनुष्य के सामने सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यही है, कि उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ?

मान लीजिए, गरमी के मौसम में, एक व्यक्ति अपने घर में बैठे हुए एक पंखे की आवश्यकता का अनुभव करता है। उसके घर में पंखा नहीं है, सो वह सोचता है कि उसे एक पंखा खरीदना चाहिए। अब मान लीजिए, सुबह अपने कार्य पर जाने से पहले वह समाचार पत्र उठाकर पढ़ता है। उसमें वह एक प्रचलित पंखे के विषय में एक विज्ञापन पढ़ता है, उसे ध्यान से पढ़ने के बाद वह अपने मन में विचार करता है कि यह पंखा अच्छा है उसे यही खरीदना चाहिए। परन्तु शाम को जब वह अपने घर वापस आता है तो रेडियो पर वह एक और पंखे का विज्ञापन सुनता है, कदाचित उसमें कुछ ऐसी विशेषताएं हों जिन्हें उसने पहिले पंखे में न देखा हो, सो वह उस विज्ञापन को सुनकर सोचता है कि यही पंखा सबसे अच्छा है। किन्तु भोजन करने के बाद वह एक पत्रिका उठाकर पढ़ता है, और उसमें वह एक और पंखे का सुन्दर चित्र देखता है तथा उसके विषय में कुछ विशेष बातों को पढ़ता हैं। यह विज्ञापन इतना आकृषक होता है कि वह झट अपना निश्चय बदल देता है और सोचता है, कदाचित् यही पंखा सबसे अच्छा है। परन्तु कुछ समय पश्चात्, रात को, वह एक उलझन में फंस जाता है, वह बार-बार सोचता है, कि कौन सा पंखा अच्छा है ? वह सबसे बढ़िया पंखे के विषय में कैसे निश्चय कर सकता है ?

किन्तु, ऐसा कोई उचित उपाय नहीं है जिसके द्वारा हम पंखे, इत्यादि के विषय में एक सही निश्चय कर लें। परन्तु इसके विपरीत उद्धार पाने के विषय में हम पूर्ण रूप से जान सकते हैं, कि उचित मार्ग क्या है। हमें केवल इतना ही करना है कि हम परमेश्वर के वचन में से देखें, और इस प्रश्न पर विचार करें कि उद्धार पाने के लिये मुझे क्या करना है।

सबसे बढ़िया उपाय केवल यही है, कि हम बाइबल में से उन घटनाओं को देखें जिनमें हम देखते हैं कि प्रभु यीशु के तथा प्रेरितों के दिनों में अनेकों लोगों ने उद्धार पाने के लिये क्या किया। बाइबल को पढ़कर हम देखते हैं कि पुराने नियम में प्रभु यीशु मसीह के इस संसार में आने, और उसके आने के उद्देश्य के विषय में अनेकों बातें लिखी हुई हैं। फिर जब हम नए नियम को पढ़ते हैं, तो नए नियम की पहली चार पुस्तकों में हम उन सब बातों को प्रभु यीशु में पूरा होते देखते हैं जो उसके विषय में पहिले से कही गईं थीं। यीशु मसीह के जीवन, उसकी मृत्यु, और उसके पुनःरुत्थान की घटनाओं को इन चारों पुस्तकों में से पढ़ने के बाद, हम नए नियम की पांचवी पुस्तक पर आते हैं, यह पुस्तक है "प्रेरितों के काम", इस में से पढ़कर हम देखते हैं कि यीशु मसीह की कलीसिया का आरम्भ कैसे हुआ, और किस प्रकार से लोगों का उद्धार हुआ तथा वे कलीसिया में मिलाए गए। यही पुस्तक है जिसमें हम ऐसी आठ घटनाओं को पढ़ते हैं जिनमें हम देखते हैं कि विभिन्न लोगों ने मसीह के पास आने के लिये क्या किया, किस प्रकार से उनका उद्धार हुआ। आज हम सबके लिये यह बहुत ही आवश्यक है कि हम इन उदाहरणों को देखें ताकि हम जाने कि आज उद्धार प्राप्त करने के लिये हमें क्या करना चाहिए। क्योंकि जिस प्रभु यीशु ने उन सबका उद्धार किया ; वही आज हमारा भी उद्धार कर सकता है, और जिस प्रकार से उसने उन सब का उद्धार किया उसी तरह से वह हमारा भी उद्धार आज कर सकता है, क्योंकि उसका मार्ग केवल एक ही है।

पहिली घटना— ३००० लोग

प्रेरितों २ अध्याय हमें बताता है कि प्रभु यीशु की कलीसिया का आरम्भ कैसे हुआ। इसी अध्याय में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु के विषय में पहिला संदेश प्रचार किया गया। उस दिन वहां हजारों लोगों ने प्रेरित पतरस के द्वारा प्रभु यीशु के सुसमाचार को पहिली बार सुना। जब उसने यीशु के बारे में अनेकों बातें कहकर उन्हें बताया कि वह इस संसार का उद्धारकर्त्ता होकर आया था, और जब उन्हों ने

पतरस से यह सुना, "सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" तो ३७ पद में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाईयो, हम क्या करें ?"

यहां हम देखते हैं कि सबसे पहले उन्हें मसीह का संदेश सुनाया गया। फिर हम देखते हैं कि उन्होंने उन सब बातों पर विश्वास किया। और अब वे जानना चाहते थे, कि वे क्या करें ? तो हम पढ़ते हैं कि पतरस ने उन से कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (३८ पद)। और आगे हम पढ़ते हैं, "सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया ; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।" सो, इस पहिले उदाहरण में हम देखते हैं कि लोगों ने मसीह यीशु के बारे में सुना, उस पर विश्वास किया, अपने विश्वास को प्रगट किया, अपने पापों से मन फिराया, और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लिया।

दूसरी घटना—सामरी लोग

प्रेरितों ८ अध्याय में हम नए जन्म की दूसरी घटना को देखते हैं। यहां हम पढ़ते हैं, कि सुसमाचार का प्रचारक फिलिप्पुस सामरिया नाम के एक नगर में गया। उसने वहां के लोगों में यीशु का प्रचार किया, और लिखा है वहां बहुतेरे लोगों ने उन बातों पर विश्वास किया। फिर बारह पद में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, "जब उन्हों ने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।" यहां जबकि वर्णन बहुत ही संक्षिप्त रूप में है, किन्तु प्रगट रूप में हम यह देख सकते हैं, कि उन्हों ने यीशु का प्रचार सुना, उस पर विश्वास किया, अपनी इच्छा को बदला, और सबने बपतिस्मा लिया।

तीसरी घटना—कूश देश का खोजा

इसी आठ अध्याय में प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक हमारा परीचय मन-परिवर्तन की तीसरी घटना से कराता है। इस घटना में एक मसीही बननेवाला व्यक्ति कूश देश का एक यहूदी था। यह व्यक्ति जब यरुशलेम से होकर अपने देश को वापस जा रहा था, तो मार्ग में उसे फिलिप्पुस नाम का एक मसीही प्रचारक मिला, जिसने उसे "यीशु का सुसमाचार" सुनाया। परिणाम स्वरूप उस व्यक्ति ने एक मसीही बनने की इच्छा व्यक्त की, और तब क्या हुआ, पवित्र शास्त्र हमें इन शब्दों में बताता है, "मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है : उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।" (प्रेरितों ८: २६-३९)। सो इस घटना में भी हम देखते हैं कि यीशु का सुसमाचार सुनने के बाद, उस मनुष्य ने विश्वास किया, तथा यह कहकर मसीह का अंगीकार किया कि वह परमेश्वर का पुत्र है, उसने अपनी इच्छा को बदला, और बपतिस्मा लिया।

चौथी घटना—शाऊल

जब हम प्रेरितों ९ अध्याय पर आते हैं तो उसमें हम एक नवयुवक यहूदी व्यवस्थापक के मन परिवर्तन की घटना को पढ़ते हैं। उसका नाम शाऊल था तथा उस समय वह मसीही लोगों का एक कट्टर विरोधी था। हम पढ़ते हैं, "परन्तु चलते-चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी।

और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ? उस ने पूछा ; हे प्रभु तू कौन है ? उसने कहा ; मैं यीशु हूं ; जिसे तू सताता है। परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा जाएगा·····और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया।" (प्रेरितों ९:३-६,९)। तीन दिन के बाद उसके पास हनन्याह नाम का प्रभु का एक प्रचारक आया, जिसे प्रभु ने इसलिये भेजा था ताकि वह शाऊल को बताए कि उसे उद्धार प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिए। और प्रेरितों २२:१६ के अनुसार, उस प्रचारक ने शाऊल से कहा, "अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" सो शाऊल ने भी, उद्धार पाने के लिये, अन्य लोगों की तरह, विश्वास किया, अपने पापों से पश्चात्ताप किया और पापों को धो डालने के लिये बपतिस्मा लिया।

पांचवीं घटना—कुरनेलियुस

प्रेरितों १० अध्याय में हमें मन परिवर्तन की एक और घटना मिलती है। इस घटना में मसीही बननेवाला व्यक्ति रोमी सेना का एक कप्तान था। इस रोचक घटना का वर्णन हम इन शब्दों में पढ़ते हैं, "कैसरिया में कुरनेलियुस नाम एक मनुष्य था जो इतालियानी नाम पलटन का सूबेदार था। वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा, कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत मेरे पास भीतर आकर कहता है ; कि हे कुरनेलियुस। उसने उसे ध्यान से देखा ; और डरकर कहा ; हे प्रभु क्या है ? उस ने उस से कहा, तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं। और अब याफ़ा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले···वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिन के द्वारा तू और तेरा

सारा घराना उद्धार पाएगा।" (प्रेरितों १०:१-५ ; ११:१४)। और कुछ ही समय पश्चात्, हम पढ़ते हैं, कि प्रेरित पतरस को बुलवाया गया, जिसने आकर उन्हें यीशु का संदेश दिया। प्रेरितों १०:४३ में हम पढ़ते हैं कि उस ने उन से कहा कि "उस की सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।" सो कुरनेलियुस और उसके घर के लोगों ने विश्वास किया। और तब, पतरस ने "आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए।" (प्रेरितों १०:४८)। सो, एक बार फिर हम देखते हैं, कि यीशु मसीह के बारे में सुनने के बाद, मसीही बनने के लिये, लोगों ने उसमें विश्वास किया, अपने मन को बदला और बपतिस्मा लिया।

छठी घटना—लुदिया

फिर, प्रेरितों १६ अध्याय में हम लुदिया नाम की एक स्त्री के मन परिवर्तन की घटना के बारे में पढ़ते हैं। जब उसकी भेंट प्रेरित पौलुस तथा उसके साथियों से हुई तो उन्होंने उसे और उसके घर के लोगों को यीशु का सुसमाचार सुनाया। इस घटना का उल्लेख करके, प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक, लूका, कहता है, "सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए, कि वहां प्रार्थना करने का स्थान होगा ; और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे। और लुदिया नाम थुआतीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुनती थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाए। और जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया, तो उसने बिनती की, कि यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो ; और वह हमें मनाकर ले गई।" (प्रेरितों १६:१३-१५)। सो एक बार फिर, लोगों ने मसीह के सुसमाचार को सुना, उस पर विश्वास किया, और बपतिस्मा लिया।

सातवीं घटना—बन्दीगृह का दारोगा

प्रेरितों के काम की पुस्तक के इसी अध्याय में मन परिवर्तन का हमें एक और रोचक वृत्तान्त मिलता है। इसका सम्बन्ध रोम के फिलिप्पी नाम के नगर के बन्दीगृह के एक दारोगा से है। उस समय उसकी सुरक्षा में प्ररित पौलुस और सीलास बन्दीगृह में बन्द थे। हम पढ़ते हैं, कि आधी रात के लगभग जब पौलुस और सीलास परमेश्वर की प्रशंसा में भजन गा रहे थे, तो एकाएक वहां एक बड़ा भुईंडोल हुआ जिसके फलस्वरूप बन्दीगृह के द्वार खुल गए, और बन्धुओं के बन्धन खुल गए। और बन्दीगृह का दारोगा नींद से जाग उठा, "तब वह दीया मंगवाकर भीतर लपक गया, और कांपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा। और उन्हें बाहर लाकर कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं? उन्हों ने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। और उन्होंने उसको, और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।" (प्रेरितों १६: २९-३३)। सो यहां भी हम देखते हैं कि सबसे पहिले उन्होंने यीशु मसीह का सुसमाचार सुना, सुनकर उन्हों ने उस पर विश्वास किया, और अपने पिछले जीवन से फिरकर, यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लिया। और इस प्रकार से उनका उद्धार हुआ।

आठवीं घटना—कुरिन्थुस के लोग

मन परिवर्तन अर्थात् मसीही बनने की आठवीं तथा अन्तिम घटना का वर्णन हमें प्रेरितों १८ में मिलता है। यहां हम पढ़ते हैं कि प्रेरित पौलुस कुरिन्थुस नाम के एक नगर में आया। इस नगर में अन्य लोगों के अतिरिक्त कुछ यहूदी लोग भी रहते थे, जिन्हों ने अपनी उपासना इत्यादि के लिये नगर में एक आराधनालय बना रखा था। हम पढ़ते हैं कि पौलुस "हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके

यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था।" और फिर आगे लिखा है, "तब आराधनालय के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया।" (प्रेरितों १८:४,८)। पौलुस ने एक बार फिर लोगों को मसीह का संदेश दिया; उन्होंने सुनकर विश्वास किया, और अपने आपको प्रभु को दे देने का निश्चय किया, और बपतिस्मा लिया।

सो इस प्रकार, प्रेरितों के काम की पुस्तक में से, आज मन परिवर्तन के जिन आठ उदाहरणों को हमने देखा, इनसे हम यही निष्कर्ष निकालते हैं, कि उद्धार पाने या एक मसीही बनने के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य यीशु के सुसमाचार को सुने (रोमियों १०:१७), उस के ऊपर विश्वास करे (इब्रानियों ११:६), अपना मन फिराए (प्रेरितों १७:३०), और अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। (प्रेरितों २:३८; मरकुस १६:१६)।

आज संसार में अनेकों लोगों का विचार है कि मनुष्य का उद्धार कई प्रकार से हो सकता है। परन्तु यह बात बड़े ही ध्यान देने योग्य है कि बाइबल हमें केवल एक ही मार्ग की शिक्षा देती है। जिस प्रकार से कि अभी हमने मन परिवर्तन के प्रत्येक उदाहरण में देखा, कि उन सब लोगों का उद्धार एक ही तरह से हुआ। और प्रभु यीशु के इन महत्त्वपूर्ण शब्दों पर भी ध्यान दें जिनका उल्लेख यूहन्ना १४:६ में इस प्रकार से हुआ है, यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।"

अब, अन्त में, मैं आप को यह अवश्य बता दूं, कि जबकि आज हमारे पाठ का विशेष उद्देश्य यह देखने का था कि मनुष्य को उद्धार प्राप्त करने या एक मसीही बनने के लिये क्या करना चाहिए, परन्तु इन बातों से हमें यह नहीं समझ लेना चाहिए कि एक मसीही बने रहने के लिये केवल इतना ही पर्याप्त है। वास्तव में इसका अर्थ है

कि इस प्रकार से मनुष्य प्रभु की कलीसिया अर्थात् उसके परिवार में मिल जाता है। किन्तु, इसके बाद यह आवश्यक है कि हम प्रतिदिन प्रभु का अनुसरण करें और अन्त तक उसके प्रति विश्वासी बने रहें। उदाहरण स्वरूप, कही दूर जाने के लिये, केवल यही आवश्यक नहीं होता कि हम टिकट लेकर रेल-गाड़ी में बैठ जाएं, परन्तु यह भी उतना ही आवश्यक होता है कि हम उस समय तक गाड़ी में बैठे रहें जब तक कि वह स्थान न आ जाए जहां हमें वास्तव में पहुंचना है।

प्रभु यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती ११:२८)। क्या आज आप प्रभु यीशु के पास आने का निश्चय करेंगे?

विश्वास का महत्त्व

मित्रो :

बाइबल में रोमियों ५:१ में हमें एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात का उल्लेख मिलता है, यहां लिखा है "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।"

यहां से हम सीखते हैं कि मनुष्य को धर्मी ठहरने की आवश्यकता है, क्योंकि मनुष्य पापी है। और लेखक बताता है कि हम विश्वास से धर्मी ठहराए जाकर प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अपना मेल परमेश्वर के साथ स्थापित कर सकते हैं। और आज हम इसी बात पर विचार करेंगे कि हम किस प्रकार से विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जा सकते हैं।

बाइबल हमें बताती है कि आरम्भ में मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में सृजा गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य परमेश्वर के साथ संगति रखता था, वह परमेश्वर की तरह धर्मी तथा पाप रहित था। परन्तु जब मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर उसका विरोध किया तो मनुष्य अधर्मी और पापी बन गया, उसका सम्बन्ध परमेश्वर से टूट गया। और जिस प्रकार से देह आत्मा के बिना मर जाती है, उसी प्रकार से मनुष्य परमेश्वर से अलग होकर आत्मिक दृष्टिकोण से मर गया। यही कारण है कि यीशु मसीह को स्वर्ग छोड़कर इस पृथ्वी पर आना पड़ा, ताकि वह सब मनुष्यों के पापों की छुड़ौती के लिये अपने आप को एक निष्कलंक बलिदान के रूप में दे दे। वह मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में एक बिचवई बना। यही कारण है कि बाइबल कहती है, "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।"

परन्तु यदि आपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अपना मेल परमेश्वर के साथ स्थापित नहीं किया है तो आप परमेश्वर से दूर और अलग हैं, तथा आपका भीतरी व वास्तविक मनुष्य वास्तव में मरा हुआ है। और प्रत्येक वह मनुष्य जो इस जीवन में प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अपना मेल परमेश्वर के साथ स्थापित किए बिना मर जाता है, या इस संसार को छोड़कर चला जाता है, तो वह परमेश्वर से अलग होकर अपने आप को अनन्तकाल के लिये नरक की आग में भेजने के लिये स्वयं जिम्मेदार ठहरता है। क्या आपने इस विषय पर कभी गम्भीरता से विचार किया? आप अपने जीवन के विषय में क्या सोचते हैं? याकूब ४: १३,१४ में लेखक हम से कहता है, "तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल हम किसी नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्योपार करके लाभ उठाएंगे। और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा: सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है।" वास्तव में, यदि सच कहा जाए तो हम चौबीस घन्टे मृत्यु की उपस्थिति में रहते हैं। पिछले कुछ समय में हज़ारों ऐसे लोगों की मृत्यु हो चुकी है जिन्हें बिल्कुल भी आशा नहीं थी कि उनकी मृत्यु इतनी जल्दी हो जाएगी। उनमें से सैकड़ों लोगों की मृत्यु भूकम्प के द्वारा हुई, अन्य लोग किसी बीमारी के अचानक आ जाने से मृत्यु के शिकार हो गए, बहुतेरे अन्य किसी और दुर्घटना में मारे गए। परन्तु मान लीजिए यदि उन लोगों के स्थान पर हम होते! किन्तु हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि उसने हमें आज तक इस पृथ्वी पर कुशलता से रखा। परन्तु तौभी हम सब जानते हैं, कि हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जिसमें हम चारों ओर से असुरक्षित हैं। हम कोई अनुमान नहीं लगा सकते कि कल क्या होगा। हमें कोई निश्चय नहीं कि कल हम इस संसार में होंगे या नहीं। प्रभु यीशु जानता था कि हम असुरक्षित हैं, और इसी कारण, मत्ती ६:१९-२० में, उसने कहा, "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न

करो ; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इक्ट्ठा करो, जहां न कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।"

तो फिर इस असुरक्षित संसार में हमारे पास क्या उत्तर है? १ कुरिन्थियों ६:८ में, प्रेरित पौलुस हमें उत्तर देकर कहता है, "तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है..." इसका अभिप्राय यह है कि कदाचित् सांसारिक दुर्घटनाएं मेरे शरीर को नाश कर दें परन्तु उनके द्वारा मेरी आत्मा को कोई हानि नहीं पहुंच सकती। यदि मैं एक मसीही जीवन व्यतीत करूं तो पृथ्वी पर मेरे इस जीवन के समाप्त होने के बाद सर्वशक्तिमान परमेश्वर मेरी रक्षा करेगा। इसलिये, "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।"

परन्तु क्या आप परमेश्वर में विश्वास रखते हैं? मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं, और इसके अनेकों कारण हैं। मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं क्योंकि मैं प्रार्थना में विश्वास करता हूं। मैं दाऊद के बारे में पढ़ता हूं जिसने यूं कहकर प्रार्थना की, "यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।" (भजन २३:१)। वह जानता था कि एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जो उसका रखवाला है। फिर मैं यीशु मसीह के बारे में पढ़ता हूं कि अपनी मृत्यु से पूर्व उस सब निरादर, उपहास और अत्याचार को असहनीय जानकर उसने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा, "कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।" (मत्ती २६:३९)। यीशु जानता था कि एक पिता परमेश्वर है जिसके साथ हम प्रार्थना के द्वारा बात कर सकते हैं।

मैं परमेश्वर में केवल इसीलिये विश्वास नहीं करता क्योंकि मैं प्रार्थना में विश्वास करता हूं, परन्तु मैं परमेश्वर में इसलिये भी विश्वास करता हूं क्योंकि मैं संसार में चारों ओर उसकी बनाई हुई वस्तुओं को प्रतिदिन देखता हूं। ये सुन्दर पृथ्वी, पेड़-पौधे, रंग-बिरंगे फूल, अनेकों प्रकार के पक्षी व पशु, सूरज, चांद, सितारे, और स्वयं मनुष्य ; इन सब को देखकर मुझे यह विश्वास करना पड़ता है कि इन सब का एक बनानेवाला, एक सृष्टिकर्त्ता है। जिस प्रकार प्रत्येक घर का कोई न कोई बनानेवाला है वैसे ही इस सृष्टि का भी एक रचनेवाला है। मान लीजिए, यदि कोई आप से कहे कि आपके रेडियो को किसी ने भी नहीं बनाया है, यह एक दिन अचानक अपने आप बनकर तैयार हो गया था। मैं जानता हूं कि आप इस बात को सुनकर हसेंगे, आप इस पर कभी भी विश्वास नहीं करेंगे, क्योंकि आप जानते हैं कि आपके रेडियो का कोई बनानेवाला अवश्य है। परन्तु मान लीजिए यदि आप अपने रेडियो का एक-एक पुरज़ा इत्यादि सब अलग-अलग करके सब को एक साथ ऊपर फैकें तो क्या वे सब पुरज़े इत्यादि नीचे गिरकर अपने आप एक रेडियो बन जाएंगे ? जी नहीं, चाहे आप ऐसा हज़ार बार भी क्यों न करें परन्तु वे पुरज़े कभी भी अपने आप एक रेडियो नहीं बन सकते। कितनी मूर्खता की बात है जब कुछ लोग कहते हैं कि यह सृष्टि अपने आप ही बन गई, इसका कोई बनानेवाला नहीं है। सो मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टि उसकी उपस्थिति का एक बहुत बड़ा प्रमाण है।

मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं क्योंकि बाइबल मुझे बताती है कि "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" (उत्पत्ति १:१)। १ कुरिन्थियों ६:८ में प्रेरित पौलुस कहता है कि हमारे निकट एक परमेश्वर है। सो, मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं क्योंकि मैं प्रार्थना में विश्वास करता हूं, क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टि उसे मुझ पर प्रकट करती है ; और क्योंकि बाइबल बताती है कि आदि में

परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की।

परन्तु बाइबल मनुष्य के बारे में क्या कहती है ? बाइबल बताती है कि आदि में परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया। (उत्पत्ति २:७)। बाइबल यह भी बताती है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया। (उत्पत्ति १२:७)। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य परमेश्वर के समान अनन्तकाल तक बना रहेगा। परन्तु मनुष्य के लिये संसार में सबसे महत्त्वपूर्ण बात क्या है ? इसके उत्तर में, सभोपदेशक १२:१३, १४ में, बाइबल कहती है, "कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर ; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।" किन्तु आज्ञा मानना कितना गम्भीर है ? प्रभु यीशु के कथनानुसार, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वह जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती ७:२१)।

मरकुस १२ अध्याय में हम पढ़ते हैं कि एक बार जब एक व्यवस्थापक ने यीशु के पास आकर पूछा, कि सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है ? तो यीशु ने उत्तर देकर कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।" परन्तु परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को मैं कैसे दिखा सकता हूं ? इसका केवल एक ही मार्ग है। यूहन्ना १४:१५ के अनुसार, प्रभु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

विश्वास एक बहुत बड़ा सिद्धान्त है। इब्रानियों ११:६ में लिखा है, "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है ;

और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" परन्तु विश्वास कैसे प्रमाणित होता है ? हम इब्राहीम के विश्वास के बारे में पढ़ते हैं, कि जब परमेश्वर ने उसे आज्ञा देकर कहा कि अपने एकलौते पुत्र को मेरे लिये बलिदान कर दे, तो वह परमेश्वर की आज्ञानुसार करने के लिये चल पड़ा। फिर हम नूह के विश्वास के बारे में पढ़ते हैं, कि वह परमेश्वर की आज्ञा पाकर एक जहाज़ बनाने लगा। सो विश्वास को व्यक्त करने का केवल एक ही मार्ग है—अर्थात् उसकी इच्छा पर चलकर, उसकी आज्ञा मानकर।

इब्रानियों १:१,२ में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, "पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है।" इसका अर्थ यह है कि जब कि आरम्भ में परमेश्वर ने अपनी इच्छा को इब्राहीम तथा नूह जैसे बाप-दादों के द्वारा, और फिर बाद में मूसा तथा यशायाह जैसे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा थोड़ा-थोड़ा करके प्रकट किया, परन्तु अब, इस युग में, इन दिनों में उसने अपनी इच्छा को हमारे लिये अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा प्रकट किया है। इसलिये, आज परमेश्वर की इच्छा को हम केवल यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानकर ही पूरा कर सकते हैं। आज हम परमेश्वर की इच्छा पर उन बातों को मानकर नहीं चल सकते जिनकी आज्ञा उसने नूह, इब्राहीम, और मूसा इत्यादि को दी थी, परन्तु आज परमेश्वर की इच्छा पर चलने के लिये हमें यीशु मसीह की आज्ञाओं को सुनना व मानना है। मत्ती १७:५ को पढ़कर हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने यीशु के बारे में बोलकर कहा, "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं : इसकी सुनो।"

हमने देखा था, "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने

प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" और परमेश्वर ने आज्ञा देकर कहा, कि मेरे पुत्र की सुनो। देखिए कि परमेश्वर ने आपको यीशु मसीह में विश्वास दिलाने के लिये क्या-क्या किया। उसके जन्म के ऊपर विचार करें, कितने अदभुत और आश्चर्यजनक रूप से उसने जन्म लिया। उसने एक सिद्ध जीवन व्यतीत किया। उसकी अद्भुत शिक्षाओं पर विचार करें, और फिर उन सब आश्चर्यकर्मों के बारे में सोचें जो उसने किए। फिर, डाह और ईर्ष्या से भरी लोगों की एक भीड़ ने उस सिद्ध मनुष्य को लेकर एक क्रूस पर चढ़ाया। परन्तु तीसरे दिन परमेश्वर ने उसे फिर मुर्दों में से जिला दिया। सोचिए इन सब बातों के ऊपर। क्या ये सब बातें हमें यीशु मसीह में विश्वास दिलाने के लिये पर्याप्त नहीं हैं ?

हमें इन्हें स्वीकार करना चाहिए, इन पर विश्वास करना चाहिए। आज इस असुरक्षित संसार में परमेश्वर ने हमें एक मार्ग दिया है, उसने हमें एक आशा दी है। परमेश्वर हम से कहता है कि मेरे पुत्र की सुनो। इसलिये, "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" प्रभु यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)। सो, परमेश्वर ने हमें केवल एक ही मार्ग प्रदान किया है अर्थात् प्रभु यीशु मसीह। यूहन्ना ३:१६ से हम देखते हैं कि ; "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

परन्तु विश्वास क्या है ? क्या विश्वास का अर्थ केवल मानसिक स्वीकृती से है ? क्या विश्वास का अर्थ यह है कि मैं केवल अपने मन में मान लूं कि यीशु मसीह मेरे लिये मारा गया ? परन्तु याकूब, याकूब २:२६ में कहता है कि "जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा

ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" इसलिये जीवित और प्रबल विश्वास केवल वही है जो कार्यशील हो, जो कर्म-सहित हो। यदि मैं केवल विश्वास ही करता हूं, तो याकूब फिर कहता है, याकूब २:२० में, कि "हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है ?" वास्तव में एक बचानेवाला विश्वास केवल वही विश्वास हो सकता है जो कर्म-सहित है। आईए, इस बात को और अधिक स्पष्ट रूप से समझाने के लिए मैं आपको एक उदाहरण दूँ :

मान लीजिए, एक व्यक्ति जल में डूब रहा है। वह बचना चाहता है, सो वह चिल्लाता है, बचाओ, बचाओ, बचाओ। एकाएक, उधर एक और मनुष्य आ निकलता है। वह उसकी पुकार को सुनकर उसे बचाना चाहता है। सो वह एक मोटी व लम्बी रस्सी लेकर उसका एक सिरा किसी वस्तु में लपेट कर उस व्यक्ति के पास फेंककर कहता है, कि उसे कसकर पकड़ लो, और मैं तुम्हें बाहर खींच लूंगा। अब जबकि उस व्यक्ति को, जो डूब रहा है, यह विश्वास करना चाहिए, कि वह दूसरा मनुष्य उसे बचाना चाहता है ; और वह उसे बचाएगा, परन्तु इसी के साथ यह भी आवश्यक है कि यदि वह वास्तव में बचना चाहता है तो वह उसकी आज्ञा का भी पालन करे। उसे चाहिए कि वह उसकी आज्ञानुसार उस रस्सी को पकड़े और अन्त तक पकड़े रहे जब तक कि वह बच न जाए। परन्तु मान लीजिए, कि यदि वह मनुष्य बचना चाहे, और यह विश्वास भी करे कि वह दूसरा मनुष्य उसे अवश्य ही बचा लेगा, परन्तु वह उस रस्सी को पकड़ने से इन्कार कर दे, तो क्या उसका विश्वास उसे बचा लेगा ? निःसंदेह उसका विश्वास मरा हुआ विश्वास है। उसका विश्वास तो बहुत बड़ा है, कि वह व्यक्ति उसे अवश्य ही बचाएगा, परन्तु वह विश्वास ठीक उसी प्रकार से मरा हुआ हैं जैसे कि देह आत्मा बिना मरी हुई होती है। इसलिये, एक मरा हुआ विश्वास, एक कर्म-रहित विश्वास, कभी भी किसी मनुष्य को

नहीं बचा सकता। वास्तव में यदि आप विश्वास करते हैं तो आप आज्ञाओं को भी मानेंगे।

सो परमेश्वर हमें क्या आज्ञा देता है ताकि हम उसकी आज्ञापालन करके उद्धार प्राप्त कर सकें? मत्ती १०:३२ में हम पढ़ते हैं, प्रभु यीशु ने कहा, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा।" मानने से अभिप्राय है उसे अपना प्रभु, अपना स्वामी बनाना, उसे अपने जीवन पर पूर्ण अधिकार देना। कई वर्ष पूर्व, एक समय था जब लोगों ने प्रभु यीशु के नाम का अंगीकार किया, तो उनकी देह पर तेल छिड़ककर उन्हें जलाकर राख कर दिया गया। किन्तु, परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि आप और मैं एक ऐसे देश में रहते हैं जहां हमें पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। हम बिना किसी भय या झिझक के प्रभु के नाम का अंगीकार कर सकते हैं। फिर इसके बाद मुझे क्या करना है? परमेश्वर जानता है कि पाप कितना भयंकर है। पाप ही के कारण संसार में प्रथम परिवार को मृत्यु दन्ड उठाना पड़ा, पाप ने ही यीशु को क्रूस के ऊपर बलिदान करवाया। सो लूका १३:३ में प्रभु ने कहा, कि पाप से अपना मन फिराओ। फिर परमेश्वर चाहता है, कि जैसे यीशु मेरे पाप के कारण मारा गया और गाड़ गया, मैं अपने पाप के लिये मरके, बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़ा जाऊं; ताकि पाप का मेरा पुराना मनुष्य दफ़न हो जाए, और जिस प्रकार से यीशु मुर्दों में से जी उठा, मैं बपतिस्मे के जल से बाहर आकर उसके जी उठने की समानता में जुट जाऊं। प्रेरित पौलुस ने रोमियों ६:३-५ में इस बात को बड़े ही सुन्दर ढंग से समझाया है। और प्रभु यीशु ने, मरकुस १६:१६ में, कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा..."।

सो इस असुरक्षित संसार में, आपत्तियों और दुखों से भरे इस संसार में हमारे लिये क्या उत्तर है? केवल एक ही उत्तर है, अर्थात् एक ऐसा

विश्वास जो अपने आप को परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिये पूर्ण रूप से सौंप दे। क्या आप प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं? यीशु ने कहा, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो? जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है, मैं तुम्हें बताता हूं कि वह किस के समान है: वह उस मनुष्य के समान है, जिसने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान पर नेव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला न सकी; क्योंकि वह पक्का बना था। परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिसने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया। जब उस पर धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (लूका ६:४६-४९)।

क्या आप जानते हैं कि एक दिन यीशु एकाएक आन्धी, तूफ़ान, और एक बाढ़ के समान आ जाएगा? उसने कहा, "जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।" (मत्ती २४:२७)। प्रश्न यह है, कि जब वह आएगा, क्या उस समय आपका विश्वास-रूपी घर गिरकर सत्यानाश हो जाएगा या फिर वह दृढ़ बना रहेगा? यीशु ने कहा, जो मनुष्य मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है केवल उसी का घर पक्का है, केवल उसी मनुष्य का घर अन्त तक दृढ़ बना रहेगा। मित्रो, मैं आपसे निवेदन करके कहता हूं, यीशु में विश्वास कीजिए और उसकी आज्ञाओं को मानिए। प्रभु अपनी इच्छा पर चलने के लिये आपकी अगुवाई करे।

जब हम प्रभु को सौंप देते हैं

मित्रो :

नए नियम में हम एक बड़ी ही रोचक घटना के बारे में पढ़ते हैं। एक विशेष बात जो इस घटना के सम्बन्ध में हम देखते हैं, वह यह है कि इस घटना का वर्णन सुसमाचार की पुस्तकों के चारों लेखकों ने अपनी-अपनी पुस्तकों में किया है। यूहन्ना, नए नियम का एक लेखक, यूहन्ना रचित सुसमाचार के ६ अध्याय में, इस घटना का वर्णन करके कहता है, "इन बातों के बाद यीशु गलील की झील अर्थात् तिबिरियास की झील के पास गया। और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उन को देखते थे। तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने चेलों के साथ वहां बैठा। और यहूदियों के फ़सह का पर्व निकट था। तब यीशु ने अपनी आंखें उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलिप्पुस से कहा, कि हम इन के भोजन के लिये कहां से रोटी मोल लाएं ? परन्तु उस ने यह बात उसे परखने के लिये कही; क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या करूंगा। फिलिप्पुस ने उस को उत्तर दिया, कि दो सौ दीनार की रोटी उन के लिये पूरी भी न होंगी कि उन में से हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल जाए। उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहा, यहां एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और दो मछलियां हैं परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं। यीशु ने कहा कि लोगों को बैठा दो। उस जगह बहुत घास थी : तब वे लोग जो गिनती में लगभग पांच हज़ार के थे, बैठ गए : तब यीशु ने रोटियां लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बांट दीं : और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बांट दिया। जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उसने अपने चेलों

से कहा, कि बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए। सो उन्होंने बटोरा, और जव की पांच रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से बच रहे थे उन की बारह टोकरियां भरीं। तब जो आश्चर्यक्रम उस ने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे, कि वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है।"

इस घटना में हम एक बहुत ही बड़ी महत्त्वपूर्ण बात को देखते हैं, अर्थात् वह जो उस लड़के के हाथ में केवल पांच रोटियां और दो मछलियां ही थीं, जब वह प्रभु के पास आ गईं तो वही पांच रोटियां और दो मछलियां इतनी अधिक हो गईं कि पांच हज़ार लोगों ने उस में से खाया और फिर भी बारह टोकरियाँ बचे हुए टुकड़ों से भर गईं। प्रभु यीशु के अनेकों आश्चर्यकर्मों में से, जिनके बारे में हम नए नियम में पढ़ते हैं, यह आश्चर्यकर्म वास्तव में बड़ा ही शिक्षाप्रद है। इस से हम सीखते हैं, कि यदि हम अपनी प्रत्येक वस्तु, अपनी प्रत्येक योग्यता, चाहे वह कितनी भी छोटी और निर्बल क्यों न हो, प्रभु को सौंप दें तो वह उसी छोटी सी निर्बल वस्तु का उपयोग बहुतायत से कर सकता है, जिसकी कि हम कदाचित् कल्पना भी नहीं कर सकते।

जब हम उन पांच रोटियों और दो मछलियों के ऊपर विचार करते हैं, तो हमें वे बहुत थोड़ी सी दिखाई देती हैं। अन्द्रियास ने यीशु से कहा, कि इतने सारे लोगों के बीच में इतने से भोजन का क्या महत्त्व है। वह, हमारी ही तरह, इस बात को नहीं देख सका कि वही थोड़ा सा भोजन जब प्रभु के हाथ में दे दिया जाएगा, तो वह बहुतायत से भी अधिक सिद्ध होगा। वह लड़का, जिसके पास वह थोड़ी सी रोटियां और मछलियां थीं, उसके निकट उस भोजन का क्या महत्त्व था? कदाचित् वह उसे स्वयं अपने आप ही खाता, या फिर हो सकता है कि वह अपने किसी मित्र को अपने साथ उस में से खिलाता। परन्तु वह यह नहीं जानता था कि प्रभु के द्वारा वही थोड़ा सा भोजन हज़ारों लोगों को तृप्त कर सकता है।

कितनी ही बार हम अपने आपको बहुत छोटा अनुभव करते हैं। अकसर हम सोचते हैं कि यदि मेरे पास इतना होता जितना कि उस व्यक्ति के पास है, तो मैं पता नहीं क्या-क्या करता; मैं दान देता, प्रभु की सेवा करता, प्रभु के कार्य के लिये जुटा देता। परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि प्रभु को अधिक नहीं परन्तु उसकी आवश्यकता है जो उसे स्वेच्छा तथा प्रसन्नता से दिया जाए। बहुतेरे लोग सोचकर कहते हैं, कि मेरा जीवन अच्छा नहीं है, मैं तो बड़ा पापी हूं, मैं एक अच्छा मसीही कभी भी नहीं बन सकता, मैं कभी भी इस योग्य नहीं हो सकता कि प्रभु की सेवा कर सकूं व उसके किसी काम का आ सकूं। परन्तु मित्रो, आप चाहे कितने भी अयोग्य, अधर्मी और निर्बल क्यो न हों, यदि आप अपने आपको, जिस स्थिति में भी आप हैं, प्रभु को सौंप दें तो प्रभु के पास इतनी सामर्थ है कि वह आपके टूटे-फूटे अयोग्य जीवन को इतना अधिक प्रभावशाली और योग्य बना सकता है जिसकी कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते। उस समय यह कौन सोच सकता था कि थोड़ी सी देर में ही वह पाँच रोटियां और दो मछलियां हज़ारों लोगों के बीच में बांटी जाएंगी, और वे सब उसी के द्वारा तृप्त किए जाएंगे? वास्तव में आप इसका अनुमान नहीं लगा सकते कि आपके साधारण जीवन, आपकी छोटी-छोटी योग्यताएं, और अनेकों ऐसी वस्तुएं जो आपके पास हैं, जिन्हें आप निर्बल और महत्त्वरहित समझते हैं, यदि आप उन सब को पूर्णरूप से प्रभु को सौंप दें तो उनके कारण हज़ारों लोगों के जीवन बदल सकते हैं, यह देश बदल सकता है, यह संसार बदल सकता है।

जब प्रभु ने आरम्भ में अपने चेलों को चुना था तो वे अयोग्य अनपढ़ मछुए थे। परन्तु जब उन्होंने उसकी पुकार सुनी तो वे सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिये। तो फिर क्या हुआ? प्रेरितों १७ : ६ में हम पढ़ते हैं, कि उस समय के लोग उनके बारे में कहते थे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने जगत को उलटा-पुलटा कर दिया है। उन्हों ने लोगों के मनों में एक हलचल मचा दी थी। प्रभु ने उन्हें उत्साह और

सामर्थ से भर दिया था। वे यीशु के सुसमाचार, उसके पुनःरुत्थान का प्रचार सब लोगों के बीच में निडर होकर करते थे। प्रेरितों ४ अध्याय में हमें एक बड़ा ही रोचक वर्णन मिलता है। लिखा है, प्रेरित पतरस और यूहन्ना को यीशु का प्रचार करने के कारण मन्दिर के याजकों, सरदारों और यहूदियों ने पकड़कर हवालात में बन्द कर दिया। दूसरे दिन जब उन के पुरनिए, शास्त्री और महायाजक इत्यादि इकट्ठे हुए, तो दोनों प्रेरितों को उनके सामने लाया गया। तब वे पतरस और यूहन्ना से पूछने लगे, कि ये सब आश्चर्य-पूर्ण कार्य और प्रचार इत्यादि तुम किस की सामर्थ से और क्यों कर रहे हो? वे लोग नहीं चाहते थे कि यीशु के नाम से कुछ भी किया जाए, क्योंकि इन्हीं लोगों ने कुछ ही दिन पूर्व यीशु को क्रूस पर चढ़वाया था। यहां हम देखते हैं कि प्रेरित पतरस और यूहन्ना बड़े-बड़े हाकिमों के सामने खड़े थे। परन्तु हमें यह पढ़कर बड़ा ही आश्चर्य होता है, कि वहाँ भी दोनों प्रेरितों ने बड़े उत्साह और निर्भयता के साथ उन्हें अपने विश्वास का उत्तर दिया, यहां तक कि उन्हों ने उन लोगों को भी यीशु का सुसमाचार सुनाया, उन्हों ने कहा, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में, और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।" ऐसी स्थिति में इन बातों को सुनकर, वे पुरनिये, सरदार और महायाजक बड़े ही आश्चर्य चकित हुए। सो लिखा है, "जब उन्हों ने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।" (प्रेरितों ४ : १३)। वे जो अनपढ़ और साधारण मनुष्य थे, यीशु के सम्पर्क में आने के बाद योग्य और महान् बन गए थे।

जब आरम्भ में परमेश्वर ने मूसा पर प्रगट होकर उसे आज्ञा देकर कहा, कि तू मिस्र देश में जाकर इस्राएलियों को मिस्रियों के दासत्व से छुड़ा ले आ, तो मूसा को यह सुनकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उसने परमेश्वर से कहा, "मैं कौन हूं जो फ़िरौन के पास जाऊं, और इस्रालियों को मिस्र से निकाल ले आऊं?" मूसा उस समय यह न देख सका कि वह जो उसे आज्ञा देकर भेज रहा है वह, वह सर्व-

शक्तिमान् परमेश्वर पिता है जिसने सम्पूर्ण सृष्टि को अपने सामर्थपूर्ण वचन के द्वारा रचा है, जो रेत के एक किनके को लेकर एक महान् पर्वत के रूप में बदल सकता है, तथा जो किसी भी छोटी-से-छोटी एक निर्बल वस्तु को लेकर एक महान् शक्तिशाली वस्तु के रूप में बदल सकता है। यह कहने के विपरीत, कि प्रभु जैसा भी मैं हूं, जिस स्थिति में भी मैं हूं, अपनी त्रुटियों और अयोग्यताओं के साथ, मैं अपने आपको तेरी आज्ञानुसार करने के लिये तुझे सौंप देता हूं। मूसा अपनी अयोग्यताओं, अपनी त्रुटियों और निर्बलताओं को देखने लगा। उस ने कहा, परमेश्वर देख, मैं तो बिल्कुल अयोग्य हूं, मैं कुछ भी नहीं कर सकता, उस ने कहा, मैं तो बोलने में निपुण नहीं हूं, मैं तो मुंह और जीभ का भद्दा हूं। (निर्गमन ४ : १०)। परन्तु परमेश्वर ने मूसा से कहा, मूसा निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा। किन्तु मूसा को अभी भी संदेह था। सो परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तेरे हाथ में वह क्या है?" मूसा ने उत्तर देकर कहा, लाठी। परमेश्वर ने मूसा से कहा उसे भूमि पर डाल दे। और निर्गमन ४ अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि भूमि पर डालते ही वह लाठी एकदम एक सर्प बन गई, तब तो मूसा उसके सामने से भागा। परमेश्वर ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ पकड़ ले। और जैसे ही मूसा ने उसे छुआ वह एकदम फिर एक लाठी बन गई।

सो वह जो मूसा के हाथ में केवल एक लाठी थी परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से उसे बदल डाला। और आगे हम पढ़ते हैं, कि जब मूसा ने अपने आपको परमेश्वर को सौंप दिया, तो वही डरपोक मूसा सारे इस्राएली लोगों का एक बहुत बड़ा अगुवा बना। वह निर्भय और निडर होकर मिस्रियों के राजा फ़िरौन के सामने गया, और परमेश्वर की सामर्थ से उसने फ़िरौन के सामने ऐसे बड़े-बड़े कार्य किये कि फ़िरौन घबरा गया। और अन्त में हम पढ़ते हैं, कि उसे भयभीत और विवश होकर इस्राएलियों को छोड़ना पड़ा।

पुराने नियम में, १ शमुएल १७ अध्याय में, हम एक और घटना के बारे में पढ़ते हैं। उस समय शाऊल नाम का एक व्यक्ति इस्राएलियों

का राजा था। पलिश्तियों ने उस समय इस्राएलियों के विरोध में युद्ध करने के लिये अपनी सेनाओं को इक्ट्ठा किया। जब दोनों ओर की सेनाएं युद्ध के लिये तैयार खड़ीं थीं, तो हम पढ़ते हैं, "तब पलिश्तियों की छावनी में से एक वीर गोलियात नाम का निकला, जो गत नगर का था, और उसके डील की लम्बाई छः हाथ एक बित्ता थी। उसके सिर पर पीतल का टोप था; और वह एक पत्तर का झिलम पहिने हुए था, जिसका तौल पांच हज़ार शेकेल पीतल का था। उसकी टांगों पर पीतल के कवच थे, और उस से कान्धों के बीच बरछी बन्धी थी। उसके भाले की छड़ जुलाहे की डोंगी के समान थी, और उस भाले का फल छः सौ शेकेल लोहे का था, और बड़ी ढ़ाल लिये हुए एक जन उसके आगे-आगे चलता था। वह खड़ा होकर इस्राएली पांतियों को ललकार के बोला, तुम ने यहां आकर लड़ाई के लिये क्यों पांति बान्धी है? क्या मैं पलिश्ती नहीं हूं, और तुम शाऊल के आधीन नहीं हो? अपने में से एक पुरुष चुनो, कि वह मेरे पास उतर आए यदि वह मुझसे लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएंगे; परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूं, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी। फिर वह पलिश्ती बोला, मैं आज के दिन इस्राएली पांतियों को ललकारता हूं, किसी पुरुष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें।" लिखा है, "उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त डर गए।" उनके बीच में कोई ऐसा नहीं था जो उस मनुष्य की ललकार का उत्तर दे सके। और, हम पढ़ते हैं, कि वह पलिश्ती निरन्तर चालीस दिन तक आ आकर अपनी ललकार को दोहराता रहा।

शाऊल की सेना में एलीआब, अबीनादाब, और शम्मा नाम के तीन भाई भी थे। उनके एक भाई का नाम दाऊद था। दाऊद का काम भेड़ बकरियां इत्यादि चराने का था। सो दाऊद के पिता ने दाऊद को कुछ भोजन इत्यादि देकर कहा कि यह अपने भाईयों को

लड़ाई के मैदान में पहुंचा आ। सो दाऊद चल पड़ा। जब वहां वहां पहुंचा तो उसने चारों तरफ़ इस्राएलियों को बड़े भय में देखा। उसके मन में यह जानने की इच्छा उत्पन्न हुई कि आखिर बात क्या है, ये लोग इतने डरे हुए और भयभीत क्यों दिखाई देते हैं। सो, उसे पता चला कि इस प्रकार से एक पलिश्ति योद्धा उन्हें ललकार रहा है। दाऊद ने सब कुछ सुनकर, उन से कहा, वह खतना रहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे ? उस ने कहा, किसी मनुष्य का मन उसके कारण कच्चा न हो मैं जाकर उस पलिश्ती से लड़ूंगा। सब लोग यह सुनकर अश्चर्यचकित हो गए, क्योंकि दाऊद अभी एक छोटा लड़का ही था। सब उसे मना करने लगे। राजा शाऊल ने उस से कहा, "तू जाकर उस पलिश्ती के विरुद्ध नहीं युद्ध कर सकता, क्योंकि तू तो लड़का ही है, और वह लड़कपन ही से योद्धा है।" परन्तु दाऊद ने कहा, मैं अवश्य जाकर उसे मारूंगा, क्योंकि उस ने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है। उस ने कहा, परमेश्वर जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा। और दाऊद रणभूमि की ओर चल पड़ा, लिखा है, "तब उस ने अपनी लाठी हाथ में ले नाले में से पांच चिकने पत्थर छांटकर अपनी चरवाही की थैली, अर्थात् अपने झोले में रखे; और गोफ़न हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट चला। और पलिश्ती चलते-चलते दाऊद के निकट पहुंचने लगा, और जो जन उसकी बड़ी ढाल लिए था वह उसके आगे-आगे चला। जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; क्योंकि वह लड़का ही था, और उसके मुख पर लाली झलकती थी, और वह सुन्दर था। तब पलिश्ती ने दाऊद से कहा, क्या मैं कुत्ता हूं, कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है ? तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा। फिर पलिश्ती ने दाऊद से कहा, मेरे पास आ, मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों और बन पशुओं को दे दूंगा। दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिये हुए मेरे पास आता है;

परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तूने ललकारा है.....यहोवा तलवार वा भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिये कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा। जब पलिश्ती उठकर दाऊद का सामना करने के लिये निकट आया तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का सामना करने के लिये फुर्ती से दौड़ा। फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर उसमें से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफ़न मे रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि पर मुंह के बल गिर पड़ा। यों दाऊद ने पलिश्ती पर गोफ़न और एक ही पत्थर के द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला; परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार न थी।"

सो दाउद के हाथ में वह जो केवल एक छोटा पत्थर ही था, जब उस ने उसका उपयोग प्रभु के नाम से किया तो वही छोटा सा पत्थर संसार में एक बहुत शक्तिशाली हथियार बन गया। इस में कोई संदेह नहीं कि यदि परमेश्वर दाऊद के साथ न होता, तो दाऊद के लाखों पत्थर भी उस योद्धा पर कभी प्रबल न होते। परन्तु दाऊद ने केवल एक ही पत्थर से उस बड़े योद्धा को मार डाला, क्योंकि परमेश्वर दाऊद के साथ था। दाऊद जानता था कि परमेश्वर उसके साथ है क्योंकि उस ने अपने आपको परमेश्वर को सौंप रखा था। उस ने कहा, मैं नहीं परन्तु प्रभु मेरे साथ होकर लड़ेगा।

क्या आपने अपने आपको परमेश्वर को सौंपा है? आप कदाचित् अयोग्य हों, अनपढ़ हों, निर्बल तथा अधर्मी हों। कदाचित् आप निर्धन हों, रोगी वा असहाय हों, परन्तु आप चाहे जैसे भी हों, प्रभु आप को स्वीकार करने के लिये तैयार है। वह आपके जीवन को एक उत्तम जीवन बनाना चाहता है। वह आपको संसार की चिन्ता और निराशा से दूर करके, आपको अनन्तकाल के लिये स्वर्गीय आनन्द की आशा देना चाहता है, वह आपकी आत्मा को बचाना चाहता है। केवल यदि आप

आज अपने आप को उसे सौंप दें।

यदि आप अपने सारे मन से उसमें विश्वास करेंगे कि वह आपके पापों के कारण क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ, और यदि आप अपने पापों से मन फिराकर पाप के लिये मर जाएंगे, और उसके नाम से बपतिस्मा लेकर अपने पुराने मनुष्यत्व को जल के भीतर गाड़ देंगे, तो वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार आपका उद्धार करेगा। और भविष्य में यदि आप पूर्ण-रूप से अपने आप को उसे सौंप देंगे, तो वह जीवनभर आपकी अगुवाई करेगा, और आपके भीतर उस शान्ति और सामर्थ को भर देगा जो मनुष्यों की समझ से परे है। क्या आप उसके इस नम्र निवेदन का उत्तर नहीं देंगे? उस ने कहा, "मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।" (प्रकाशित-वाक्य ३:२०)।

यीशु का पुनरुत्थान

मित्रो :

क्या आप जानते हैं कि यीशु का पुनरुत्थान ही उसे ईश्वरीय या परमेश्वर का पुत्र सिद्ध करता है ? यदि क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद यीशु मुर्दों में से नहीं जी उठता तो वह कभी भी मसीह सिद्ध नहीं होता। वास्तव में, मुर्दों में से जी उठने के कारण ही, जिस प्रकार से कि रोमियों १ : ४ में लिखा है, वह सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा।

यीशु के मुर्दों में से जी उठने के कुछ ही समय पश्चात् जब प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थुस में कलीसिया के नाम पत्र लिखा, तो उस ने उन से कहा, "हे भाईयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुमने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैंने सबसे पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" (१ कुरिन्थियों १५ : १-४)।

वास्तव में, १ कुरिन्थियों की पत्री का पूरा पन्द्रह अध्याय पुनरुत्थान के विषय पर ही लिखा गया है। मत्ती २७ अध्याय में हमें यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की घटना का वर्णन मिलता है। हम पढ़ते हैं, कि क्रूस पर उसकी मृत्यु के बाद, अरिमतियाह के यूसुफ़ नाम एक व्यक्ति ने यीशु की लोथ को लेकर एक कब्र में गाड़ा। हम पढ़ते हैं, "उस ने पीलातुस

के पास जाकर उसकी लोथ मांगी। इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। यूसुफ़ ने लोथ को लेकर उसे उज्जवल चादर में लपेटा। और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उस ने चटान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया।"

"दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, महायाजकों और फ़रीसियों ने पीलातुस के पास इक्ट्ठे होकर कहा। हे महाराज, हमें स्मरण है, कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा। सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उस के चेले आकर उसे चुरा ले जाएं, और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है: तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा। पीलातुस ने उन से कहा, तुम्हारे पास पहरुए तो हैं, जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। सो वे पहरुओं को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की।" (मत्ती २७ : ५७-६०,६२-६६)।

सो, जबकि उन लोगों ने अपनी ओर से पूर्ण रूप से कब्र की सुरक्षा का प्रबन्ध कर रखा था, परन्तु यह इस बात का प्रमाण नहीं था कि यीशु की देह उस कब्र में दफ़न रहेगी। मत्ती २८ अध्याय के अनुसार, तीसरे दिन भोर होते ही "एक बड़ा भुईंडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्ज्वल था। उसके भय से पहरुए कांप उठे, और मृतक समान हो गए।" और लिखा है, उसी समय कुछ स्त्रियां कब्र को देखने आईं, "स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो: मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था। और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है, और देखो, "वह तुम से पहिले गलील को जाता है, वहां उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने

तुम से कह दिया। और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गईं। (मत्ती २८ : १-८)।

सो इस प्रकार से हम यीशु के जी उठने के विवरण को पढ़ते हैं। कि जी उठने के बाद, चालीस दिन तक यीशु अनेकों लोगों को दिखाई देता रहा। मत्ती २८ : १८-२० में हम पढ़ते हैं कि वह अपने ग्यारह प्रेरितों के पास आया और उनसे मिलकर उस ने उनसे कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।"

प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक अपनी पुस्तक का आरम्भ इन शब्दों के साथ करता है, "हे थियुफिलुस, मैंने पहिली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी, जो यीशु ने आरम्भ में किया और करता और सिखाता रहा। उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उस ने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया। और उस ने दुख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा : और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। और उन से मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो।" और ८ तथा ९ पदों में वह लिखता है, कि उस ने उन से कहा, "जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे। यह कहकर वह उन के देखते-

देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उनकी आखों से छिपा लिया।"

और इस घटना के दस दिन के बाद "जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आन्धी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।" (प्रेरितों २ : १-४)। यहां हम पढ़ते हैं कि उस समय बहुतेरे देशों के यहूदी लोग यरूशलेम में एकत्रित थे। वे सब एक ही प्रकार की भाषा नहीं समझते थे। किन्तु, जब प्रेरितों ने बोलना आरम्भ किया, तो वे सब अपनी-अपनी भाषा में उनकी बातों को सुनने और समझने लगे, क्योंकि प्रेरित लगभग सोलह अन्य-अन्य भाषाओं में बोल रहे थे। इस सब से वे लोग बड़े ही चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, कि यह क्या हुआ चाहता है? और उनमें से कुछ ने यह भी कहा, कि ये तो नई मदिरा के नशे में हैं। परन्तु लिखा है कि तब, प्रेरित "पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है।" और फिर वह उन्हें पूरी स्थिति से परिचित कराता है, कि किस प्रकार से भविष्यद्वक्ता ने कहा था, और यह सब उसी के अनुसार हो रहा है। और कुछ ही देर में, फिर वह उनका ध्यान परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की ओर आकृषित करके कहता है, "हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो: कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की

ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया : क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।" यहां से हम देखते हैं कि पतरस ने अपने विशेष विषय, अर्थात् यीशु मसीह के पुनःरुत्थान, पर आने में कोई समय व्यर्थ नहीं किया। और फिर हम देखते हैं कि यीशु के जी उठने के बारे में वह उन्हें कुछ विशेष प्रमाण देता है।

सबसे पहले, उस ने उन्हें दाऊद की एक भविष्यद्वाणी का स्मरण दिलाया। ये लोग दाऊद को परमेश्वर का एक भविष्यद्वक्ता मानते थे। सो, २५ पद से आरम्भ करके उसने कहा "क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, कि मैं प्रभु को सर्वदा अपने सामने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊं। इस कारण मेरा मन अनन्दित हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई; बरन मेरा शरीर भी आशा में बसा रहेगा। क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा। तू ने मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा। हे भईयो, मैं उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूं कि वह तो मर गया, और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहां वर्तमान है। सो भविष्यद्वक्ता होकर और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है, कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा। उसने होनहार को पहिले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई।" सो इस प्रकार से, उसने उन्हें दाऊद की भविष्यद्वाणी का उदाहरण देकर समझाया।

दाऊद भविष्यद्वक्ता ने जो कि यीशु से लगभग एक हज़ार वर्ष पूर्व हुआ था, यीशु के विषय में भविष्यद्वाणी करके कहा था कि वह मृत्यु के बाद मुर्दों में से जी उठेगा।

यीशु के पुनरुत्थान से सम्बन्धित दूसरी बात और उसके प्रमाण का उल्लेख ३२ पद में करके वह कहता है, "इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिस के हम सब गवाह हैं।" ये वे लोग थे जिन्होंने यीशु को क्रूस के ऊपर मरा हुआ देखा था, परन्तु फिर तीसरे दिन उन्हों ने उसी यीशु को जीवित देखा था। वास्तव में उन्हें इस बात की बिल्कुल भी आशा नहीं थी कि यीशु मुर्दों में से जी उठेगा। उसकी मृत्यु के बाद, उनके विचार में सब कुछ समाप्त हो चुका था। यद्यपि यीशु ने अपनी मृत्यु से पूर्व स्वयं कहा था, कि यह अवश्य है कि वह मारा जाएगा और तीन दिन के बाद जी उठेगा। परन्तु तौभी वे कदापि यह आशा नहीं करते थे कि वह वास्तव में जी उठेगा। सो वे किसी भी रूप में यीशु के पुनःरुत्थान की एक कहानी नहीं गढ़ सकते थे। वास्तव में, यीशु को फिर से जीवित देखकर वे सब उतने ही चकित थे, जितने कि अन्य लोग। उनमें से एक के बारे में हम पढ़ते हैं, कि यीशु के जी उठने के बाद, जब अन्य प्रेरितों ने उसे बताया कि हम ने प्रभु को जीवित देखा है, तो वह कदापि यह मानने के लिये तैयार नहीं था, उस ने कहा, कि जब तक मैं स्वयं उसे छूकर न देख लूं और उसके घावों में अपने हाथ डालकर न देख लूं तब तक मैं यह बात स्वीकार नहीं कर सकता। निःसंदेह, वे उसके जी उठने की बिल्कुल भी आशा नहीं रखते थे। इसके अतिरिक्त, हम देखते हैं, कि झूठ बोलकर उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता था। परन्तु यीशु मसीह के मुर्दों में से जी उठने की गवाही देने के कारण उन्हें अनेकों अत्याचारों वा संकटों का सामना करना पड़ा, और केवल एक प्रेरित के अतिरिक्त सभी प्रेरितों को यीशु के पुनःरुत्थान का प्रचार करने के कारण भयंकर रूप से मृत्यु का सामना करना पड़ा। वास्तव में, यदि वे झूठ बोल रहे

थे तो वे जानते थे कि इसके कारण उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा, परन्तु इसके विपरीत उन्हें सब कुछ, और स्वयं अपने प्राणों को भी खोना पड़ेगा।

मनुष्य को किसी प्रकार के लाभ की प्राप्ति के कारण झूठ बोलने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। परन्तु यह बात कदापि मानने के योग्य नहीं हैं कि लोग अपने आप को ही हानि पहुंचाने के लिये जान-बूझकर झूठ बोलें। यदि वे झूठ ही बोल रहे थे, तो उन सब संकटों व अत्याचारों से बचने के लिये, और अपने प्राणों को बचाने के लिये, उस समय उनका यही कह देना बहुत होता कि वे गलत कह रहे थे, और इतना कहकर वे स्वतंत्र हो सकते थे। यह बात बिल्कुल भी विश्वास करने योग्य नहीं है कि वे लोग अपने प्राणों को एक ऐसी कथा का प्रचार करने के कारण दे दें जो असत्य थी। उन्होंने यीशु को देखा था, वे उसे व्यक्तिगत रूप से जानते थे। वे तीन वर्ष से भी अधिक समय तक उसके साथ-साथ रहे थे। और इस कारण जब उसकी मृत्यु के बाद उन्हों ने उसे फिर से जीवित देखा तो वे उसे पहचान सकते थे, उनकी गवाही से इन्कार नहीं किया जा सकता, उनकी गवाही का प्रमाण सभी अन्य प्रमाणों से बहुत अधिक शक्तिशाली है।

प्रभु यीशु के मुर्दों में से जी उठने को प्रमाणित करनेवाली तीसरी बात का उल्लेख करके, प्रेरितों २ : ३३ में उसने कहा, "इस प्रकार परमेश्वर के दहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उस ने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो।" अर्थात्, जो कुछ भी वे लोग वहां देख रहे थे और सुन रहे थे, तथा जिसके फलस्वरूप वे अत्यन्त चकित थे, उस सबका कारण यह था कि प्रेरितों पर पवित्र आत्मा उंडेला गया था। और उस समय पवित्र आत्मा की उपस्थिति इस बात का एक बहुत बड़ा प्रमाण थी कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है। क्योंकि यीशु ने उनसे प्रतिज्ञा करके कहा था, कि स्वर्ग में पिता के पास वापस जाने के बाद

वह उनके ऊपर पवित्र आत्मा को भेजेगा। (यूहन्ना १६ : ३०; यूहन्ना १४ : २६)। और अब, जबकि पवित्र आत्मा प्रेरितों पर बड़े ही आश्चर्यजनक ढंग से उतरा था तो यह इस बात का एक पक्का प्रमाण था कि यीशु वास्तव में जी उठा है।

सो यीशु के मुर्दों में से जी उठने को प्रमाणित करनेवाली जिन तीन बातों के ऊपर, इस पाठ में पतरस ने लोगों का ध्यान दिलाया, उस में से पहिली थी दाऊद की भविष्यद्वाणी, दूसरी, प्रेरितों की गवाही, और तीसरी थी, उस समय प्रेरितों पर पवित्र आत्मा की उपस्थिति। और इसी सच्चाई के आधार पर, प्रेरितों २ : १६ में, उस ने घोषित करके कहा, "सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।"

और फिर लिखा है, कि "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाईयो, हम क्या करें? पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा.....सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।" (प्रेरितों २ : ३७-३९, ४१)।

इस प्रकार से हम देखते हैं, कि लगभग तीन हज़ार लोगों ने यह स्वीकार किया, कि जिस यीशु को उन्होंने क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला था, वही मुर्दों में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा। उन्हों ने उस पर विश्वास किया, अपने पापों से मन फिराया, और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बप-

तिस्मा लिया। और इस तरह से, वे यीशु के अनुयायी बन गए। अब वे यह कहकर उसका प्रचार कर सकते थे, "कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" (१ कुरिन्थियों १५ : ३-४)।

खाली कब्र

मित्रो :

सम्पूर्ण मसीहीयत में इस से बढ़कर महत्त्व कोई अन्य बात नहीं रखती कि अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन यीशु मुर्दों में से जी उठा। यदि यीशु मुर्दों में से नहीं जी उठता तो वह कभी भी मसीह और संसार का उद्धारकर्त्ता सिद्ध नहीं होता। और यदि वह वास्तव में जी उठा, तो इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वह ईश्वरीय और परमेश्वर का पुत्र था। यदि इस बात का प्रर्याप्त प्रमाण है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा, तो इस पर कदापि संदेह नहीं किया जा सकता कि वह पवित्र आत्मा की सामर्थ से एक कुँवारी से उत्पन्न हुआ, और उस ने बहुतेरे अश्चर्यकर्म किये। रोमियों १:४ के अनुसार, वह "मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।" यीशु के जी उठने के सम्बन्ध में हमारे पास पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां हैं। दाऊद ने भजन संहिता के १६ अध्याय में लिखा था, "क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा।" और लगभग एक हज़ार वर्ष बाद जब पतरस पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार कर रहा था, जैसा कि हम प्रेरितों २ अध्याय में पढ़ते हैं, तो उसने इन्हीं शब्दों का उल्लेख करके लोगों से कहा, "हे भाईयो, मैं उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूं कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उस की कब्र आज तक हमारे यहां वर्तमान है। सो भविष्यद्वक्ता होकर और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है, कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिहांसन पर बैठाऊंगा। उसने होनहार को पहिले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी

की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई।"

नया नियम यीशु के जी उठने के प्रमाणों से परिपूर्ण है। यूहन्ना २:१९-२२ के अनुसार, यीशु ने लोगों से कहा, "कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा। यहूदियों ने कहा ; इस मन्दिर के बनाने में छियालिस वर्ष लगे हैं, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा ? परन्तु उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था। सो जब वह मुर्दों में से जी उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया, कि उसने यह कहा था ; और उन्होंने पवित्र शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था प्रतीति की।" फिर, लूका ९:२२ में "उसने कहा, मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीसरे दिन जी उठे।" फिर, मत्ती १२:४० के अनुसार उसने अपने विषय में यूनुस भविष्यद्वक्ता का उदाहरण देकर कहा, "यूनुस तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।" और फिर, मत्ती १६:२१ में हम पढ़ते हैं कि "उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरुशलेम को जाऊं, और पुरनियों और यहायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊं ; और मार डाला जाऊं ; और तीसरे दिन जी उठूं।" और एक अन्य स्थान पर, जब वह अपने चेलों से बातें कर रहा था, तो मत्ती २०:१८,१९ में लिखा है, कि उसने इस विषय पर और भी अधिक स्पष्टता से बताकर उन से कहा, "कि देखो, हम यरुशलेम को जाते हैं ; और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको घात के योग्य ठहराएंगे। और उसको अन्यजातियों के हाथ सौपेंगे, कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।"

इसके अतिरिक्त, नया नियम यीशु के पुनःरुत्थान के विषय में हमें विस्तार से बताता है, कि सप्ताह के पहिले दिन वह जी उठा। सबसे पहिले इस बात का पता कुछ स्त्रियों को लगा। उन स्त्रियों ने देखा, कि वह बड़ा पत्थर जो यीशु की कब्र के मुंह पर रखा हुआ था अपने स्थान पर से हट चुका था। उन्होंने वहां स्वर्गदूतों को उपस्थित पाया। और जी उठने के बाद मसीह अनेकों लोगों को दिखाई दिया, उसने उनसे बातें की, उनके साथ भोजन खाया। उसने हर प्रकार से उन पर यह प्रमाणित कर दिया कि वह वही प्रभु है जिसे कुछ ही दिन पूर्व क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था।

वह खाली कब्र इस बात का एक बहुत बड़ा प्रमाण था। उस खाली कब्र से इन्कार नहीं किया जा सकता। उसकी मृत्यु के बाद जिस कब्र में उसे गाड़ा गया था, वह कब्र तीसरे दिन खाली पड़ी थी। यीशु की देह वहां नहीं थी। इस बात को उसके मित्रों और शत्रुओं दोनों ने ही स्वीकार किया। इस कारण वह खाली कब्र एक मुख्य प्रमाण है। किन्तु इसे स्वीकार करने के विपरीत कि यीशु वास्तव में मुर्दों में से जी उठा, कुछ लोग उस खाली कब्र के बारे में तरह-तरह के स्पष्टिकरण देने का प्रयत्न करते हैं।

कुछ लोगों के विचारानुसार यीशु क्रूस पर वास्तव में नहीं मरा था, परन्तु इसके विपरीत वह बेहोश या मूर्छित हो गया था, और बाद में वह होश में आ गया था। क्या बाइबल में इसका कोई प्रमाण है कि वह क्रूस पर मर चुका था ?

सबसे पहले हम देखते हैं, कि जब यीशु को पकड़ा गया, तो मृत्यु दन्ड देने से पहिले उसे कोड़ों से मारा गया था। (मत्ती २७:२६)। ऐसे उदाहरणों का उल्लेख किया जा सकता है जबकि कुछ लोगों की मृत्यु इस प्रकार की मार पड़ने से ही हो जाती थी। फिर, उन्होंने नोकीले काटों का एक मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, जिसके कारण लोहू की मोट-मोटी बूंदे उसके माथे से टपकने लगीं।

फिर उन्होंने उसके भारी क्रूस को उसके कांधों पर रखकर उसे लेकर चलने पर विवश किया। मार्ग में उन्हें शमौन नाम का एक कुरेनी मनुष्य मिला जिसे उन्होंने बेगार में पकड़ा कि वह यीशु के क्रूस को लेकर चले। निःसंदेह कोड़ों की मार से उसकी देह पर अनेकों घाव बने हुए थे, और वह इस प्रकार दुर्बल हो चुका था कि स्वयं अपने आपको भी नहीं सम्भाल सकता था। सो उन्होंने शमौन को पकड़ा कि वह उसका क्रूस लेकर चले। फिर जब वह उस जगह पहुंचे जो खोपड़ी का स्थान कहलाता था, वहां उन्होंने उसे, उस क्रूस के ऊपर लिटाकर, उसके हाथों और पैरों को मोटी-मोटी कीलों से क्रूस के साथ जड़ दिया। फिर उन्होंने क्रूस को उठाकर, उसका निचला भाग भूमि में गाड़ दिया, और यीशु को मरने के लिये छोड़ दिया।

मरकुस हमें बताता है कि "पहर ही दिन चढ़ा था, जब उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया।" और मत्ती और मरकुस दोनों कहते हैं कि तीसरे पहर के लगभग यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए। इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु लगभग छः घन्टे तक, अर्थात् सुबह ९ बजे से दोपहर तीन बजे तक क्रूस के ऊपर लटका रहा। (मत्ती २७: ४५-५०)।

इसके अतिरिक्त, यूहन्ना १९ अध्याय से हम देखते हैं, कि यहूदियों का मान रखने के लिये, तथा उनके एक पवित्र दिवस के कारण, रोमी अधिकारियों ने यहूदियों की इच्छानुसार, क्रूस पर चढ़े तीनों व्यक्तियों को शीघ्र मार डालने के दृष्टिकोण से, सिपाहियों को आज्ञा देकर कहा, कि उनकी टांगे तोड़ दी जाएं। सो हम देखते हैं कि सिपाहियों ने आकर उन दोनों डाकुओं की टांगे तोड़ीं, परन्तु जब वे यीशु के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह पहले ही मर चुका है। वास्तव में, क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले यीशु पर घोर अत्याचार किया गया था, जिसका सामना उन डाकुओं को नहीं करना पड़ा था। परन्तु इस बात पर ध्यान दें कि यह घोषणा उन सिपाहियों ने की थी, उसके चेलों या

सम्बन्धियों ने नहीं, कि यीशु मर चुका था। यूहन्ना, जो इन सब बातों का गवाह था, बताता है कि उन्होंने "जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगें न तोड़ीं। परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर भेदा और उसमें से तुरन्त लोहु और पानी निकला।" (यूहन्ना १९:३३,३४)।

फिर, मरकुस १५:४४-४५ से हम देखते हैं कि जब अरिमतियाह का रहनेवाला यूसुफ़ नाम का एक व्यक्ति पीलातुस हाकिम के पास इस दृष्टिकोण से गया कि वह यीशु की लोथ को मांगकर उसे दफ़ना दे, तो पीलातुस को कुछ आश्चर्य हुआ कि वह इतने शीघ्र मर गया; सो इस पर उसने सूबेदार को बुलाकर उस से इस विषय में पूछताछ की, सो लिखा है, कि जब वह पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गया कि यीशु वास्तव में मर चुका है तो उसने उसकी लोथ दे देने की आज्ञा दी। सो, उसके शत्रुओं और मित्रों दोनों ने ही इस बात को स्वीकार किया कि कब्र में गाड़े जाने से पहले यीशु की मृत्यु हो चुकी थी।

अब, थोड़ी देर के लिये, यदि यह मान भी लिया जाए, जैसा कि कुछ लोगों का विचार है, कि यीशु क्रूस पर नहीं मरा परन्तु केवल बेहोश हो गया था, और कब्र में गाड़े जाने के बाद वह होश में आ गया था। और कब्र के मुंह पर रखे पत्थर को हटाकर वह बाहर आ गया और फिर लोगों की दृष्टि से छिप गया; तो हमारे पास इसका क्या उत्तर है, जैसा कि हम सब जानते हैं, कि उसके समर्थक और विरोधी दोनों ही इस बात को स्वीकार करते हैं कि क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले यीशु को कोड़ों से बुरी तरह पीटा गया था, क्रूस पर कई घन्टों तक लटके रहने के पश्चात् उसका पंजर भेदा गया था? रोमी सिपाहियों ने उसे जांचकर देखने के बाद कहा था कि वह मर चुका है। अब, यीशु यदि इस प्रकार से दन्डित होने, और इन सब बातों के घटने के बाद भी बच सकता था, तो यह एक बहुत बड़ा आश्चर्यकर्म

सिद्ध होता, और यह आश्चर्यकर्म उसके जी उठने के आश्चर्यकर्म से कदापि कुछ कम न होता। कौन इस बात की कल्पना कर सकता है, कि एक ऐसा मनुष्य जिसके हाथ वा पैर कीलों से छेदे गए हों, जिसके सिर पर उन कांटों के कारण अनेकों ज़ख्म हों जो उसके सिर पर एक मुकुट के रूप में गूंथकर रखे गए हों, और जिसके शरीर से खाल खींच लेनेवाले कोड़ों की मार के घाव लोहू टपका रहे हों, और जिसका पंजर शक्तिशालि सिपाहियों के बरछे से भेदा गया हो तथा फल-स्वरूप उसके जीवन का सारा लोहू निकल चुका हो, वह लगभग चालीस घन्टे एक मुहरबन्द कब्र के भीतर बन्द रहा हो, वही मनुष्य, बिना कुछ खाए-पीए, तीसरे दिन इतना शक्तिशाली हो सकता है, कि अपनी कब्र के मुंह पर रखे एक बड़े पत्थर को लुढ़काकर बाहर निकल आए? फिर, यदि वह इस असम्भव कार्य को कर भी लेता तो वह उन सिपाहियों की दृष्टि से कैसे बच सकता था जो उसकी कब्र पर पहरा देने के लिये बैठाए गए थे ? वे सिपाही उस कब्र के द्वार पर इसलिये बैठाए गए थे ताकि वे इस बात का ध्यान रखें कि कहीं उसके चेले आकर उसकी लोथ को कब्र में से निकाल न ले जाएं और लोगों से कहने लगें कि वह जी उठा है। सो इन बातों को ध्यान में रखकर यह कदापि स्वीकार नहीं किया जा सकता कि यीशु की मृत्यु क्रूस पर नहीं हुई, और कब्र में रखे जाने के बाद वह होश में आकर बाहर आ गया। यदि यीशु उस समय क्रूस पर रहीं मरा, तो फिर इसके बाद वह कहां रहा ? उसकी मृत्यु कब और कहां हुई ? उसके शत्रुओं तथा विरोधियों ने उसे ढूंढ़कर लोगों के सामने क्यों नहीं खड़ा कर दिया, ताकि वे इस बात को उन पर सदा के लिये प्रमाणित कर देते कि वह वास्तव में मरा नहीं था और इसलिये मुर्दों में से जी भी नहीं उठा ? मित्रो, वह खाली कब्र आज भी हमारे सामने इस बात का एक बहुत बड़ा प्रमाण है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा। और यदि यीशु मुर्दों में से नहीं जी उठा, तो तीसरे दिन वह कब्र खाली क्यों थी ? कहां गई उसकी देह ? इस प्रश्न के केवल दो ही सम्भव स्पष्टिकरण हो सकते हैं, अर्थात् या तो उसकी देह को मनुष्यों के हाथों

ने कब्र में से निकाला और या फिर ईश्वरीय सामर्थ से वह कब्र में से उठाया गया। पहली बात को दृष्टि में रखकर, हम केवल दो ही अनुमान लगा सकते हैं, अर्थात् यदि उसकी देह को मनुष्यों के हाथों ने निकाला, तो यह कार्य या तो उसके शत्रु कर सकते थे या फिर उसके मित्र।

जब हम उसके शत्रुओं के ऊपर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि यहूदी धर्म के अगुए, मुख्य रूप से, उसे मार डालने का अवसर ढूंढ़ रहे थे। वे अपने इस कार्य में, लोगों को यीशु के विरोध में उकसाने, और पीलातुस के ऊपर दबाव डालने के बाद सफ़ल हुए। (**मत्ती** २७:२० ; **मरकुस** १५:१५) उस ससय यहूदी क्योंकि रोमी सरकार के आधीन थे, इसलिये नियमानुसार उन्हें किसी व्यक्ति को मृत्यु दन्ड देने का अधिकार नहीं था। (**यूहन्ना** १८:३१)। किन्तु, रोमी अधिकारियों ने यीशु में मृत्यु दन्ड के योग्य कुछ भी दोष नहीं पाया। परन्तु यहूदियों के दबाव के कारण और उन्हें प्रसन्न करने के दृष्टिकोण से पीलातुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिये उन्हें सौंप दिया। जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया, और इस बात से संतुष्ट हो गए कि यीशु मर चुका है, तो उन्होंने उसकी देह को कब्र में सुरक्षित रखने के लिये यह प्रबन्ध किया, हम पढ़ते हैं, मत्ती २७:६२:—६६ में, कि "दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, महायाजकों और फ़रीसियों ने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा : हे महाराज, हमें स्मरण है, कि उस भरमाने-वाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा। सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएं, और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है: तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा। पीलातुस ने उन से कहा, तुम्हारे पास पहरुए तो हैं, जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। सो वे पहरुओं को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की।" यीशु के वे शब्द जो उसने अपने जीते जी कहे थे कि "मैं तीन दिन के बाद फिर जी

उठूंगा" उसके शत्रुओं को अच्छी तरह याद थे, उन्होंने इस बात पर विश्वास तो नहीं किया था, परन्तु वे चौकस रहना चाहते थे कि कहीं उसके चेले उसे निकालकर न ले जाएं। सो उन्हों ने यह सब कड़ा प्रबन्ध किया। इस से हमें इस प्रश्न को समझने में सहायता मिलती है, कि क्या उसके शत्रुओं ने उसे कब्र में से निकाला ? कदापि नहीं। बिल्कुल नहीं। क्योंकि वह पहले ही उनके अधिकार में था, वह ठीक उसी स्थान पर था जहां वे चाहते थे।

अब दूसरा प्रश्न हमारे सामने यह है, कि क्या उसके मित्रों ने उसे कब्र में से निकाला ? वास्तव में हमें ऐसा कोई भी कारण दिखाई नहीं देता जिसके फलस्वरूप वह ऐसा करते। इसके अतिरिक्त, यदि वे उसकी देह को कब्र में से निकालना भी चाहते, तौभी उस सब सुरक्षा के प्रबन्ध को ध्यान में रखकर, जो उसकी कब्र के ऊपर किया गया था, उनके लिये यह कार्य करना बिल्कुल असम्भव था। दूसरी ओर, यदि वे उसे निकालकर ले जाने में सफ़ल भी हो जाते। तो यीशु के शत्रुओं ने इस बात को प्रमाणित क्यों नहीं किया ? हम पढ़ते हैं, कि यीशु के जी उठने के बाद उसके चेले निडर होकर, उत्साह से भरकर, उसके पुनः-रुत्थान का प्रचार सब लोगों के बीच में करने लगे। सो क्यों नहीं यीशु के शत्रुओं ने उसके पुनःरुत्थान की कथा का प्रचार बन्द करवा दिया ? इसके लिये केवल यही आवश्यक होता कि वे यीशु को पकड़कर लोगों के सामने प्रस्तुत कर देते। निःसंदेह, उस समय, उस स्थिति में, यीशु अवश्य ही बड़ा रोगी और दुर्बल होता, और उसे पकड़ने में उन लोगों को कोई कठिनाई नहीं होती। यदि यीशु के चेलों ने उसकी देह को कब्र में से निकाला होता, तो उसके शत्रु उसकी देह को लोगों के सामने प्रस्तुत कर सकते थे, या इस प्रमाण को कि उन्होंने उसकी देह को चुराया है। और इस प्रकार से वह उसके पुनरुत्थान की कथा का प्रचार सदा के लिये बन्द करवा सकते थे।

परन्तु यीशु के चेले क्यों उसकी देह को चुरा कर ले जाते ?

अपनी झूठी गवाही के बदले में मरने से उन्हें क्या लाभ प्राप्त होता ? हम जानते हैं, कि लगभग सभी प्रेरितों ने यीशु के पुनःरुत्थान की कथा को प्रचार करने के कारण अपने प्राणों को जोखिमों में डाला। और जब महायाज़कों और पुरनियों ने उनसे कहा कि वे यीशु के नाम से न तो कुछ बोलें और न कुछ सिखलाएं, तो उन्होंनें उत्तर देकर कहा, "यह तो हम से हो नहीं सकता कि जो हमने देखा और सुना है, वह न कहें।" (प्रेरितों ४:२०)। उन्हों ने उसे क्रूस पर मरते देखा था, उसे कब्र में गाड़े जाते देखा था, और उसे फिर से जीवित देखा था। उन्होंने उस से बातें की थीं, उसे छूकर देखा था, वह जी उठने के बाद चालीस दिन तक उन्हें दिखाई देता रहा और उनसे बातें करता रहा।

यीशु के जी उठने का प्रमाण इतना बड़ा है कि उसे किसी भी तरह से अस्विकार नहीं किया जा सकता। वास्तव में, यीशु का पुनः रुत्थान सम्पूर्ण मसीहीयत में एक अत्यन्त ही विशेष तथा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके बिना मसीहीयत कुछ भी न होती, परन्तु इसके कारण मसीहीयत बड़ी महान् है। उस खाली कब्र का उत्तर केवल यही है, कि जिस यीशु को उन्होंने क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला, "उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया : क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।" (प्रेरितों २:२४)।

मैं एक मसीही क्यों हूं ?

मित्रो :

इस संसार में इस से बढ़कर महत्व और कोई अन्य बात नहीं रखती कि मेरी मृत्यु के बाद मेरी आत्मा का क्या होगा। मनुष्य इस संसार में रहकर चाहे कितना भी धन-सम्पत्ति वा मान-सम्मान इत्यादि क्यों न प्राप्त करले परन्तु एक दिन अवश्य ही उसे इन सब वस्तुओं को सदा के लिये छोड़कर इस संसार से जाना पड़ेगा। यह एक ऐसी सच्चाई है जिस से आप और मैं बड़ी अच्छी तरह से परिचित हैं। परन्तु प्रश्न यह है, कि इस संसार को छोड़कर मैं कहां जाऊंगा ? हम सब जानते हैं कि मनुष्य एक आत्मिक प्राणि है, उसके पास एक आत्मा है, क्योंकि उसकी सृष्टि परमेश्वर के स्वरूप वा समानता में हुई थी। इस कारण, वह आत्मिक भाव से सदा ही बना रहेगा। परन्तु इस शरीर से अलग होकर वह आत्मिक भाव से कहां रहेगा ? इसे मैं यह कहकर और स्पष्ट कर दूं, कि मान लीजिए यदि आज मेरी मृत्यु हो जाए, तो मैं आत्मिक रूप से कहां जाऊंगा ? या मेरी आत्मा अनन्त-काल तक कहां रहेगी ? मैं जानता हूं कि मैं अवश्य ही अनन्तकाल तक बना रहूंगा। कदाचित् तलवार या किसी अन्य हथियार से मैं मार डाला जाऊं, या मेरी मृत्यु किसी दुर्घटना में हो जाए, या फिर हो सकता है कोई रोग मेरी देह को छलनी कर दे और मेरी मृत्यु का कारण बने। परन्तु मैं जानता हूं, कि संसार का कोई भी मनुष्य इतना शक्तिशाली नहीं है, कोई भी हथियार इतना सामर्थ-पूर्ण नहीं है, कोई भी दुर्घटना इतनी भयंकर नहीं है, और कोई भी रोग इतना घातक नहीं है, कि वह मेरी आत्मा को नाश कर दे।

सो इस शरीर से अलग होकर मैं कहां रहूंगा ? मेरी आत्मा अनन्तकाल तक कहां रहेगी ? क्या आपने कभी इस बात पर गम्भीरता से सोचने का प्रयत्न किया ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका सामना संसार में प्रत्येक मनुष्य को करना आवश्यक है। चाहे आप गरीब हों या अमीर, स्त्री हों या पुरुष हों, आप चाहे किसी भी धर्म के मानने-वाले क्यों न हों, यह प्रश्न आज प्रत्येक मनुष्य के सामने है, कि मेरी मृत्यु के बाद मेरी आत्मा का क्या होगा ?

मनुष्य पापी है और परमेश्वर का वचन स्पष्टता से बताता है कि पाप की मजदूरी मृत्यु है। मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर से अलग है, और यदि इसी स्थिति में उसकी मृत्यु हो जाए, तो वह सदा के लिये परमेश्वर से अलग रहेगा। अर्थात्, जिस प्रकार से मत्ती २५ : ४६ में प्रभु यीशु ने कहा, कि वह अनन्त मृत्यु या अनन्त दन्ड भोगेगा। क्योंकि परमेश्वर के न्याय अनुसार प्रत्येक मनुष्य के लिये एक बार मरना और फिर न्याय का होना निश्चित है।

परन्तु रोमियों ८ : १ में हमें यह संदेश मिलता है कि "सो अब जो मसीह में हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं : क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।" इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर ने मनुष्य को दन्ड से बचने के लिये एक स्थान दिया है, और वह स्थान है यीशु मसीह। इसलिये, यदि मैं मसीह में हूं तो मुझ पर दन्ड की आज्ञा नहीं होगी; मुझे अनन्त दन्ड भोगने की कोई आव-श्यकता नहीं पड़गी। क्योंकि वह दन्ड जो मुझे मिलना चाहिए था उसे स्वयं प्रभु यीशु ने अपने ऊपर ले लिया, वह कर्ज़ा जो मुझे चुकाना चाहिए था, उसे स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने चुका दिया। सो यदि मैं मसीह में हूं, तो मुझ पर दन्ड की आज्ञा नहीं। यदि आज मेरी मृत्यु हो जाए तो मैं जानता हूं कि मैं कहां जाऊंगा, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर मेरी आत्मा को स्वीकार करेगा, मैं जानता हूं कि जब मेरा पृथ्वी पर का सा डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो मुझे परमेश्वर की ओर

से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बनाया हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है। (२ कुरिन्थियों ५ : १)। किन्तु, प्रश्न यह है, कि क्या आप एक मसीही हैं? क्या आप मसीह में हैं?

मैं एक मसीही हूं, और मैं आपकी आत्मा से प्रेम करता हूं, मैं चाहता हूं कि आप भी मसीह में हों ताकि आप दन्ड की आज्ञा से पार होकर अनन्त जीवन को प्राप्त करने की आशा में अपना जीवन बिताएं। क्या आपने कभी एक मसीही बनने के प्रश्न पर गम्भीरता से विचार किया? मैं चाहता हूं कि आप इस प्रश्न पर विचार करें। क्योंकि आपकी आत्मा का लक्ष्य पूर्णरूप से इसी एक प्रश्न के ऊपर निर्भर करता है, क्योंकि वे जो मसीह में हैं उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं, वे मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं। परन्तु यदि आप मसीह में नहीं हैं तो इस जीवन के बाद आपकी आत्मा का क्या होगा? आप कहां अनन्त-काल तक रहेंगे? प्रभु यीशु ने कहा, कि वे नरक में अनन्त दन्ड भोगेंगे।

मैं एक मसीही हूं और मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं एक मसीही क्यों हूं। सबसे पहिले, मैं एक मसीही इसलिये हूं क्योंकि मुझे आशा है कि एक दिन प्रभु मेरा उद्धार करेगा। कुछ वर्ष पूर्व जब मैंने यीशु मसीह के सुसमाचार को सुना, कि वह मेरे लिये स्वर्ग छोड़कर संसार में आया, उस ने इस पृथ्वी पर एक सिद्ध जीवन व्यतीत किया, उसने मेरे पाप के दन्ड को अपने ऊपर उठा लिया, उसने मेरे विरोध में न्याय की मांग को पूरा किया, और मुझे नरक के दन्ड से बचाने के लिये उसने स्वयं अपने आपको बलिदान कर दिया। तो मैंने यीशु मसीह पर विश्वास किया, और उसकी आज्ञानुसार मैंने अपने पापों से पश्चात्ताप किया, फिर जैसे उसकी आज्ञा को मुझे मरकुस १६ : १६ में से पढ़कर सुनाया गया, कि उसने कहा कि "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा,

परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा" सो मैंने उद्धार प्राप्त करने के लिये उस पर विश्वास लाकर बपतिस्मा लिया। अब मेरे पास यह आश्वासन था कि मेरे सारे पिछले पाप क्षमा हो चुके हैं, और मुझे प्रभु ने अपनी कलीसिया अर्थात् अपनी उस मन्डली में मिला लिया है जिसमें वे सब लोग हैं जिनका इस रीति से प्रभु की आज्ञा मानने पर उद्धार हुआ है। (प्रेरितों २ : ४७)।

मैं एक मसीही इसलिये हूं क्योंकि प्रभु की इन आज्ञाओं को मानने पर मैं एक उत्तम दौड़ में सम्मिलित हुआ, यह दौड़ "मसीही दौड़" है। और यदि इस दौड़ को में सफ़लता पूर्वक समाप्त कर लूंगा, तो मुझे आशा है कि एक दिन मुझे अनन्त जीवन का वह मुकुट मिलेगा जो कभी मुर्झाता नहीं। इस विषय में प्रेरित पौलुस बड़े ही सुन्दर ढंग से समझाकर कहता है, "क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में तो दौड़ते सभी हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है ? तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो। और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं। इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उसकी नाईं नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है।" (१ कुरिन्थियों ९ : २४-२६)। इसी विषय पर इब्रानियों की पत्री का लेखक, इब्रानियों १२ : १ में आगे कहता है, "इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो आओ हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।" इसलिये मसीही होने के कारण मैं एक ऐसी दौड़ में दौड़ रहा हूं, जिसके द्वारा मुझे आशा है कि यदि इस दौड़ को मैं सफ़लता पूर्वक समाप्त कर लूंगा, तो अन्त में मुझे अनन्त जीवन का वह मुकुट मिलेगा जो कभी मुरझाने का नहीं, परन्तु यह आवश्यक है कि मैं इस दौड़ में अन्त तक ईमानदारी और धीरज

के साथ दौड़ता रहुं, क्योंकि प्रकाशितवाक्य २ : १० में मैं पढ़ता हूं, कि प्रभु ने कहा कि "प्राण देने तक विश्वासी रह तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।"

और फिर, मैं एक मसीही इसलिये हूं क्योंकि मुझे आशा है कि एक दिन प्रभु यीशु अपनी प्रतिज्ञानुसार मुझे लेने के लिये वापस आ रहा है। वह मेरे और अन्य सभी विश्वासी मसीही लोगों के लिये स्वर्ग में स्थान तैयार करने गया है, और एक दिन वह अपनी प्रतिज्ञानुसार अवश्य ही वापस आएगा ताकि वह उन सब को जो उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं अपने साथ ले जाए। यूहन्ना १४ : १-३ में मैं पढ़ता हूं, कि यीशु ने स्वर्ग में जाने से पहले अपने चेलों से कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये, जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।" सो एक मसीही होने के कारण मुझे यह आशा है कि मेरा प्रभु एक दिन आकर मुझे अपने साथ ले जाएगा। मैं जानता हूं कि प्रभु मेरे इस जीवन-काल में चाहे न भी आए और चाहे मेरी मृत्यु भी हो जाए, परन्तु एक दिन वह अवश्य आएगा ; और जब वह आएगा उस दिन मैं उसकी सामर्थ से जिलाया जाऊंगा। युहन्ना ५ : २८,२९ में मैं उसके इन शब्दों को पढ़ता हूं, उसने कहा, "इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।"

कुछ समय पूर्व मैं ने एक व्यक्ति के बारे में पढ़ा था जो अपनी मृत्यु के बाद जी उठना नहीं चाहता था। सो उसने अपने सम्बन्धियों इत्यादि से कहा कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी देह को जलाया जाए और

उसकी राख को हवाई जहाज़ के द्वारा पृथ्वी पर अनेकों भागों में बखेर दिया जाए। किन्तु वह व्यक्ति परमेश्वर की सामर्थ को सीमित रूप से देख रहा था। वह परमेश्वर की सामर्थ को सीमित करने का प्रयत्न कर रहा था। परन्तु प्रभु ने कहा कि उस दिन सब जी उठेंगे। प्रकाशितवाक्य २०:१३ में हम देखते हैं कि प्रभु ने प्रेरित यूहन्ना को उस दिन के बारे में प्रकाशन करके बताया, कि उस दिन, "समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया ; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया।" सो इसलिये, याद रखिए, कि प्रभु के उस महान् दिन के आने पर सब जी उठेंगे ; जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये, और जिन्होंने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।

मैं इसलिये एक मसीही हूं क्योंकि मुझे आशा है कि उस दिन जब प्रभु आएगा, मैं जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठूंगा, उस दिन मैं और सब मसीही लोग इसलिये जी उठेंगे ताकि अनन्त जीवन के उस मुकुट को प्राप्त करें, जो प्रभु अपने सब विश्वासियों को देगा, और जो कभी मुरझाता नहीं। प्रेरित पौलुस १ थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८ में अपने मसीही भाईयों को लिखकर कहता है, "हे भाईयो, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो ; ऐसा न हो, कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा ; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो

जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।"

वह कहता है, कि जब प्रभु यीशु मसीह आएगा तो उस समय वे मसीही लोग मुर्दों में से जी उठेंगे जो अपनी मृत्यु के समय तक इस पृथ्वी पर उसके विश्वासी अनुयायी थे। और फिर वे मसीही जो प्रभु के आने पर इस पृथ्वी पर बचे रहेंगे, अर्थात् जो उस समय जीवित होंगे, वे उन जी उठे मसीहियों के साथ ऊपर उठा लिये जाएंगे ताकि वे सब सदा प्रभु के साथ रहें। जी हां, मैं एक मसीही इसलिये हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि जब प्रभु यीशु वापस आएगा तो वह मुझे अपने साथ ले जाएगा और तब मैं सदा परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहूंगा। प्रेरित पौलुस, १ कुरिन्थियों १५ : १९ में, कहता है कि "यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।"

परन्तु नहीं, हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा नहीं रखते। परन्तु हमारी आशा कब्र और मृत्यु के बाद भी स्थिर रहती है। प्रेरित पौलुस कहता है कि जब प्रभु आएगा तो वह हमें अपने साथ ले जाएगा और हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। वास्तव में वह दिन मसीह के सब विश्वासियों के लिये कितना महान् और आनन्द का दिन होगा। मैं मसीह के साथ जाऊंगा, और सदा, अनन्तकाल तक प्रभु के साथ रहूंगा। प्रत्येक क्षण मैं प्रभु के साथ रहूंगा, वहां मुझे कोई घटी न होगी। प्रकाशितवाक्य २१ : ३,४ में मुझे यह अश्वासन मिलता है, कि जब प्रभु आकर अपने विश्वासियों को अपने साथ ले जाएगा तो वहाँ वह "उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा। और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी, पहली बातें जाती रहीं।" जी हां, वहां प्रभु अपने लोगों की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा। पृथ्वी

पर एक अच्छा मसीही जीवन बिताने के कारण; प्रभु के प्रति विश्वासी बने रहने के कारण उन्होंने जो कुछ भी कठिनाई उठाई हो, निरादर हुए हों, जो कुछ भी सहा हो, जिसके कारण उनके आंसू बहे हों, परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा। फिर उन्हें मृत्यु का भय न होगा वे कभी भी न मरेंगे, वे सदा प्रभु के साथ बने रहेंगे। वहां किसी प्रकार का शोक न होगा, विलाप न होगा, पीड़ा या अन्य कोई ऐसी वस्तु न होगी जिसके कारण उन्हें किसी प्रकार का दुख हो, क्योंकि पहिली बातें जाती रहेंगी।

मित्रो, क्या आपके पास यह आशा है कि प्रभु के आने पर आप वास्तव में उद्धार पाएंगे? क्या आप इस आशा के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं कि अन्त में आप को जीवन का वह मुकुट प्राप्त होगा जिसे प्रभु अपने सब विश्वासियों को देगा? क्या आप यह आशा करते हैं कि प्रभु के आने पर आप जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे? क्या आप प्रभु के वापस आने की प्रतीक्षा धीरज और आनन्द से कर रहे हैं ताकि वह आकर आपको अपने साथ ले जाए? क्या आपके पास यह आशा है कि प्रभु आकर आपको अपने साथ ले जाएगा और आप सदा उसके साथ स्वर्ग में उसकी उपस्थिति में रहेंगे?

यदि आपके पास यह आशा नहीं है तो आपकी मृत्यु के बाद आपकी आत्मा का क्या होगा? क्या आपने इस बात पर कभी गम्भीरता से विचार किया है? आपको चाहिए कि आप एक मसीही बनें, ताकि आप अपना आगे का जीवन मृत्यु के भय में नहीं परन्तु अनन्त जीवन को पाने की आशा में व्यतीत करें। मैं आपको यह कहकर प्रोत्साहित करता हूं कि आप यीशु मसीह में विश्वास करें कि वह आपके पापों के कारण मारा गया और वह आपका उद्धार कर सकता है, फिर अपने पापों से मन फिराएं और अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें। यदि आप ऐसा करेंगे तो प्रभु अपनी प्रतिज्ञा अनुसार आपका उद्धार करेगा और आपको अपनी उस कलीसिया में मिलाएगा जिसे लेने के लिये एक दिन वह वापस आ रहा है।

सबसे बड़ा प्रेम है

मित्रो :

आज हम अपने पाठ का आरम्भ बाइबल में से १ कुरिन्थियों के १३ अध्याय को पढ़कर करेंगे। इस अध्याय में लेखक हमारा ध्यान प्रेम के महान् महत्त्व की ओर दिलाता है। वह कहता है, "यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झनझनाती हुई झांझ हूं और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है ; प्रेम डाह नहीं करता ; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं ; भविष्यद्वाणियां हों, तो टल जाएंगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी। परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा। जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाईं बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी ; परन्तु जब

सियाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दीं। अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है; परन्तु उस समय आमने-सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है ; परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूंगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूं। पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।"

यहां हम देखते हैं कि पवित्र शास्त्र का लेखक प्रम की महान्ता की तुलना अनेकों अन्य वस्तुओं से करके कहता है, कि यदि मैं इस योग्य भी होऊं कि मैं प्रेरितों की तरह अन्य-अन्य भाषाओं में बोल सकूं, जिस तरह से कि कलीसिया के आरम्भ के दिनों में परमेश्वर ने कुछ मसीही लोगों को आवश्यकता अनुसार यह बरदान दिया था, और वह कहता है, कि कदाचित् मैं स्वर्गदूतों की सी बोलियां भी बोलूं। कदाचित् मैं बड़े सुन्दर और अच्छे-अच्छे शब्दों में भाषण दूं। परन्तु यदि मैं प्रेम न रखूं तो मुझे इस सबसे कुछ भी लाभ नहीं, वह कहता है कि मैं ठनठनाता हुआ पीतल और झनझनाती हुई झांझ के समान ठहरूंगा, अर्थात् एक ऐसी वस्तु जिसके द्वारा केवल आवाज़ ही निकल सकती है। फिर वह कहता है, यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, अर्थात् मैं भविष्य में घटनेवाली बातों को प्रगट कर सकूं, और कदाचित् मैं इतना अधिक बुद्धिमान होऊं कि सब प्रकार के भेदों और गूढ़ बातों को समझूं। और विश्वास, वह कहता है, कि मेरा विश्वास यहां तक क्यों न हो कि मैं बड़े-बड़े कार्य कर सकूं और यहां तक कि पहाड़ों का हटा दूं, परन्तु इन सब के होते हुए भी यदि मैं प्रेम न रखूं तो मैं कुछ भी नहीं अर्थात् मेरा ज्ञान, मेरा विश्वास चाहे वह कितना भी महान् क्यों न हो, सब कुछ व्यर्थ ठहरेगा।

और न केवल यही, वह आगे कहता है, कि चाहे मैं कितना भी दानी क्यों न होऊं, और यहां तक कि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पति कंगालों को खिला दूं, और बलिदान करने में यहां तक होऊं कि अपनी देह

को भी जलाने के लिये दे दूं, परन्तु तौभी प्रेम न रखूं, तो वह कहता है कि इस से मुझे कुछ भी काभ नहीं। अर्थात् मेरा दान और बलिदान, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, प्रेम के अभाव के कारण बिल्कुल व्यर्थ ठहरेगा। बहुतेरे लोग दान देते हैं, अनेकों तरह के बलिदान करते हैं, परन्तु उनके दान तथा बलिदान केवल मनुष्यों को दिखाने के लिये ही होते हैं।

इस प्रकार के लोग, आज की तरह, प्रभु यीशु के दिनों में भी थे मत्ती ६ अध्याय में हम पढ़ते हैं, प्रभु यीशु ने कहा, "सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे। इसलिये जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी, सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना फल पा चुके। परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दहिना हाथ करता है, उसे तेरा बांयां हाथ न जानने पाए। ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।"

सो प्रेम के अद्भुत महत्त्व को दिखाने के बाद, १ कुरिन्थियों १३ अध्याय में, लेखक हमारा ध्यान प्रेम के फलों के ऊपर दिलाकर कहता है, प्रेम धीरजवन्त है। अर्थात् वास्तविक प्रेम धीरज से सब कुछ सह लेता है। कदाचित् आपने बाइबल में अय्यूब के बारे में पढ़ा हो। अय्यूब परमेश्वर का भय मानता था और उस से वास्तव में प्रेम करता था। हम पढ़ते हैं कि जब वह एक बड़ी भारी परीक्षा में पड़ा तो उसने धीरज से सब कुछ सह लिया, क्योंकि वह परमेश्वर से प्रेम करता था। आरम्भ में हम देखते हैं कि अय्यूब के पास सब कुछ था, वह उस समय एक बड़ा धनी मनुष्य था परन्तु जब उस पर भारी परीक्षा पड़ी और यहां तक कि उसका सब कुछ छिन गया, और उसकी देह रोग से

छलनी हो गई, तौभी परमेश्वर के प्रति अय्यूब के प्रेम में कुछ कमी न आई। उसने धीरज से प्रत्येक दुख तथा कठिनाई का सामना किया। और हम पढ़ते हैं, कि जब उसकी पत्नी ने उस से परमेश्वर से फिर जाने और परमेश्वर की निन्दा करने को कहा, तो अय्यूब ने उसे उत्तर देकर कहा, कि तू मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, उसने कहा, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुख: न लें ? और लिखा है, उन सब दुखों और कठिनाईयों के होते हुए भी अय्यूब ने कोई पाप नहीं किया। उसने धीरज से सब कुछ सह लिया, क्योंकि प्रेम धीरजवन्त है, और वह परमेश्वर से प्रेम करता था।

और न केवल यही, परन्तु प्रभु यीशु के जीवन में हम इस बात को और भी स्पष्टता से देखते हैं। हम पढ़ते हैं, कि जब उन्होंने उसे मार डालने के लिये पकड़ा तो सारी रात वे उसका निरादर और उपहास करते रहे। यद्यपि रोमी सरकार के एक अधिकारी ने यीशु को जांचकर यह घोषणा कि थी कि वह यीशु में कोई दोष नहीं पाता, परन्तु तौभी वें लोग डाह और ईर्ष्या के फलस्वरूप यीशु को क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे। उन्होंने उसको कोड़ों से पीटा, उसे घूसे और थप्पड़ मारे, कांटों का एक मुकुट बनाकर, उसका उपहास करने के लिये, उसके सिर पर रखा, उन्होंने उसके मुंह पर थूका, और अनेकों प्रकार से उसे ठट्ठों में उड़ाया। फिर वे उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले गए। उन्होंने उसे क्रूस के ऊपर लिटाकर उसके हाथों और पैरों में कीलें ठोकीं। परन्तु आप जानते हैं कि उस समय यीशु क्या कर रहा था ? वह उन्हें गाली नहीं दे रहा था, उन्हें कोस नहीं रहा था, उनके बारे में कुछ बुरा नहीं सोच रहा था। परन्तु इसके विपरीत, लिखा है, वह यह कहकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं" (लूका २३:३४)।

यीशु जानता था कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि वह संसार के

लोगों के पापों के कारण बलिदान किया जाए। और परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण करने के लिये उसने धीरज से सब कुछ सह लिया। जबकि वे लोग, जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, उस समय अपने मनों में सोच रहे हों कि वे अपने एक विरोधी का अन्त कर रहे हैं, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में उस दिन संसार के सब लोगों के पापों के कारण यीशु बलिदान हुआ। यीशु ने सब दुखों को और यहां तक कि क्रूस की मृत्यु को भी धीरज से सह लिया क्योंकि वह आपसे और मेरे से प्रेम करता है। रोमियों ५ : ८ के अनुसार, "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।"

फिर, वह आगे कहता है कि प्रेम कृपाल है। अर्थात् वह दयावन्त है, वह दूसरों को दुख में देखकर स्वयं पीड़ा का अनुभव करता है। इस सिद्धान्त को हम उस धर्मी सामरी के दृष्टान्त में बड़ी ही स्पष्टता से देखते हैं जिसने उस मनुष्य को पीड़ा में पड़े हुए देखकर उस पर कृपा की जिसे डाकुओं ने घेरकर उसका सब कुछ लूटने के बाद उसे अधमुआ करके एक गड़हे में फेंक दिया था। प्रभु यीशु ने इस दृष्टान्त का उल्लेख करके कहा,कि उस सामरी के वहां पर आने से पहले उस स्थान पर और भी लोग आए जिन्हों ने उस मनुष्य को पीड़ा में पड़े हुए देखा और उनमें से दो व्यक्ति याजक तथा लेवी थे। याजक और लेवी दोनों ही बड़े धर्मी मनुष्य समझे जाते थे क्योंकि वे मन्दिर में कार्य करते थे। वे प्रचार करते थे, उपदेश देते थे, और अनेकों अन्य धार्मिक कार्य करते थे। परन्तु जब उन लोगों ने उस व्यक्ति को अत्यन्त दुख में पड़े पाया तो उन्होंने उस पर कोई कृपा नहीं की, उन्होंने उसकी कोई सहायता नहीं की, क्योंकि वे उस से प्रेम नहीं करते थे। परन्तु जब वह सामरी वहां पर आया तो उसका हृदय उसे देखकर दया मे भर गया। और हम पढ़ते हैं कि उसने उसकी सेवा-टहल की, उसकी सहायता की, क्योंकि वह उस से प्रेम करता था।

यहां मैं परमेश्वर के प्रेम के विषय में सोचता हूं, कि जब मनुष्य पाप के गड्ढे में पड़ा हुआ असहाय तथा आशा-रहित था तो परमेश्वर ने मनुष्य पर कृपादृष्टि की और उसे पाप से बचाने के लिये उसने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को इस संसार में प्रत्येक मनुष्य के लिये मरने को भेज दिया। स्वयं प्रभु यीशु ने कहा कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)।

और फिर वह कहता है, प्रेम डाह नहीं करता। अर्थात् यदि मैं वास्तव में प्रेम करता हूं, तो मैं अन्य लोगों के पास उन वस्तुओं को देखकर, जो कदाचित् मेरे पास न हों, उनके प्रति डाह या ईर्ष्या नहीं करूंगा। मैं यह नहीं कहूंगा, कि उसके पास अमुक वस्तु क्यों है और मेरे पास वह क्यों नहीं है। वे लोग जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था, उनके बारे में हम पढ़ते हैं कि उन्होंने ऐसा इसलिये किया क्योंकि वे यीशु से डाह करते थे। जब उन्होंने देखा कि यीशु के कार्यों और शिक्षाओं से लोगों की भीड़ की भीड़ प्रभावित हो रही है, तो वे उसके प्रति डाह से भर गए।

फिर वह आगे कहता है, कि प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता। अर्थात् यदि आप वास्तव में प्रेम के कारण किसी के साथ कोई भलाई करें या किसी की सहायता करें, तो आप यूं नहीं कहेंगे, कि देखो मैंने कितना अच्छा या बड़ा कार्य किया है। क्योंकि प्रेम कभी भी अपनी बड़ाई नहीं चाहता, वह फूलता नहीं। प्रेम अनरीति नहीं चलता, अर्थात् वह किसी की भी बुराई नहीं चाहता, और न ही वह केवल अपनी भलाई चाहता है। प्रेम झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। यही कारण है कि परमेश्वर बार-बार हमारे पापों को क्षमा करता है। वह हमें बार-बार क्षमा मांगते देखकर झुंझलाता नहीं। परन्तु जब भी हम ईमानदारी से उसके पास आकर क्षमा मांगते हैं तो वह हमें क्षमा करता है, क्योंकि वह हम

से वास्तव में प्रेम करता है। फिर, प्रेम कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। सो इस प्रकार से हम देखते हैं, कि जितनी भी बातें भली हैं, जितनी भी बातें उत्तम हैं, उन सबका सम्बन्ध प्रेम से है, वास्तव में ये सब बातें प्रेम से ही निकलती हैं।

किन्तु फिर वह कहता है, कि भविष्यद्वाणियां हों तो समाप्त हो जाएंगी, अर्थात् उस समय कलीसिया में कुछ लोगों के पास भविष्यद्वाणी करने की योग्यता थी परन्तु वह कहता है कि वह समाप्त हो जाएंगी। और भाषाएं हों तो जाती रहेंगी, अर्थात् कलीसिया में उस समय कुछ ऐसे लोग थे जो पवित्र आत्मा की सामर्थ से अन्य-अन्य भाषाओं में बोल सकते थे, परन्तु वह कहता है भाषाएं जाती रहेंगी। और आश्चर्यकर्म करने का ज्ञान समाप्त हो जाएगा। परन्तु कब ? उस समय, वह कहता है, जब सर्व सिद्ध आएगा। इसका मतलब यह है, कि उस समय परमेश्वर की सिद्ध व्यवस्था, जिसका वर्णन हमें याकूब १ : २५ में मिलता है, पूर्णरूप से लिखी नहीं जा चुकी थी, क्योंकि नया नियम उस समय लिखा जा रहा था। परन्तु जब सर्व सिद्ध आएगा, अर्थात् जब बाइबल पूर्ण रूप से लिखकर मनुष्य के हाथों में आ जाएगी, तो भविष्यद्वाणियां, अन्य-अन्य भाषाएं, आश्चर्यकर्म करने का ज्ञान, सब समाप्त हो जाएंगे। क्योंकि फिर उनकी आवश्यकता नहीं रहेगी क्योंकि ये विभिन्न वरदान उस समय कलीसिया में इसलिये दिए गए थे ताकि लोग उनके द्वारा विश्वास करें। परन्तु अब जबकि सर्वसिद्ध, परमेश्वर का वचन, लिखित रूप में हमारे पास आ चुका है तो इस कारण अब उन वस्तुओं की आज कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु लेखक कहता है कि जबकि भविष्यद्वाणियां, भाषाएं और ज्ञान समाप्त हो जाएंगे, प्रेम सर्वदा बना रहेगा क्योंकि प्रेम कभी टलता नहीं।

और अन्त में, अपनी बात का निष्कर्ष निकालकर लेखक कहता है, अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इनमें सब से बड़ा प्रेम है। जब हम प्रेम की तुलना विश्वास तथा आशा से करते हैं, तो हम देखते हैं कि जबकि विश्वास का सम्बन्ध वर्तमान से है, और आशा का सम्बन्ध भविष्य से है, परन्तु प्रेम सर्वदा बना रहेगा, यह कभी नहीं टलेगा। फिर हम देखते हैं कि जबकि विश्वास हमारा सम्बन्ध परमेश्वर के साथ जोड़ता है, और आशा से हमारा सम्बन्ध स्वर्ग के साथ स्थापित होता है, परन्तु प्रेम हमें परमेश्वर के समान बनाता है, और हमें स्वर्ग के योग्य बनाता है। क्योंकि यह परमेश्वर का स्वभाव है, क्योंकि "परमेश्वर प्रेम है" यह बात न तो विश्वास के विषय में कही जा सकती है और न ही आशा के।

एक बार जब किसी ने यीशु से पूछा की सब से मुख्य आज्ञा कौन सी है, तो यीशु ने उत्तर देकर कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना" (मरकुस १२:३०,३१)।

बाद में, रोमियों १३ : ८-१० में, प्रेरित पौलुस मसीही लोगों को उपदेश देकर कहता है, "आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्ज़दार न हो ; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है। क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना ; चोरी न करना ; लालच न करना ; और इनको छोड़ और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है।"

इसी प्रकार से प्रेरित पतरस, १ पतरस ४ : ८ में कहता है, "और सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो ; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है।"

और यूहन्ना १४ : १५ के अनुसार "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो" यीशु ने कहा "तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" क्या आप यीशु से प्रेम रखते हैं ?

प्रभु यीशु ने आप से इतना प्रेम रखा कि उसने आप को बचाने के लिये अपने प्राणों को भी दे दिया। वह आपके पापों के बदले क्रूस के ऊपर मारा गया। पवित्र शास्त्र कहता है, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (१ पतरस २ : २४)।

यीशु ने आपके प्रति अपने प्रेम को अपने प्राणों को देकर व्यक्त किया, क्या आप उसकी आज्ञाओं को मानकर अपने प्रेम को उसके प्रति व्यक्त करेंगे ? उसने कहा, यदि तुम मुझ पर विश्वास करो और अपने पापों से फिरकर मेरे नाम से बपतिस्मा लो तो मैं तुम्हारा उद्धार करूंगा। वह आपको यह कहकर बुलाता है, "हे सब परिश्रम करने-वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती ११ : २८)।